Publication date- 5th July 2024, Posting date- 9/10th July 2024. Place of posting- Naraina
संख्या No. U (W)-11/2024-26 RNI No. DELBIL/2005/16236 Postal Regn. No. DL (W) 10/2129/24-26

RNI No. DELBIL/2005/16236

श्रद्धा सबूरी

श्री साई सुमिरन टाइम्स

मासिक समाचार पत्र

वर्ष-20 अंक-10 नई दिल्ली जुलाई 2024 वार्षिक मूल्य 500 रू. (प्रति कॉपी 50 रू.) पृष्ठ-16

साई बाबा मंदिर रोहिणी की तरफ से 501 पौधों का वितरण

दिल्ली: साई बाबा मंदिर रोहिणी, सैक्टर-7 की कार्यकारिणी समिति द्वारा जुलाई में 501 पौधे वितरित करने का निर्णय लिया गया

है। उनका मानना है कि जिस तरह गर्मी बढ़ती जा रही है वो हमारे वातावरण के लिए ठीक नहीं है। हम सबका कर्त्तव्य है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाकर अपने पर्यावरण को आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ व सुरक्षित रख सकें। साई बाबा भी पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए पौधे लगाया करते थे। उन्होंने लेंडी बाग की उजाड़ भूमि में अनेक फूलों के पौधे लगाकर एक सुंदर बागिया बना दी जिसके पेड़-पौधे आज भी हम सबको लाभ दे रहे हैं। हमें चाहिए कि हम भी बाबा के बताए हुए रास्ते पर चलकर अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखें और अधिक-अधिक से पेड़-पौधे लगाऐं।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए साई मंदिर की समिति के सदस्यों ने एक सराहनीय कदम उठाया है। जुलाई माह में मंदिर की तरफ से 501 पौधे नि:शुल्क वितरित किये जाऐंगे। भक्तगण मंदिर से पौधे लेकर अपने घर, आसपास की ज़मीन और पार्क इत्यादि में लगा सकते हैं। पौधे लगाने के बाद उनकी देखभाल करना भी आवश्यक है। तभी हम अपने पार्यवरण को स्वच्छ रख सकते हैं। -पूनम धवन

क्या वे बाबा ही थे दोनों दिन?

ये सन 2017 की बात है, जो शिरडी यात्रा के दौरान घटित हुआ और उससे संबंधित जो प्रश्न उठा, 'क्या वह बाबा थे' आज भी जागृत है। बाबा के निर्देशानुसार 2017 में शिक्षक की नौकरी त्याग कर मैं बाबा के अगले संकेत की प्रतीक्षा में थी। दो दशकों से अधिक की व्यस्त ज़िंदगी के बाद, अब क्या करना चाहिए, इसी पेशोपेश में थी। लेकिन एक बात तो तय थी, अब शिरडी यात्रा सहज और सरल हो गई थी। अवकाश की अर्ज़ी, मंज़ूरी की प्रतीक्षा की कोई आवश्यकता नहीं, बाबा ने बुलाया और झट से शिरडी के लिए रवाना हो गए। मुंबई से मात्र 4-5 घंटे ही लगते थे। संभवत: अगस्त या फिर सितंबर की बात होगी जब अपने पति, श्री राजीव मिड्ढा के साथ शिरडी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हम गुरुवार की दोपहर को पहुंचे और साई की कृपा से अद्भुत दर्शन और संध्या आरती का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। मन प्रफुल्लित था। सब कुछ कितनी आसानी से मिल रहा था। समाधि मंदिर में दर्शन के दौरान बाबा ने भविष्य में क्या करना है इसका भी संकेत दे दिया। मेरे लिए लिखो। ब्लॉग बनाओ। पुस्तक भी लिखो। बाबा ने एक नई दिशा दिखाई, जो मेरी बरसों पुरानी अभिरुचि के अनुरूप ही थी। बाबा तो सब जानते ही हैं। उनसे क्या छिपा है भला? अगले दिन, शुक्रवार को,

मंदिर दर्शन के पश्चात् हम गुरुस्थान पहुंचे। वहाँ काफी चहल पहल थी। परिक्रमा करने के बाद मैं एक तरफ रेलिंग से टेक लगाकर वहाँ खड़ी हो गई जहाँ से परिक्रमा प्रारंभ करते हैं। हाथ में रखी आरती की पुस्तकों को देख रही थी। नज़र उठाई तो बस देखती ही रह गई। एक गोरा चिट्टा, लंबे कद का व्यक्ति, जिसने सफेद रंग का कुर्ता और धोती पहनी हुई थी, मेरी ओर बढ़ा आ रहा था। उसके चेहरे पर एक अद्भुत तेज था और माथे पर चंदन का ऊर्ध्वपुण्ड्र या वैष्णव तिलक सजा था। चेहरे का नूर और शांत स्वरूप मनमोहक था, अन्य व्यक्तियों से एकदम भिन्न। होठों पर खेलती हल्की सी मुस्कान बहुत निराली थी। ये सब कुछ क्षणिक ही था, जब वह मुस्कुराते हुए मेरी तरफ आया, मेरी ओर देखा और भीनी मुस्कुराहट के साथ मेरे हाथ की पुस्तकों पर 3 नीम की पत्तियां रख दी, जो मैंने अनायास ही अपने खाली हाथ से पकड़ ली और परिक्रमा की पंक्ति में जुड़ गयी। शब्द मेरे कंठ में कहीं अटके रह गए।

शेष पृष्ठ 2 पर

कोपरगांव में भव्य वार्षिक महोत्सव

कोपरगांव: हर वर्ष की तरह दिनांक 16 जून 2024 को श्री साई धाम मंदिर, अम्बिका नगर, कोपरगांव, ज़िला अहमदनगर (महाराष्ट्र) में श्रद्धेय श्री सुरेश बाबा के मार्गदर्शन में मंदिर का 25वां स्थापना दिवस बड़े हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनाया गया। पूरे मंदिर में फूलों की सजावट देखने योग्य थी। बाबा के दरबार को फूलों और ताज़े फलों से बहुत सुंदर सजाया गया। प्रात: 5 बजे बाबा की काकड़ आरती से कार्यक्रम का शुभारंभ

हुआ, उसके बाद बाबा का अभिषेक किया गया। 7:30 बजे श्री सत्यनारायण महापूजा का आयोजन किया गया जिसमें बहुत से भक्तों ने भाग लिया। दिनभर भजनों का कार्यक्रम चलता रहा। सर्वप्रथम भोपाल के सुप्रसिद्ध साई कथा वाचक श्री सुमित पोंदा भाई जी ने प्रात: 8:30 बजे से 11:00 बजे तक साई कथा का वाचन किया और ज्ञान की गंगा बहाई। उसके बाद बाबा की भव्य पालकी मंदिर परिसर में बैंड बाजे के साथ निकाली गई। भक्तों की भारी भीड़ बाबा के नाम के जयकारे लगाते हुए व ढोल की ताल पर नृत्य करते हुए पालकी में शामिल हुई। दोपहर 12 बजे आरती की गई जिसमें श्रद्धेय स्वामी जी शामिल हुए। मंदिर का पूरा हॉल भक्तों से भरा था। दिनभर लंगर प्रसाद चलता रहा जहां हज़ारों भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया एवं बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। दोपहर 1 बजे से गोवा के कलाकारों ने गणेश वंदना की सुंदर प्रस्तुति दी। उसके बाद

शेष पृष्ठ 14 पर...

शिरडी साई बाबा को सोने का मुकुट अर्पित

शिरडी: दिनांक 16 जून 2024 को बाबा के एक भक्त ने साई बाबा को सोने का मुकुट अर्पित किया। यह मुकुट लगभग

652 ग्राम का है और इसकी कीमत लगभग 42 लाख 80 हज़ार रूपये है। इस मुकुट का डिज़ाईन बहुत ही कुशलता और सुन्दरता से उकेरा गया है। इस मुकुट के दानकर्ता अपना नाम गुप्त रखना चाहते हैं।

शिरडी में नये लड्डू बिक्री काऊंटर का उद्घाटन

शिरडी: दिनांक 20 जून 2024 को साई बाबा संस्थान के गेट नम्बर 4 के पास साई भक्तों के लिए नये लड्डू प्रसाद के बिक्री कांऊटर का उद्घाटन किया

गया। बिक्री कांऊटर का उद्घाटन शिरडी साई बाबा संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिलकर जी के कर कमलों द्वारा किया गया। श्री गोरक्ष गाडिलकर जी ने भी इस कांऊटर से लड्डू खरीदे। इस अवसर पर संस्थान के उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री तुकाराम हुलवले, मुख्यलेखा अधिकारी मंगला वराडे जी, प्रशासकीय अधिकारी प्रज्ञा महांडुले सिनारे, कार्यकारी अभियंता भिकन दभाडे, प्र. उपकार्यकारी अभियंता श्री दिनकर देसाई, श्री संजय जोरी, श्री किशोर गवली प्र. अधिक्षक श्री विष्णु थोरात, श्री शरद डोखे व संस्थान के कई कर्मचारी भी उपस्थित रहे। इस लड्डू कांऊटर के खुल जाने से भक्तों को लड्डू खरीदने में सुविधा होगी।

• Curtain & Sofa Cloth • Bed Sheets & Bed Covers
• Towels/Table Linen • Quilts & Blankets
• Mattresses & Pillows • Carpets & Rugs • Wallpaper
• Curtains Rods & Venetian Blinds • Cushion Cover
SITA Fabrics
Furnishing Homes For Better Living
D-37, Central Market, Lajpat Nagar-II,
New Delhi-110024. Ph: 011-41750253/254
We accept all major Credit/Debit Cards
ALL DAYS OPEN
SPECIAL OFFER ON WALLPAPER

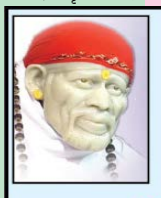
Since 1990
aarcee
World renowned name in
WALL PAPER
Awnings, Blinds & Canopies
Visit Before You Buy
Show room: 9-A, Aurobindo Place, HAUZKHAS,
Aurobindo Marg, New Delhi-110016
Terrace Awning
Basket Awning
R.C. Gupta
Ph. 9810030709, 9910030709

श्रद्धा सबूरी
TANEJA JEWELLERS PVT. LTD.
हमारे यहां साई बाबा जी के चांदी के सिंहासन, छत्र, पादुका व मुकुट हर साईज में तैयार किए जाते है
Gold, Diamond, Kundan, Silver Ornaments & Birth Stones
Exclusive Range of Silver Utensils & Gift Articles
Naresh Taneja - 9211760000, 41720094, 29830855
J-37 B, Central Market, Lajpat Nagar-II, New Delhi-24.

सम्पादकीय

शिरडी एक ऐसी जगह है जहां हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई और विदेशी लोग सब एक साथ दिखाई देते हैं। आज लगभग हरेक मंदिर में बाबा की मूर्ति या फोटो विराजमान है, जिससे भक्तों की आस्था का अनुमान लगाया जा सकता है। दोस्तों भक्ति एक ऐसा अहसास है जो हमारे अंदर स्वयं उमड़ता है। हम किसी भी व्यक्ति में भक्ति भाव डाल नहीं सकते और न ही किसी भक्त की भक्ति को कोई खत्म कर सकता है क्योंकि यह साई बाबा की ही देन है। महासमाधि लेने से पूर्व बाबा ने अपने भक्तों को आश्वासन दिया कि उनका पंचतत्व से निर्मित शरीर जब नहीं रहेगा तो उनकी समाधि भक्तों से वार्तालाप करेगी और उनकी मनोकामनाऐं पूरी करेगी। आज लाखों लोग बाबा के दर्शन करने शिरडी जाते हैं और यहां आकर उनका भरोसा, उनकी श्रद्धा और दृढ़ होती है। बाबा ने अपने जीवन का एक-एक पल भक्तों के कल्याण हेतु बिताया और सबको प्रेम का पाठ पढ़ाया। वास्तव में सद्गुरू वो ही है जो हमारी सारी भटकन मिटा कर चित्त को शांत करके एक जगह स्थिर कर दे, ताकि फिर कोई उसे डगमगा न सके, डांवाडोल न करे सके। श्री साईनाथ महाराज ने अपनी कृपा द्वारा अपने भक्तों को अपनी भक्ति में स्थिर कर लिया। इसलिए बाबा ही सद्गुरू हैं। गुरूपूर्णिमा के पावन अवसर पर हम ये संकल्प लेते हैं कि सद्गुरू श्री साईनाथ महाराज के बताए रास्ते पर चलेंगे और उनकी दी हुई शिक्षाओं का सदैव पालन करेंगे। साईनाथ महाराज की जय।

-अंजु टंडन

भक्त हेतु दौड़ा आऊंगा

बात सन् 1982 की है, तब हम मुम्बई में रहते थे। हमारी बिल्डिंग में बाबा का एक छोटा सा मन्दिर था, मैं अक्सर वहां जाती थी। मैंने बाबा को बोल रखा था कि हर वीरवार को मैं चॉकलेट बांटूगी। एक बार वीरवार के दिन मेरे पास पैसे नहीं थे। मैं बहुत मायूस हो गई और मंदिर जाकर रोने लगी और बाबा से कहा कि बाबा आज मेरे पास पैसे नहीं हैं, आज मैं चॉकलेट बांट नहीं सकती। मैं जब जाने लगी तो बाहर आकर मुझे 5 रूपये का नोट मिला। मैं थोड़ा आगे गई तो 10 रूपये का नोट मिला और थोड़ा ओर आगे गई तो 20 रूपये का नोट मिला। मैं बहुत खुश हुई और 35 रूपये के चॉकलेट खरीद कर बच्चों को बांट दिए। ये बाबा की ही लीला थी। मैं प्रदीप से बहुत प्यार करती थी और उनसे शादी करना चाहती थी। लेकिन हमारे घर वालों को ये रिश्ता मंजूर नहीं था। हम दौनों ने फैसला किया और मंदिर में शादी कर ली। शादी करके मंदिर से बाहर आए तो समझ नहीं आ रहा था कि अब कहां जाऐं। उस वक्त मेरे पति के पास कोई नौकरी भी नहीं थी और हमारे पास 1 रूपया भी नहीं था। हम कमरे की तलाश में एक दलाल के पास गए और उसे बताया कि हमें एक कमरा चाहिए लेकिन हमारे पास अभी पैसे नहीं हैं। दलाल ने हमें 700 रूपये किराऐ पर एक कमरा दिलवा दिया और कहा कि 15 दिन में पैसे दे देना। हमें 2 महीने का किराया दलाल को देना था और 10,000 रूपये मकान मालिक को देने थे। हमने बाबा के भरोसे ही नई ज़िंदगी में कदम रखा था। बाबा ने हमारी लाज रखी और मेरे पति को 7 दिन के अंदर ही एक अच्छी नौकरी मिल गई और उनके बॉस ने उन्हें पहले दिन ही 10,000 रूपये एडवांस भी दे दिऐ। उनके बॉस भी साई भक्त थे। बाबा की कृपा ऐसी हुई कि दलाल ने अपनी दलाली नहीं ली और मकान मालिक ने भी 5000 रूपये ही लिए। मेरे पति के बॉस बस भर के सबको शिरडी लेकर गए। तब मैं पहली बार शिरडी गई और जी भर के बाबा के दर्शन किए। बाबा की कृपा हम पर बरसी, एक साल के अंदर ही हमारा अपना फ्लैट् बन गया। मैंने घर में ही ब्यूटी पार्लर खोल लिया। हमारे पास किसी चीज़ की कमी नहीं रही। मेरे ससुराल वालों ने भी हमें वापस बुला लिया और हम नागपुर में आ गए। मेरे ससुराल से भी मुझे बहुत प्यार मिला। मेरा एक बेटा और दो बेटियां हैं। बाबा की कृपा से हमारे जीवन में किसी चीज़ की कमी नहीं है। बाबा ही हमारे लिए सब कुछ हैं। **-पूजा सावले,** नागपुर

पृष्ठ 1 से आगे

क्या वे बाबा ही ...

मैं सन्न थी और मेरे हाथ पैर कांप रहे थे। टकटकी लगाए मैं देखती रही कि वह अद्भुत अजनबी, परिक्रमा करके दूसरी ओर से बाहर आएगा तो उसको धन्यवाद कहूँगी। पर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब वह दूसरी तरफ से आया ही नहीं। वह परिक्रमा की लाइन में ही कहीं लुप्त हो गया और दिखाई नहीं पड़ा। जब मुझे आभास हुआ कि एक लीला हुई और मैं समझ न पाई, तो मेरी आँखों से आँसुओं की झड़ी बह निकली। हाथ और पाँव स्थिर न रह पाए और मैं वहीं ज़मीन पर बैठ गई। कुछ पलों बाद जब मेरे पति लौटे तो मेरी हालत देख चौंक उठे। फिर धीरे धीरे उन्हें मैंने पूरी घटना सुनाई और वो भी अचंभित हो उठे। गुरुस्थान से द्वारकामाई और फिर चावड़ी होते हुए हम होटल वापस लौट गए। अगले दिन, शनिवार को मध्यान्ह आरती के बाद हमें मुंबई लौटना था। आरती और बाबा के दर्शन करके हम हमेशा की तरह गुरुस्थान पहुंचे और बाबा की फोटो के सामने साष्टांग प्रणाम किया। परिक्रमा के पश्चात मैं एक बार फिर रेलिंग के पास खड़ी थी जब अचानक एक छोटे कद वाला, श्याम रंग का आदमी जिसने स्लेटी शर्ट और लूँगी पहनी हुई थी, तेज़ी से मेरे पास आया, मेरे हाथ में दो नीम की पत्तियां रखीं और गुरुस्थान से इतनी फुर्ती से ओझल हो गया कि मैं कुछ समझ पाती, उससे पहले वह अंर्तध्यान हो गया।

मैं अंदर तक हिल गई, सकपका गई। मेरे मुँह से यकायक निकाल पड़ा, बाबा माँ ये क्या-क्या हो रहा है, मैं नहीं समझ पा रही हूं, और मैं वहीं पर नीचे बैठ गई। मित्रों, गुरुवार को भी, गुरुस्थान में उपस्थित पंडित जी ने मुझे एक नीम का पत्ता दिया था। घटनाक्रम को पुनः याद करते हुए मेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं और उन दोनों निराले व्यक्तियों की छवि मेरे आँखों के सामने उभर आई है। 2017 के इन दो खूबसूरत दिनों की यादें मुझे वापस उन लम्हों में पहुँचा देती हैं जब शायद बाबा ही इन दो स्वरूपों में आशीर्वाद देने गुरुस्थान आये थे। अरे हाँ, साथियों, वो श्याम रंग के व्यक्ति ने त्रिपुण्डर तिलक धारण किया था जो भस्म से लगाया गया था। क्या आप बता पाएंगे की वे दोनों कौन थे? बाबा साई या फिर विष्णु जी और शिव जी के स्वरूप में साई? इस घटना का महत्व मैं आज अभी भी खोज रही हूं। क्या आप इस कार्य में मेरी मदद करेंगे? जय साई बाबा।

-बिंदु मिड्ढा, अहमदाबाद

गुरू पर आया तब विश्वास जब बैठे सब बाजी हार

मेरा नाम ऋषि बेदी है। मैं दिल्ली राजगढ़ का निवासी हूं, आज आपको एक गुरू की निगाह का कमाल कह लो या अटल सत्य कह लो और एक शिष्य की बेवकूफियां या अंधविश्वास या झूठी आस्था या गुरु के प्रति केवल प्रेम की चापलूसी का दिखावा करना कह लो। मैं आपको एक सच्ची घटना बताने जा रहा हूं, जो कि मेरे परिवार की और गीता कालोनी में रहने वाले हमारे परम पूजनीय गुरूजी श्री सुशील कुमार मेहता जी के बीच का किस्सा है। वैसे तो गुरूजी से जुड़े हमें करीब 10 वर्ष हो चुके हैं और इन 10 वर्षों में गुरुजी की वाणी का सच उनकी हम पर रहमतों के सैकड़ो किस्से हैं। मगर मुझे आज सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि मैं इस श्री साई सुमिरन पत्रिका के माध्यम से आप सबको अपने एक निजी किस्से की बात कर साई की कृपा और गुरूजी की ताकत का व्याख्यान कर सकूं कि एक सच्चे गुरु की शिष्य के प्रति कैसी नज़र होती है और गुरु का दिल कितना नरम व दयावान होता है और शिष्य का दिल कितना कठोर व निर्दयी होता है।

अब मैं आपको दो किस्से बताने जा रहा हूं जिसमें गुरुजी की बातों का सच और हमारी खुद की मनमानी करने की वजह से हमारी बर्बादी की कहानी है और उनके द्व रा हम पर फिर रहमत करके हमें बचाने के किस्से हैं जो कि उनसे मिलने के 10 वर्षों का निचोड़ है।

मैं पहले अपने दो बेटों के किस्से बताने जा रहा हूं जिनका नाम मानव बेदी व गौतम बेदी है, इसमें से एक बेटे मानव बेदी का अनुभव इस पत्रिका में बताया जा चुका है जो कि कई वर्षों से कमर दर्द की बीमारी से जूझ रहा था। जो गुरु जी की रहमत से स्वस्थ हो गया और अब तक बिल्कुल स्वस्थ है। उसके बाद एक रोज़ मेरा बड़ा बेटा गौतम अपनी किसी दो फैंड्स को गुरूजी से इजाज़त लेकर मिलवाने के लिए गया जिनको अपने भविष्य के बारे में

कुछ जानना था। जब वह गुरु जी के पास उनको ले गया तो गुरूजी से उनकी बात करवाने के बाद जब जाने लगे तो मेरे बेटे ने एक लड़की की तरफ इशारा करते हुए गुरुजी को कहा गुरुजी यह लड़की मुझे पसंद है और मैं उससे विवाह करना चाहता हूं। तो गुरुजी ने तुरंत मना कर दिया कि बेटा जी इस लड़की से विवाह मत करना नहीं तो यह आपको व आपके पूरे परिवार को बर्बाद कर देगी। गुरुजी की इस बात को सुनकर मेरे बेटे को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा क्योंकि वह उस लड़की के मोह में पागल था मगर गुरुजी की रूहानी नज़र मेरे बेटे को बचाना चाहती थी। इसके बाद मेरे बेटे ने गुरु जी के पास जाना बंद कर दिया और उसी लड़की से शादी कर ली और फिर वही हुआ जो गुरुजी के मुख से निकला था उस लड़की ने एक सप्ताह बाद ही मेरे बेटे को छोड़ दिया और जब हम परिवार सहित उनके घर उनको लेने गए तो उस लड़की ने अपने घर वालों के साथ मिलकर हमें मारा पीटा और भगा दिया। फिर कोर्ट केस डाल दिया हमने 2 साल कोर्ट कचहरी में धक्के खाए और अंत में लड़की ने 5 लाख लेकर जान छोड़ी और तब से मेरा बेटा ऐसे ही नीरस सी ज़िंदगी जी रहा है। अब गुरूजी के पास जाऐं तो किस नज़र से जाऐं। वह घर भी उजाड़ बैठा और गुरू जी को भी गंवा बैठा। अब मेरी नासमझी की बारी है हमने कोई घर लेना था जिसके लिए मैंने गुरुजी से पूछा तो उन्होंने मना कर दिया कि आप लोग जो घर बनवाने जा रहे हो उस ज़मीन पर नकारात्मक शक्ति 'भूत प्रेत' का वास है वह आपको कष्ट देगी। गुरुजी की बात हमने सुन तो ली मगर अपनी मनमानी कर वही घर ले लिया उसके बाद जो हमारी बर्बादी हो रही है हम ही जानते हैं।

मेरे शरीर में ऐसा रोग लग गया है जिसके कारण मेरी दोनों टांगें खराब हो गई हैं और बुखार उतरने का नाम नहीं ले रहा, इसके कारण मैं काम पर भी नहीं जा पा रहा हूं इसी वजह से घर की आर्थिक स्थिति भी खराब हो गई है। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि डॉक्टर ने जितने भी टेस्ट करने को कहा, गुरुजी ने कहा कि सब की रिपोर्ट नार्मल आएगी और यही हो रहा है अंत में अभी पिछली 16 मई 2024 को मैक्स हॉस्पिटल के एक बड़े डॉक्टर ने मेरी खून की जांच करवाने को कहा कि आपको ब्लड कैंसर है जिसे सुनकर हम घबरा गए, मगर जब गुरूजी को यह बात बताई तो वो मुस्कुरा कर बोले जो पैसा बर्बाद करना है कर लो यह भी टेस्ट करवा कर देखो, सब नार्मल निकलेगा। हमने फिर भी टेस्ट करवाया और रिपोर्ट नॉर्मल आई। तो हमने गुरुजी से कहा कि आखिर ऐसी कौन सी वजह है कि ना मेरी रिपोर्ट में कुछ आ रहा है ना ही मुझे किसी दवाई का असर हो रहा है ना ही मैं ठीक हो रहा हूं तो गुरु जी ने कहा यह आपकी मनमानी का नतीजा है क्योंकि मैंने आपको वह घर लेने को मना किया था मगर आपने लिया फिर उसमें जो नकारात्मक शक्तियां हैं उनका आप पर असर आ गया है जिसकी वजह से आपको दवाई भी असर नहीं कर रही और मेडिकल रिपोर्ट में भी कुछ नहीं आ रहा है क्योंकि वह एक हवा (आत्मा) है जो किसी रिपोर्ट में दिखाई नहीं दे सकती है और ऐसी नज़र साइंस या डॉक्टर के पास नहीं जो कि उसको देख सके व उसका निवारण कर सके।

इसीलिए आपको मैंने जल दिया था जिसके सेवन से आपके घर की नकारात्मक शक्तियां समाप्त हो जाएगी और आप बिना दवा के ठीक हो जाओगे। जब से मैंने गुरूजी की बात मानी और सभी दवाइयां छोड़कर गुरूजी द्वारा अभिमंत्रित किए हुए जल का सेवन शुरू किया है तब से मैं स्वस्थ हो रहा हूं। अब आप सभी इस बात से अंदाज़ा लगा सकते हो कि जहां साइंस फेल हो जाती है वहां भगवान व रूहानियत काम आती है। एक सच्चे गुरु हमारे श्री सुशील कुमार मेहता जी हमारे काम आये। **-ऋषि बेदी,** दिल्ली

जन्मदिन मुबारक

2 जुलाई को आकांक्षा कोहली के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

जन्मदिन मुबारक

18 जुलाई को बेबी आकृषी कोहली के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर पापा रिषी राज कोहली एवं मम्मी अंकिला कोहली की तरफ से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं।

-के.एल. महाजन

जन्मदिन मुबारक

दिनांक 25 जुलाई को बाबा के नन्हें भक्त प्रेरक शर्मा के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर उन्हें हार्दिक बधाई।

-अंजु टंडन

श्री साई सुमिरन टाइम्स
की सदस्यता लेने के लिए जानकारी

भारत में वार्षिक मूल्य डाक द्वारा 500 रू. व कोरियर द्वारा 700 रू.
आजीवन सदस्यता 11000 रू., विदेशों में वार्षिक मूल्य 2500 रू.

आप अपना सदस्यता शुल्क **Paytm, M.O. या QR Code** द्वारा या श्री साई सुमिरन टाइम्स के HDFC बैंक, खाता संख्या 01292000015826, IFSC: HDFC0000129 में Net banking या चैक से जमा कर सकते हैं। अथवा State Bank of India, खाता संख्या 35247638760, IFSC: SBIN0017413 में जमा कर सकते हैं। Ch/DD in F/o Shri Sai Sumiran Times. कृपया राशि जमा करने की सूचना अवश्य दें। आप अपना पता व फोन न. हमें email/whatsapp/sms या डाक द्वारा भेज सकते हैं। हमारा पता है: श्री साई सुमिरन टाइम्स, F-44-D, MIG Flats, Hari Kunj Society, Hari Nagar, New Delhi - 110064.
Mob: 9212395615, 9818023070,
Email: saisumirantimes@gmail.com

नोट: इसमें विज्ञापन देने के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं।

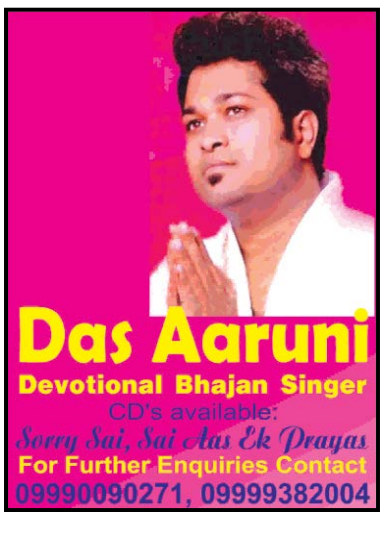

शिलांग शहर में बाबा की अनुभूति

मेरा नाम बलराम गुप्ता है, मैं बक्सर (बिहार) का निवासी हूं। दिल्ली में 5 साल की पोस्टिंग के बाद मेरा स्थानांतरण 10 जून से शिलांग, मेघालय में हो गया। गुड़गांव में मेरा सरकारी आवास था और वहां एक छोटा सा बाबा का मंदिर था जहां रोज़ शाम को ड्यूटी के बाद मैं बाबा की आरती करता था। 8 जून को मैं शिलांग के लिए रवाना हो गया। मेरा मन बहुत उदास था कि अब उस मंदिर में बाबा की सेवा सुश्रुषा तथा आरती कौन करेगा। हर 15 दिन पर कपड़े कौन बदलेगा। परन्तु बाबा को सब कुछ ज्ञात है, वो भक्तों से खुद अपना काम करवा लेते हैं। हम कोई खास आदमी नहीं हैं, हम तो बस उस ईश्वर समान बाबा के दास हैं। गुवाहाटी एयरपोर्ट पर उतरने के बाद दोपहर 2 बजे मैंने शिलांग के लिए टैक्सी ले ली। टैक्सी में मेरा मन अशांत था तथा मैं मन ही मन 'ऊँ साई राम' का जाप कर रहा था। मैं मन ही मन बाबा से ये प्रार्थना कर रहा था कि बाबा आप कहां हो, मुझे जल्दी से दर्शन दीजिए क्योंकि इस नई जगह में मेरा मन उद्विग्न हो रहा है। फिर क्या था कुछ ही समय बाद मेरे दाहिने तरफ से एक टैक्सी निकली जिसके डैशबोर्ड पर बाबा का चित्र था। बाबा के दर्शन पाकर मुझे सुकुन मिला कि बाबा मेरे आस-पास हैं और मुझे डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं शिलांग रात को पहुंचा। रात में ही मैं अपने कमरे में बाबा की फोटो, श्री साई ज्ञानेश्वरी एवं बाबा की मूर्ति एक छोटी सी टेबल पर स्थापित कर दिया। सुबह 6 बजे मेरी नींद खुली, तब 6:15 पर मेरे कमरे से 50 मीटर की दूरी पर मेन रोड पर स्पीकर लगा था जिसमें से ऊँ साई नमो नम: शिरडी साई नमो नम: जय-जय साई नमो नम:' की धुन बज रही थी। यह सुन कर मैं रोमांचित हो गया एवं मेरा मन झंकृत हो गया यह जानकर कि बाबा मुझे ये अनुभूति दिला रहे हैं कि 'मैं हू ना, फिर किस बात की चिंता। वहां के लोगों से पूछने पर पता चला कि शिलांग में पुलिस बाज़ार के पास जगन्नाथ मंदिर के बगल में साई बाबा का मंदिर है। मैं अगले दिन साई बाबा मंदिर गया। मंदिर के संचालक श्री राहुल बजाज जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री राहुल बजाज जी बाबा के अनन्य भक्त हैं। वहां बाबा के मंदिर में हर गुरूवार को सैंकड़ों साई भक्त पूरे शिलांग शहर से आते हैं। अगस्त में मंदिर का स्थापना दिवस बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। जिमसें करीब 4000 साई भक्तों का मेला लगता है। मेरी बाबा से यही प्रार्थना एवं विनती है कि इस नयी जगह में यूं ही अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखना। ओम साई राम। **-साई सेवक बलराम गुप्ता**

साई कृपा से सब संभव

मेरा नाम रमेश अमरनानी है। मैं हांगकांग में रहता हूं। मेरे पिताजी बाबा के भक्त थे इसलिए मैंने बचपन से ही बाबा का नाम सुना था। हमारा सारा परिवार बाबा को बहुत मानता है। मैं जब 17 साल का था तब पहली बार सन् 1999 में बाबा के दर्शन करने शिरडी गया था। मेरे जीवन में बाबा के अनगिनत चमत्कार हुए हैं उनमें से मैं आपको एक चमत्कार बताना चाहता हूं। एक बार मेरी बहन की तबीयत ठीक नहीं थी। उसकी दोनों टांगों में इन्फैकशन फैल गया था और उसकी दोनों टांगों में ज़ख्म हो गये थे और उनमें खून और पस दिखाई देता था। डाक्टर ने कहा कि इसकी सर्जरी करवानी पड़ेगी। यह सुनकर हम सब परेशान हो गये, हमारे पास कोई और रास्ता नहीं था इसलिए हमें डॉक्टर को सर्जरी के लिए हां करना पड़ा, क्योंकि दिन प्रति दिन उसकी हालत खराब होती जा रही थी। ऑपरेशन से एक दिन पहले उसे हॉस्पिटल में एडमिट करवाया गया। डॉक्टर ने उसकी टांगों के ज़ख्मों की और उससे प्रभावित स्किन की सफाई की और खराब स्किन हटा दी और उनकी टागों में पट्टियां बांध दी। डॉक्टर ने कहा कि अगले दिन सुबह वो मेरी बहन की सर्जरी करेंगे। हम अगली सुबह 7 बजे हॉस्पीटल पहुंच गये। हम सब लोग लगातार बाबा से उसके ठीक होने की प्रार्थना कर रहे थे। उसे ऑपरेशन थियेटर में ले जाने से पहले डॉक्टर ने उसके कपड़े बदलवा दिये। हम सब ऑपरेशन थियेटर के बाहर खड़े बाबा से प्रार्थना कर रहे थे। करीब 10 मिनट बाद डॉक्टर मेरी बहन को लेकर वापस आ गये। ये देख हम सब हैरान हो गये। डॉक्टर ने बताया कि अब ऑपरेशन की ज़रूरत नहीं है क्योंकि रातों रात इनकी नई स्किन अपने आप ही आ रही है। यह देखकर हम सब भी हैरान थे। यह हमारे लिए भी सुखद अनुभव था। डाक्टर की बात सुनकर हम समझ गये कि ये बाबा की कृपा ही है कि एक रात में ही बिना ऑपरेशन के वो ठीक होने लगी और एक दिन बाद ही उसे हॉस्पीटल से डिस्चार्ज कर दिया। बाबा की कृपा अनन्त है। उसके बाद हम बाबा का धन्यवाद करने शिरडी गये।

मैं कई वर्षों से शिरडी में रह रहा हूं। मेरी इच्छा थी कि मैं साई बाबा का मंदिर हॉगकांग में बनवाऊं। उसके लिए मैं कोई सही जगह देख रहा था जहां पर मैं साई बाबा का मंदिर बनवा सकूं। मैंने सब कुछ बाबा की मर्ज़ी पर छोड़ा हुआ था। एक दिन मेरे एजेन्ट ने मुझे बताया कि एक बिल्डिंग में सातवीं मंज़िल खाली है। यह सुनकर मैं प्रसन्न हो गया क्योंकि उसने जिस बिल्डिंग का ज़िक्र किया था उसमें 5वीं और 6वीं मंज़िल मेरे पास थी उसमें मेरा ऑफिस था। मैंने लैंड-लॉर्ड से बात करके वो सातवीं मंज़िल की डील पक्की कर दी। वह फ्लोर खरीदने में मुझे बहुत खुशी हुई क्योंकि अब ऑफिस के ऊपर बाबा का मंदिर होगा। हमने जयपुर से बाबा की मूर्ति मंगवाई और बाबा की कृपा से 29 जनवरी 2015 को पूरी श्रद्धा और विधि-विधान से बाबा की प्राण प्रतिष्ठा की गई। इस मंदिर के बन जाने से कॉवलीन के साई भक्त बहुत खुश हुए और उन्होंने साई बाबा का मंदिर बनवाने के लिए मेरा धन्यवाद कहा। पर मेरा मानना है कि यह सब बाबा की कृपा से हुआ। मैं बाबा का शुक्रगुज़ार हूं कि बाबा ने इस नेक काम के लिए मुझे चुना। मैं अपने मित्र श्री महेन्द्र बाबा जी, जो मुम्बई में रहते हैं उनका भी आभारी हूं जिन्होंने मुझे मंदिर बनवाने के लिए प्रेरणा दी और उत्साहित किया। मेरी पत्नी जया अमरनानी भी मुझे हमेशा बाबा के कार्यों के लिए प्रेरित करती रहती है सभी कार्यों में वो हमेशा मेरे साथ खड़ी रहती है। ओम साई राम।

-रमेश अमरनानी, कोवलून, हॉगकांग

जन्मदिन मुबारक

जन्मदिन मुबारक

29 जुलाई को श्रद्धेय सरोज माजी के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर उन्हें हार्दिक बधाई।

शादी की सालगिरह मुबारक

1 जुलाई
संजीव अरोड़ा
व
गीता अरोड़ा

10 जुलाई
के.एल. महाजन
व
इन्द्रा महाजन

13 जुलाई
राजेन्द्र गोयल
व
सुमन गोयल

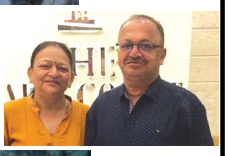

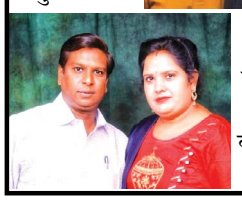

1 जुलाई
प्रदीप मित्तल
व
बबीता मित्तल

Parmhans Enterprises
Disposable & Safety Items
Disposable Bed Sheet, Dispo Panty,
Dispo Gown, Letex Gloves,
Gillette Razor, Dispo Towell,
Dispo Tissue, Dispo Face Mask,
Dispo Bra, Dispo Cap, Dispo Shoes
Natral Gloves, Dispo Hair Band,
Cover Surgi Care Gloves
M Fold C Fold, Tissue Box,
Customer Care No.
0870652184
E-mail : parmhans.kedar@gmail.com

बाबा ने मददगार भेजा

मेरा नाम करन नारायण भाई दाभी है। मैं अहमदाबाद में रहता हूं। मैं आप सभी भक्तों को अपना एक अनुभव बताना चाहता हूं। हमारी एक बेटी है और हमारी बहुत इच्छा थी कि हमारा एक बेटा हो। हमने साई बाबा से प्रार्थना की कि हमें एक बेटा दे दो तो हम उसको साथ लेकर आपके दर्शन के लिए शिरडी आऐंगे। बाबा की कृपा से हमारा बेटा हुआ और हमारा परिवार पूरा हो गया। अब हमारा बेटा सात साल का है, हम उसे लेकर बाबा के दर्शन के लिए शिरडी गये। दर्शन करके हम एक लग्ज़री बस से वापस आ रहे थे। नासिक से पहले एक गांव के पास एक ट्रक ने हमारी बस को पीछे से ज़ोर से टक्कर मारी जिससे भयंकर ऐक्सीटेंड हो गया। बहुत से लोगों को बहुत चोटें आई पर बाबा की कृपा से हम सब का बचाव हो गया। मेरे पैर में चोट आई। जिस समय एक्सीटेंड हुआ उस समय एक व्यक्ति शर्माजी ने आकर मुझे और मेरे परिवार को संभाला और हमारी बहुत मदद की। हम उन्हें जानते भी नहीं थे, उनका शिरडी में होटल साई दीप विलास है। हमें लगा कि साई बाबा शर्मा जी के रूप में हमारी मदद करने आए हैं। बाबा की कृपा से और उनकी सहायता से हम सकुशल घर पहुंच गये। जिन लोगों को भी हमारे इस एक्सीटेंड के बारे में पता चला वो हमारा हाल चाल पूछने आए तो हमने शर्मा जी द्वारा की गई सहायता के बारे में सभी को बताया। अगर हम दिल से बाबा को याद करते हैं तो बाबा किसी न किसी रूप में हमें सहायता पहुंचते हैं। बाबा की कृपा सदैव ऐसे ही हम पर बनी रहे, यही बाबा से प्रार्थना है।

-करन नारायण भाई दाभी, अहमदाबाद

बाबा का चलिया

आप सभी को मेरी तरफ से ऊँ साई राम जी। मैं लोधी रोड साई बाबा मंदिर में सन् 2003 से हर बृहस्पतिवार को जाया करता था, एक बार सन् 2004 मार्च में किसी कारण से मैं बहुत उदास था। कोई भी काम, चाहे वो व्यापार हो या परिवार से सम्बंध रखता हो सब कुछ विपरीत हो रहा था। तब मेरे एक चचेरे भाई ने राय दी कि मैं लोधी रोड साई मंदिर का चलिया रख लूं सब ठीक हो जायेगा। मैंने उसी दिन से चलिया शुरू कर दिया। उन चालीस दिनों को मैं ज़िन्दगी में कभी भूल नहीं पाऊँगा क्योंकि उन्हीं चालीस दिनों में मेरे व्यापार, परिवारिक और शादी से संबधित सभी कार्य मेरी इच्छानुसार होते चले गये। वह चालीसवां दिन था 13 अप्रैल 2004 उसके बाद से लेकर मैं प्रतिदिन लोधी रोड साई मंदिर में नियमित रूप से हाज़री दे रहा हूं। अगर मैं दिल्ली या भारत से बाहर होता हूं तो बाबा की कृपा से वहीं मन्दिर मिल जाता है और बाबा के दर्शन हो जाते है।

-आदित्य नागपाल, दिल्ली

बाबा की उदी का चमत्कार

मैं बाबा का बहुत छोटी सी भक्त हूं। बाबा ने मुझे बहुत सी मुश्किलों और चिंताओं से बाहर निकलने में मदद की है। ऐसा ही एक अनुभव मैं आप सबको बताना चाहती हूं। कुछ वर्ष पहले की बात है मेरी माँ के हाथ में बहुत तेज़ दर्द हो रहा था और वह अपना हाथ बिल्कुल भी उठा नहीं पा रही थीं। मुझे उनकी बहुत चिंता हो रही थी और वह जिस दर्द से गुज़र रही थी मैं उसे देख नहीं पा रही थी। मैंने अपनी मां को बाबा से प्रार्थना करने के लिए कहा। वो भी बाबा की परम भक्त हैं। लेकिन आश्चर्य की बात है कि दर्द बंद नहीं हुआ। अगले दिन ऑफिस से वापस आने के बाद मैंने बाबा से अपनी मां को ठीक करने के लिए प्रार्थना की और उनसे वादा किया कि मैं जीवन भर श्री साई सच्चरित्र का पारायण करूंगी। रात को सोने से पहले मैंने अपनी माँ के हाथ पर बाबा की उदी लगा दी। अगली सुबह, जब वह उठीं तो वह बिल्कुल ठीक थी और उनके हाथ का दर्द गायब हो चुका था। मुझे इस घटना से यह सबक मिला कि बाबा से अगर श्रद्धापूर्वक प्रार्थना करो तो बाबा अवश्य सुनते हैं।

मैं एक और अनुभव बताना चाहूंगी। एक बार मैं ऑफिस के बाद अपना फोन देख रही थी। तभी अचानक मुझे मेरी गर्दन में अजीब सा दर्द महसूस हुआ जो गर्दन से लेकर मेरे सिर तक फैल रहा था। मैं न तो अपना सिर झुका पा रहा थी और न ही ऊपर उठा पा रहा थी, लेकिन मुझे बिल्कुल चिंता नहीं हुई क्योंकि मुझे पता था कि मेरे पास सबसे अच्छी दवा 'बाबा की उदी' है। मैंने बाबा की उदी लगाई और कुछ ही मिनटों में मेरा दर्द पूरी तरह से गायब हो गया। मुझे एहसास हो गया कि बाबा सदा मेरे साथ हैं। बाबा से मेरी प्रार्थना है कि जाने-अनजाने में हुई मेरी गलतियों के लिए मुझे क्षमा करें और सदैव मेरे साथ रहें। ओम साई राम।

-कनमनी, मलेशिया

साई बाबा का चमत्कार

मेरी बाबा के चरणों में बहुत श्रद्धा है। कुछ साल पहले अपने साथ हुए एक अनुभव को मैं आप सभी को बताना चाहती हूं, जिससे बाबा के चरणों में मेरा विश्वास और भी दृढ़ हो गया। कुछ साल पहले मेरी अलमारी से 50 हज़ार रूपये गुम हो गये। मैंने अच्छी तरह से अपनी अलमारी में ढूंढा पर मुझे कहीं पैसे नहीं मिले। मैंने घर में काम करने वाले सभी नौकरों से पूछा पर सबने कहा कि हम पैसों के बारे में कुछ नहीं जानते। मैं बाबा के पास गई और उनसे कहा कि अगर श्री साई सच्चरित्र में लिखी कहानियां सही हैं तो आप मेरे खोये हुए पैसे लौटाकर इसकी सत्यता का परिणाम दो। अगले दिन हमारे घर का एक नौकर मेरे पास आया और रोने लगा। उसने कहा कि मेरे घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण मैंने वो पैसे चुराये थे। आप अपने पूरे पैसे रख लीजिए और मुझे माफ कर दीजिए। ये कह कर उसने मेरे पैसे लौटा दिये। उसके बाद मैंने बाबा से माफी मांगी कि मैंने आपकी परीक्षा लेने की कोशिश की। आप मुझे माफ करें। ओम साई राम।

-प्रोमिला

Venus, Zee & World fame
Contact For:
Sai Bhajans
Brij Mohan Naagar Parveen Mudgal
Ph: 9891747701, 9958634815

साई, कृष्ण, राम भजन,
माता की चौकी-जागरण,
खाटू श्याम, सुन्दरकांड,
झांकियां, हर अवसर एवं
उत्सव के लिए सम्पर्क करें
USA, UK, Australia, Canada, Dubai
Malaysia, Swedan, Singapore
के भक्तों द्वारा प्रशंसित साई भजन
R.K. SAXENA
Radio & T.V., Artist
गायक, गीतकार,
उद्घोषक एवं निर्देशक
एलबम- मैंने पहन लिया साई चोला, साई मेरा तन-मन-धन, साई मंत्र एवं धुन,
साई बाबा आ जाओ, साई जी तुम्हें याद करें, साई करेंगे बेड़ा पार
355, DDA, SFS Flat, Pocket-1, Sector-9, Dwarka, New Delhi-75
Contact : 09811126436, 9711003436, 011-35874561

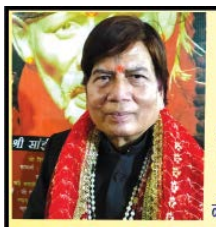

Shradha Saburi
Sai Vishal Das
Sai Bhajan
Singer
&
Lyricist
09891511236, 09212322060, 9718117599

साई मंदिर आदर्श नगर का स्थापना दिवस धूमधाम से सम्पन्न

दिल्ली: दिनांक 20 जून 2024 को शिरडी साई मंदिर, एफ-1, अशोक रोड, आदर्श नगर एक्सटेंशन में मंदिर का 25वां स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बाबा का दरबार फूलों से सजाया गया, दरबार में विराजित बाबा अत्यंत आकर्षित लग रहे थे। शाम 6 बजे साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्योत प्रज्वलित

करके किया गया। श्री गणेश वंदना के साथ भजनों का कार्यक्रम शुरू हुआ जिसमें कई भजन गायक, के.के. अन्जाना, बूम बूम सैंडी और बबिता शर्मा जी द्वारा भजनों का गुणगान किया गया। सभी गायकों ने अपनी-अपनी शैली में भजनों का गुणगान करके भक्तों को साई भक्ति में सराबोर कर दिया। कई भक्तों ने भजनों पर नृत्य भी किया। पूरा माहौल साईमय हो गया। सजदा आर्ट ग्रुप के कलाकारों ने साई बाबा की लीलाओं पर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की जिसका बहुत से भक्तों ने आनंद लिया। स्थापना दिवस के अवसर पर बाबा के समक्ष केक भी काटा गया। अंत में आरती की गई और उसके पश्चात् सभी को भंडारा प्रसाद वितरित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक एवं चेयरमैन श्री बी.पी. मखीजा जी के मार्ग दर्शन में किया गया। **-कृष्णा पुरी**

साई मंदिर रोहिणी में गुरू पूर्णिमा पर आमंत्रण

दिल्ली: हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 21 जुलाई 2024 को शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में गुरू पूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। इस पावन अवसर पर दिनभर विभिन्न गायकों द्वारा भजनों का गुणगान किया जायेगा। प्रात: 10 बजे से 12 बजे तक श्रद्धेय श्रवण महाराज जी भजनों का गुणगान करेंगे। तत्पश्चात् मध्यान्ह आरती की जाएगी। उसके बाद 12:30 से 1:30 बजे तक रमा कटारिया व 1:30 से 2:30 बजे तक शबनम गांधी भजनों का गुणगान करेंगी। सभी भक्तों

के लिए भंडारे की व्यवस्था की जाएगी।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता, श्री बी.पी. मखीजा व श्री विमल शर्मा द्वारा किया जायेगा।

मंदिर कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की तरफ से सभी भक्तों से निवेदन है कि गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर मंदिर में सपरिवार आकर सद्गुरू साईनाथ महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करें। **-कृष्णा पुरी**

प्रति शिरडी शिरगाँव पुणे में साई मंदिर का वार्षिकोत्सव

पुणे: दिनांक 11 जून 2024 को शिरगाँव, पुणे में स्थित प्रतिशिरडी के नाम से प्रसिद्ध साई बाबा मंदिर की 22वीं वर्षगांठ बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर पूरे मंदिर को रंगबिरंगी लाईटों और फूलों से अति सुन्दर सजाया गया। फूलों की सजावट राकेश मुगले द्वारा की गई। मंदिर परिसर में बाबा की पालकी भी निकाली गई जिसमें पूणे के शंकर महाराज भजन मंडल ने भजनों की प्रस्तुति दी। पालकी में सैकड़ों की संख्या

देवले और सचिव सपना लालचंदानी ने साई बाबा का अभिषेक किया। इस अवसर पर कोपरगांव से श्रद्धेय श्री सुरेश चव्हाण बाबा जी ने भी कार्यक्रम में शिरकत की। दिनभर विभिन्न गायकों द्वारा भजनों का गुणगान चलता रहा। गायिका गायत्री गायकवाड़ और पंडित महादेव पंडनेकर जी ने भजनों की प्रस्तुति दी।

मंदिर की ओर से साई भक्तों को नि:शुल्क महाप्रसाद प्रदान किया गया।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के ट्रस्टी श्री प्रकाश देवले, सपना लालचंदानी, रवि जाधव, उमेश कवितकर, प्रतिभा करंजकर, विभावरी जाधव, कल्पना कवितकर, डिम्पल लालचंदानी, मंदिर प्रबंधक अनिल देवकर, जयेश मूले, राकेश मुगले, विष्णु कदम, विनोद सुर्यवंशी, राकेश मुगले, साकेत करंजकर, अर्जुन दहिबाते, सिद्धजी माने, मंदिर के पुजारी गिरिश वाल्हेकर, नरेन्द्र दावरे, सुनील केसकर, प्रसाद पाठक, पंकज पांडे के बहुमूल्य सहयोग से किया गया। **-सुनील ठाकुर**

चावला परिवार द्वारा शानदार साई भजन संध्या

दिल्ली: दिनांक 27 जून 2024 को श्रीमती नीना चावला व उनके परिवार द्वारा कासा रॉयल बैंक्वटहॉल, मायापुरी में शानदार साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन उनकी पुत्री दिव्या एवं दिवेश के विवाह से पूर्व और साथ ही उनके पुत्र साहिल व बहु छवि की नन्हीं बिटिया के जन्म के शुभअवसर पर बाबा का आशीर्वाद पाने हेतु किया गया। बाबा की लीलाओं का मधुर गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध भजन गायक दास अरूणी जी को आमंत्रित किया गया। अरूणी जी ने गणेश वंदना

से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात् उन्होंने अपने निराले अंदाज़ में कई भजन सुनाकर समां बांध दिया। उनके भजनों को सुनकर कई भक्तों ने नृत्य भी किया। भजनों के दौरान भक्तों ने स्वादिष्ट व्यंजनों का भी आनंद लिया। खुशी का माहौल देखते हुए अरूणी जी ने कुछ मस्ती भरे भजन भी सुनाए जिस पर भक्तों ने खूब नृत्य किया। भक्तों ने फूल बरसाते हुए बाबा की पालकी भी निकाली। आरती के बाद सबने स्वादिष्ट भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती नीना चावला, साहिल चावला, छवि व दिव्या द्वारा बखूबी किया गया। नीना जी ने सभी मेहमानों को मिठाई के डिब्बे व हलवा प्रसाद देकर विदा किया। **-राजेन्द्र सचदेवा**

साई मंदिर रघु नगर में स्थापना दिवस

दिल्ली: दिनांक 30 जून 2024 को शिरडी साई बाबा मन्दिर, रघु नगर का 15वां स्थापना दिवस मंदिर के हॉल में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। प्रात: बाबा का मंगलस्नान एवं अभिषेक किया गया।

सायं 7 बजे से सुप्रसिद्ध भजन गायक सेठी जी व उनके साथी कलाकारों ने अनेक साई भजन सुनाकर सबका मन मोह लिया। कई भक्तों ने उनके भजनों पर नृत्य भी किया। मन्दिर का पूरा हाल भक्तों से भरा था। इस अवसर पर बाबा के समक्ष केक भी काटा गया जो सभी भक्तों को प्रसाद स्वरूप वितरित किया गया। आरती के बाद भक्तों ने स्वादिष्ट भण्डारे का आनन्द लिया। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक श्री शशि कपूर जी द्वारा बतरा जी, अश्मित जी, सुरेश जी, राणा जी, सुभाष जी, राजकुमार जी, धर्मेंद्र जी, धर्मेश जी, मनोहर लाल जी, शौर्या कपूर व स्थानीय भक्तों के सहयोग से किया गया। श्री शशि कपूर जी एवं उनका परिवार स्वयं बाबा की सेवा करते हैं। इस साई मंदिर में चढ़ावा नहीं चढ़ाया जाता। इस मंदिर में आकर मन को बहुत सुकून मिलता है। भक्तगण यहां बाबा की मौजूदगी महसूस कर सकते हैं। मंदिर का माहौल अत्यंत भक्तिमय है। **-कृष्णा पुरी**

साई मंदिर विरेन्द्र नगर में स्थापना दिवस पर पालकी साई भजन एवं भंडारा

दिल्ली: दिनांक 18 जून से 21 जून 2024 तक श्री साई मंदिर, गली न. 2, विरेन्द्र नगर एक्सटेंशन, बी2सी जनता फ्लैट्स जनकपुरी में साई मंदिर का 15वां वार्षिक साई महोत्सव श्रीमती सरोजनी देवी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर 4 दिवसीय कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। दिनांक 18 जून 2024 को सायं 4 बजे से 6 बजे तक भजन संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें श्री रमन शर्मा ने भजन प्रस्तुत किए। सांय 7 बजे बाबा की भव्य पालकी शोभा यात्रा बैंड बाजे के साथ धूमधाम से निकाली गयी। पालकी में बहुत से भक्त शामिल हुए। भक्तगण नाचते गाते हुए पालकी के साथ-साथ साई नाम के जयकारे लगाते हुए चले। कई जगह पालकी का स्वागत किया गया और बाबा की आरती करके भक्तों ने बाबा का आशीर्वाद लिया। कई जगह बाबा की पालकी का स्वागत करके भक्तों में प्रसाद बांटा गया। विरेन्द्र नगर में भ्रमण करने के बाद बाबा की पालकी पुन: मंदिर पंहुची। तत्पश्चात शेज आरती की गई।

दिनांक 19 एवं 20 जून 2024 को सायं 4 बजे से 6 बजे तक महिला मंडल द्वारा भजन कीर्तन किया गया जिसमें सबने बाबा के भजनों का आनंद लिया। कई भजनों पर भक्तों ने नृत्य करके बबा के समक्ष अपनी हाज़री लगाई। दिनांक 21 जून 2024 को विशाल साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। सायं ज्योत प्रचण्ड करने के बाद साई भजनों का कार्यक्रम आरंभ हुआ। गणेश वंदना से भजनों का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर काका पंजाबी, कुमार प्रवीन, किशन राज, सलोनी साज़ एवं प्रेम जोहनी एंड पार्टी ने अपने-अपने अंदाज़ में भजन सुनाकर सारा वातावरण साईमय कर दिया। सभी भक्तों ने उनके भजनों का आनन्द लिया और उनकी गायिकी की सराहना की। भक्तों ने उनके भजनों का भरपूर आनंद लिया और कई भक्तों ने उनके भजनों पर बाबा की मस्ती में नृत्य भी किया। बाबा का रंगबिरंगे फूलों से सजा दरबार बहुत सुन्दर लग रहा था जो सभी भक्तों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। कार्यक्रम का समापन बाबा की आरती के साथ हुआ। उसके बाद सभी भक्तों ने बैठ कर प्रेमपूर्वक भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। भंडारा सेवा करोल बाग की संस्था 'साई असी नौकर तेरे' द्वारा दी गई। भक्तों की भारी भीड़ इन सभी कार्यक्रमों में शामिल हुई। कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती सरोजनी देवी चैरिटेबल ट्रस्ट एवं समस्त साई परिवार के सदस्यों व स्थानीय भक्तों के सहयोग से सफलता पूर्वक किया गया।

साई मंदिर आदर्श नगर में निर्जला एकादशी पर शर्बत वितरण

दिल्ली: दिनांक 18 जून 2024 को शिरडी साई बाबा मंदिर, एफ-1, अशोक रोड, आदर्श नगर एक्सटेंशन में निर्जला एकादशी के अवसर पर मंदिर के बाहर मीठे पानी की छबील लगाई गई। गर्मी अधिक होने के कारण कई भक्तों ने यहां आकर मीठे व शीतल जल का प्रसाद ग्रहण किया। पूरा दिन मीठे पानी का वितरण लोगों के लिए होता रहा। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक एवं चेयरमैन श्री बी.पी. मखीजा जी के मार्ग दर्शन में किया गया। **-कृष्णा पुरी**

साई परिवार द्वारा शिरडी में पालकी

शिरडी: दिनांक 20 जून 2024 को साई परिवार के सदस्यों द्वारा शिरडी में साई बाबा की पालकी शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें सभी साई भक्तों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। भक्तगण साई नाम के जयकारे लगाते हुए व नाचते गाते पालकी के साथ साई समाधि मंदिर तक पहुंचे और फिर शिरडी की विभिन्न गलियों से होते हुए वापस होटल पहुंच कर यात्रा सम्पन्न की। सभी भक्तों ने साई पालकी यात्रा का भरपूर आनंद उठाया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन दिलशाद गार्डन के सुरेश जी व हरि नगर के श्री मदनलाल कनोजिया जी द्वारा किया गया। **-निलेश संकलेचा**

शिरडी में प्रवीन मलिक और शिल्पी मदान की नई एलबम रिलीज़

शिरडी: प्रवीन मलिक जी द्वारा गाए गए साई भजन 'साई सानू न भुलाई' और शिल्पी मदान जी द्वारा गाए उनके नए भजन 'साई की दीवानी,' का विमोचन शिरडी के कई मंचो पर हुआ। साई संस्थान के समाधि शताब्दी मंच पर भाई जी सुमित पौंदा जी द्वारा विमोचन हुआ और खंडोबा मंदिर में संदीप नागरे जी द्वारा विमोचन हुआ। नागरे जी ने खंडोबा मंदिर में प्रवीन मलिक जी और शिल्पी मदान जी को सम्मानित किया। साई समर्पण समिति की भजन संध्या में 19 जून को भजन संध्या के दौरान कथावाचक कृष्णा जी और प्रसिद्ध भजन गायक प्रवीन महामुनि जी और समिति के शर्मा जी ने भी इन भजनों का विमोचन किया। साई संगम सेवा भावी संस्था के संदीप भाऊ सोनवने जी ने साई संगम होटल में भजनों का विमोचन किया और शिल्पी जी और प्रवीन जी को साई अंग वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया। बर्फानी सेवा मंडल ने पालकी यात्रा के दौरान इसका विमोचन किया। साई तीर्थ में साई समर्पण समिति और साई तीर्थ के भक्तों ने भजनों का विमोचन किया। साई समर्पण समिति सोनीपत के राहुल ग्रोवर जी और शर्मा जी का इस भजन को रिलीज़ करवाने में विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर दिल्ली से गए कृष्ण ग्रोवर, बंटी भैया, हिमांशु मदान और अनेकों भक्त शामिल हुए। मीडिया पार्टनर श्री साई सुमिरन टाइम्स ने इन भजनों को अपने न्यूज़ पेपर के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया। ये दोनों भजन शरणागत भजन ग्रुप के यूट्यूब चैनल पर भी उपलब्ध हैं। **-गायत्री सिंह**

श्रद्धा सबूरी
LEKH RAJ & SONS
JEWELLERS
For Exclusive
Gold, Diamond, Kundan, Silver Jewellery
Shop No. 3, B-33, Kalkaji New Delhi-19
Phone 26438272

बाबा के चरणों में
सरगम स्टूडियो
Producer of Films, Radio & TV Serials
E-23-B, Lajpat Nagar-2, New Delhi - 110024 Ph. No. 2981-5747

Anish Tahim
New Prominent Tailors
Specialist in Ladies & Men's Wear
K-25, Opp. Plaza, Connaught Place, New Delhi-110001
Tel.: 23418665, 51513273, 55355016
Mobile: 9810027195

फकीर मेरा दीन-दयाला सब कुछ देता जाए भाग 2

अपने सदेह समय ही बाबा ने भक्त म्हालसापति से कहा था इस शिरडी गांव में ऊंची इमारतों और भवनों का निर्माण होगा, बड़े-बड़े अर्थात अमीर, पढ़े-लिखे, सबूदार, गणमान्य लोग यहां आयेंगे और भव्य उत्सव, जुलूस, त्योहार समारोह धूमधाम से मनाए जायेंगे। उपस्थित लोगों ने यह बात हंसी में टाल दी थी, क्योंकि शिरडी जैसे छोटे से गांव में यह सब होने की संभावना नहीं थी और यह सर्वविदित है कि शिरडी एक श्री तीर्थ है जहां औसतन 35 हज़ार लोग प्रतिदिन शिरडी आते हैं और उत्सवों पर उनकी संख्या लाखों तक पहुंच जाती है। वस्तुत: बाबा ने अपने भक्तों को कुछ आश्वासन दिये थे, जो कि बाबा के 11 वचनों के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके 11 वचनों का सार-तत्व यह है कि बाबा अपनी समाधि से भी अपने पुराने व नये सभी भक्तों की रक्षा एवं उनका मार्गदर्शन करेंगे। एक समय बाबा ने यह भी कहा था कि वे गुली-गुली। (गली-गली) में रहेंगे। उनकी भविष्यवाणी ब्रह्म-लिखित निकली है। बाबा श्री के नाम से देश-भर में हज़ारों की संख्या में मंदिरों का निर्माण हुआ है और हो रहा है। विदेशों में भी बाबा की ख्याति फैल रही है और मंदिरों का निर्माण हो रहा है।

यह अति विशेषनीय व उल्लेखनीय है कि बाबा महासमाधि पश्चात् और भी शक्तिशाली बनकर भक्तों की रक्षा कर रहे हैं, उन्हें नवजीवन दे रहे हैं। यह सत्य है कि एक समय बाबा ने बापू साहेब से कहा था कि तुमने मेरी शक्ति एक पाव देखी है, देखना मेरी महासमाधि के पश्चात् मेरी शक्ति। सत्य में आज उनके श्री चरणों में आने वाला उनकी कृपा प्राप्त कर रहा है। यह भी अति विशेषनीय है कि उनके चरणों में आने वाला कोई साधारण नहीं है अपितु सब गणमान्य व्यक्ति हैं।

श्रीमती अनन्थुला पद्मजा अपने परिवार के साथ शिरडी जा रही थी कि उनके पति को बाबा ने ट्रेन से नीचे गिरने से बचाया-उस घटना के साक्षी के अनुसार- हम दूसरी बार शिरडी जा रहे थे। लगभग मध्यरात्रि के समय हमारी ट्रेन कोपरगांव स्टेशन पहुंची। जब जल्दी-जल्दी सामान के साथ उतरने लगे। हमारे साथ सोनू के माता-पिता के लिये यह यात्रा विशेष थी, वे बाबा से दूसरी संतान की प्राप्ति चाहते थे। पहली संतान भी बाबा के दर्शन पश्चात् ही प्राप्त हुई थी। ज्योही गाड़ी रूकी सब तेज़ी से उतरने लगे। दो मिनट का स्टॉप था, गाड़ी सरकने लगी। तभी पता लगा सोनू की दादी, जिसकी गोद में सोनू की शिशु बहन थी, ट्रेन में ही रह गई है। सोनू के पिता चिल्लाये, 'ज़ंजीर खींचो।' तब तक गाड़ी गति पकड़ चुकी थी। वृद्ध महिला घबरा गई और बिना चेन खींचे ट्रेन से नीचे फिसल गई। एक अज्ञात व्यक्ति ने शिशु को उनसे छीन लिया। सोनू के पिता ने सहारा देने का प्रयास किया तो दोनों चलती ट्रेन से फिसल गये। कुछ डिब्बे अभी भी निकलने में शेष थे। सब की सांसे रूक गई थी। सोनू की मां जो बीमार व कमज़ोर थी ट्रेन के साथ-साथ दौड़ी और क्षण भर में अपने हृष्टपुष्ट पति को बाहर खींच लिया। सोनू की दादी के साथ क्या हुआ। दो और डिब्बे शेष थे। हमें विश्वास हो गया कि वे अब जीवित नहीं होगी। जैसे ही ट्रेन गुज़री हमने नीचे झांक कर देखा महान आश्चर्य वृद्ध महिला सीधी खड़ी हो गई और बोली मुझे कोई चोट नहीं लगी है। चमत्कार था यह कि कैसे एक बीमार महिला ने भारी बदन वाले अपने पति को क्षण भर में बाहर खींचा व वृद्ध महिला पटरी पर गिरी, ट्रेन निकल गई और खरोंच तक नहीं आई।

निसर्ग नियमों के अनुसार साई ने देह छोड़ी है, लेकिन उनके 'छोड़ शरीर चला जाऊंगा, भक्त हेतु दौड़ा आऊंगा, मुझे सदा जीवित ही जानो, अनुभव कर सत्य यह पहचानो,' इन वचनों के अनुसार, उनके सगुण, साकार जीवन पर वे आज भी समय-समय पर भक्तों का मार्गदर्शन कर रहे हैं, कदम-कदम पर उनकी रक्षा कर रहे हैं, यह भक्त लोग आज भी अनुभव कर रहे हैं।

सन् 1953 में जब मेरे पार्टनर ने मुझे व्यापार में पांच लाख का धोखा दिया तो सदमे की वजह से मैं बोलने की शक्ति खो बैठा। मेरे पिता जी ने हर संभव ईलाज किया कोई लाभ नहीं हुआ। पिता जी मुझे ऐसी जगह भेजना चाहते थे जहां पर मेरे गुंगेपन का ईलाज हो सके अत: उन्होंने मुझसे पूछा, 'कहां जाना चाहते हो? मैं 1927 में शिरडी गया था, सो ईशारों में कहा- 'मैं शिरडी जाऊँगा।' सन् 1954 में मैं शिरडी गया और वहां तीन माह ठहरा। इस अवधि में मैंने दिल से बाबा से विनती की कि बाबा मैंने आर्थिक व शारीरिक रूप से काफी कष्ट उठाये हैं। बाबा मुझे पुन: वाणी प्रदान

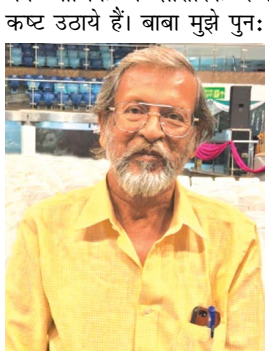

करके मेरे कष्ट दूर करो। धन्य हैं बाबा उन्होंने मेरी दर्द-भरी पुकार सुन मुझे बोलने की शक्ति दे दी।

बाबा श्री की असीम लीला देख परिवारजन दंग रह गये। इस घटना की स्मृति में मैंने जलगांव में बाबा का मंदिर बनवाया। उपरोक्त लीला श्री पोलन सेठ जलगांव की, श्री साई लीला पत्रिका जुलाई 2019 में प्रकाशित हुई है।

भक्तगण-बाबा निर्गुण से सगुण में अवतरित हुए और फिर से निर्गुण में समा गये। साई समय-समय पर अपने चैतन्य की प्रतीति अनुभवों द्वारा देते रहते हैं। सन् 1956 में एक विधवा स्कूल टीचर का बेटा एम.एस.सी. की परीक्षा दे रहा था। अन्तिम पेपर देकर जब घर लौटा तब बुखार से बुरी तरह पीड़ित था। उपचार पश्चात् बुखार तो उतर गया परन्तु अभाग्यवश अपने दोनों पैरों से विकलांग हो गया। अगर कहीं जाना होता तो उसे उठाकर ले जाना पड़ता। हर तरह का उपचार नाकाम रहा। बाबा श्री की असीम, अचरज भरी लीलाओं को सुन वे शिरडी गये। अपनी पंगुता के कारण कुली के कंधे पर बैठ बाबा की समाधि तक जाने की बजाय बालक ने वाड़े में ही रूकना उचित समझा। माता ने समाधि पर जाकर माथा टेका। तीसरे दिन उन्हें वापस जाना था। तीसरे दिन माता अपने बेटे के लिये मंदिर में प्रार्थना करने गई। उसी दौरान बाबा बालक के सामने प्रकट हुए और बोले, 'हिम्मत रखो' और उसे अपने हाथों में उठाकर मंदिर में ले आये और एक खंभे के पास खड़ा कर दिया।

माता जब लौटी तो बालक को वहां न पाकर रोती हुई समाधि मंदिर गई। जैसे ही वापस आई बेटे को मंदिर में एक खंभे पास खड़े देखा। मां की चिन्ता आश्चर्य में बदल गई। जब पूछा वह यहां कैसे आया? जो सब वृतान्त उसने सुनाया, माता को विश्वास नहीं हुआ। परन्तु जब सहारा लेकर बालक कमरे तक आया तो माता को उसकी बात पर यकीन हो गया। एक महीने के अंदर ही बाबा की कृपा से वह लड़का पूर्णतया स्वस्थ हो अपने पैरों से चलने लगा। क्या कहना मेरे साई का, तेरी रहम नज़र के बिना, हम कहीं नहीं हैं। (साई लीला पत्रिका 2019)

हे परमात्मा, हे अनंत, हे संतो में श्रेष्ठ श्री साईनाथ महाराज, आपकी जय हो। भक्तों के प्रति दया-भाव के कारण आप नाना रूपों में प्रकट होकर भक्तों के संकटों का निवारण करते हैं जिनकी वे कल्पना तक नहीं कर सकते हैं। 'नेल्लौर के तेलुगु पंडित श्री डी. पिचत्य शास्त्री जी के कहेनुसार, 'मेरी पत्नी और मैंने तेलुगु में साईलीला नामक बुक पढ़ी ही थी कि हमें समाचार मिला कि बेजवाड़ा में रहने वाली लड़की बीमार है। हमने दूसरे दिन ही बेटी के पास जाने का निश्चय किया। रात्रि मध्य में मेरी पत्नी को स्वप्न हुआ, जिसमें उन्हें एक वृद्ध व्यक्ति दिखाई दिया, जो कह रहा था, 'डरो मत' तुम्हारी पुत्री सुरक्षित है। सवेरे ही हमें पत्र मिला, जिसमें बताया गया था कि हमारी पुत्री ठीक है और चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है। हमें पूर्ण विश्वास है कि स्वपन में प्रकट होने वाले और कोई नहीं स्वयं बाबा ही थे।

तमिलनाडु के श्री मणि अय्यर की बेटी जन्म से ही गूंगी थी। बहुत उपचार किये पर सब ईलाज व्यर्थ सिद्ध हुए। बाबा की कीर्ति सुनकर मणि ने बाबा की पूजा-अराधना शुरू की। कुछ दिनों के बाद बाबा ने उन्हें शिरडी आने को कहा। जैसे ही गूंगी बेटी को बाबा की समाधि पर लाया गया, वह स्पष्ट रूप से पहला शब्द बोली 'साई बाबा' जैसे ही गूंगी बेटी के मुख से यह शब्द निकले माता-पिता की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। (साई लीला 2019)

साई कथाओं की महानता धन्य है। धन्य-धन्य है उनके श्रवण का प्रभाव। उनके मनन से हमारे जन्मजात सद्गुण प्रकट होते हैं और साई चरणों में हमारी आस्था की वृद्धि होती है। सद्गुरू साई की महानता का गुणगान करने से चित्त की भी शुद्धि होती है और साथ-साथ उनके नाम का जप करके दृढ़ता से उनका चिंतन-मनन किया जाए तो बाबा का परमानंद देने वाला रूप भक्त के समक्ष प्रकट हो जाता है। यह सर्वविदित है कि बाबाश्री ने भक्तों के ईष्ट के रूप में दर्शन दिये, अपने सदेह समय। आइये चेन्नई की सुशीला देवी मटकाल की कथा का श्रवण करें कि बाबा ने महासमाधि पश्चात् सन्त रमण महर्षि के रूप में उन्हें दर्शन दिये। उन्हीं के शब्दों में, हमने उनके दर्शन कई बार किये थे। हम उनकी पादुकाओं की पूजा किया करते थे। महाराज की समाधि के समय हम विदेश में थे अत: उनके दर्शन नहीं कर पाये। हमें बड़ी निराशा हुई क्योंकि हम उनकी समाधि के बाद 15 दिन बाद चेन्नई आये थे। उस समय कुछ भक्त श्री साई बाबा मंदिर बनाने हेतु चंदा मांग रहे थे। उन्होंने हमसे भी चंदा मांगा। उन्होंने बाबा की प्रशंसा की हमें शिरडी जाकर बाबा की समाधि के दर्शन करने को कहा। हमने कहा रमण महर्षि हमारे गुरू हैं, अत: हम पहले उनके दर्शन करेंगे और बाद में कहीं और जायेंगे। दो ही दिनों में 3 मार्च 1953 को शिरडी यात्रा की और बाबा के गुरूस्थान में पिण्डी के पीछे रखे हुए बाबा के चित्र के दर्शन किये। जब हमने चित्र की ओर टकटकी बांध कर देखा तो बाबा ने अपने दर्शन सन्त महर्षि रमण के रूप में दिये। मैं शिरडी में 7-8 दिन ठहरी और बाबा के सत्चरित्र का पारायण किया। मैं इस आश्वासन से भरपूर हृदय के साथ अपने घर गई कि बाबा ही संत रमण महर्षि हैं। ये बाबाश्री के अमृत तुल्य शब्द हैं- 'ज्ञान की जीवन्त मूर्ति, सर्वोच्च निर्मल चैतन्य अथवा आनंद-धन यह मेरा वास्तविक स्वरूप है। इसलिये मेरे निराकार सच्चिदानंद स्वरूप का निरंतर ध्यान करो।

भक्तगण-यह साई भक्तों का प्रत्यक्ष अनुभव है कि साई बाबा सर्वदेवता हैं अर्थात उनमें सभी देवी-देवताओं का वास है। उपरोक्त लीला में एक भक्त ने श्री साई में अपने गुरू की छवि को प्रत्यक्ष देखा। निम्नलिखित लीला में एक भक्त ने समाधि मंदिर में देवी मां व उनकी सवारी सिंह को देखा- 'भारत ऋषि और मुनियों का देश है और बाबा एक महान ऋषि हैं। मध्य-प्रदेश में चित्रकूट के श्री माधवनाथ भी ऐसे ही संत थे। एक बार बालासाहेब पूणे जा रहे थे, तब श्री माधवनाथ ने उन्हें शिरडी के साई बाबा को देने के लिये एक चिट दिया। चिट पर मात्र 'देवीदर्शन' लिखा था, और कुछ नहीं। जब बाला साहेब शिरडी पहुंचे रात हो चुकी थी और समाधि मंदिर बंद हो चुका था। वो चित्र को खिड़की की चौखट पर रख, खड़े हो गये। बाबा जी की समाधि मच्छर-जाली से ढकी थी। वे समाधि के बायी ओर थे। तभी उन्होंने समाधि के दायी ओर एक चीता व बायी ओर देवी मां को देखा। उन्हें एक बार आभास हुआ कहीं वो सपना तो नहीं देख रहे हैं, परन्तु यह प्रत्यक्ष दर्शन थे। तब उन्हें चित्र पर लिखें 'देवी दर्शन' का अर्थ समझ में आया। बाद में उन्होंने मच्छर-जाली के अंदर बैठे हुए बाबा को चिलम पीते हुए और माधवराव को उनके सामने बैठे हुए देखा। यह दर्शन बहुत देर तक चला। भक्त धन्य-धन्य हो गया।

साई बाबा ने स्पष्ट शब्दों में कहा है- 'मिश्री से माधुर्य अलग हो सकता है, समुद्र लहरों से अलग हो सकता है तथा नेत्र से कांति अलग हो सकती है। परन्तु मेरे भोले, निष्ठावान भक्त कभी भी मुझसे अलग नहीं हो सकते। धन्य धन्य हैं वो भक्त जो मेरे सर्वव्यापी स्वरूप से परिचित हैं।

श्री हेमाडपंत जी की प्रार्थना- 'हे मेरे ईश्वर, मेरे सद्गुरू साई, मैं अपना अहंकार आपके चरणों में समर्पित करता हूं। इसके बाद मेरी सारी ज़िम्मेवारी आपकी है, क्योंकि मेरा अपना अलग से कोई अस्तित्व ही नहीं है, यही कामना करता हूं कि दिन-प्रतिदिन आपके प्रति मेरे प्रेम में वृद्धि हो। हे पूर्णकामा आपकी जय हो।

फकीर मेरा दीन-दयाला सब कुछ देता जाए। ना कुछ मांगे, न कुछ बोले, कृपा बरसाता जाए। जय श्री साई। संकलन- **योगराज मनचंदा**

आभार: साई लीला पत्रिका (2014)

शिरडी संस्थान को मिला 3 टन केसर आम का दान

साई भक्त श्री रवि नारायण करगल, चव्हाण वाड़ी तहसील शिरूर, ज़िला पुणे के भक्त ने हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी

श्री साईबाबा संस्थान को दान के रूप में 3 टन केसर आम दिए। संस्थान के

साई प्रसादालय में साई भक्तों को भोजन प्रसाद के साथ आमरस वितरित किया गया। संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिलकर जी ने स्वयं अपने हाथों से भक्तों को आमरस बांटा। सभी भक्तों ने इस आमरस प्रसाद का भरपूर आनंद लिया।

प्राचीन साई धाम मंदिर देव नगर

दिल्ली: प्राचीन साई धाम मंदिर, देव नगर, करोल बाग में प्रत्येक वीरवार को संध्या आरती से पहले साई भक्तों द्वारा श्री साई ज्ञानेश्वरी और साई बावनी का पाठ किया जाता है। जिसमें बड़ी संख्या में साई भक्त शामिल होते हैं और बाबा का पाठ कर बाबा का

आशीर्वाद भी प्राप्त करते हैं।

प्रत्येक माह महिला मण्डल के सदस्यों द्वारा श्री साई सच्चरित्र का पाठ भी मंदिर में किया जाता है, पाठ के बाद प्रसाद-वितरण किया जाता है। **-मंजु पालीवाल**

साई धाम फरीदाबाद में धूमधाम से मनाया गया विश्व योग दिवस

फरीदाबाद: दिनांक 21 जून 2024 को फरीदाबाद, सैक्टर-86 स्थित शिरडी साई बाबा स्कूल में विश्व योग दिवस का कार्यक्रम अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। गुरुकुल योग संस्था की ओर से आए मोनू शास्त्री ने सभी समर कैंप के छात्रों और वोकेशनल के छात्रों को योग की महिमा समझाते हुए योग कराया। कार्यक्रम का आरंभ मंत्र उच्चारण के साथ हुआ। तत्पश्चात सभी छात्रों व शिक्षकों ने सूर्य नमस्कार कर योग प्रारम्भ किया। साई धाम के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. मोतीलाल गुप्ता ने सभी देश वासियों को विश्व योग दिवस की शुभकामनायें देते हुए कहा कि योग की उत्पत्ति भारत वर्ष में ही हुई थी लेकिन हम धीरे धीरे अपनी संस्कृति और योग को भूलते जा रहे हैं। योग बड़ी से बड़ी

बीमारियों का इलाज बिना दवाओं के कर सकता है। आज पूरा विश्व योग को अपना रहा है, ये हमारे लिए गौरव की बात है। शिरडी साई बाबा स्कूल की प्रधानाचार्या बीनू शर्मा ने आए हुए सभी आगंतुकों को धन्यवाद दिया व सभी छात्रों को योग की महत्ता समझाई। कार्यक्रम में सीमा गुलाटी, आज़ाद, शिवम दिक्षित, प्रमोद शर्मा, रूबी सैनी, नेहा सैनी, डॉ ज्योति, डॉ प्रियंका, हर्षित, शीतल मेहता, ज्योति शर्मा, रेनू शर्मा, मंजू रावत, लक्ष्मी शर्मा, कमाल राय आदि शामिल हुए। **-के.ए. पिल्ले**

साई सबके सूत्रधार

बुरहानपुर से अकोला: बुरहानपुर की बात है। एक महिला ने सपने में देखा कि साई बाबा उसके दरवाज़े पर खड़े भोजन के लिए खिचड़ी मांग रहे हैं। उसने उठकर देखा तो द्वार पर कोई नज़र नहीं आया। फिर भी वह बहुत आनंदित हुई। उसने अपने पति और अन्य परिचितों को इस सपने के बारे में बताया। उसका पति डाक विभाग में काम करता था। दोनों ही बड़े धार्मिक थे। जब उसका तबादला अकोला हो गया तो दोनों ने शिरडी जाने का फैसला किया। एक दिन निकल पड़े। मार्ग में गोमती तीर्थ होकर वे शिरडी पहुंचे। दो महीने वहां रूके। हर दिन मस्जिद आते, बाबा का पूजन कर आनंदित होते। वे खिचड़ी का नैवेद्य अर्पित करने के इरादे से ही आए थे। लेकिन किसी न किसी कारण से 14 दिनों तक वह संयोग बन नहीं पाया कि वे बाबा को खिचड़ी का नैवेद्य अर्पित करे। 15वें दिन वह दोपहर के वक्त खिचड़ी लेकर पहुंची। तब तक बाबा अन्य लोगों के साथ भोजन के लिए बैठ चुके थे। परदा गिर चुका था। इसके बाद किसी में यह साहस नहीं था कि हाथ से परदा हटाकर भीतर दाखिल हो जाए, किंतु वह एक क्षण के लिए भी रूकी नहीं। परदा हटाया और भीतर पहुंच गई।

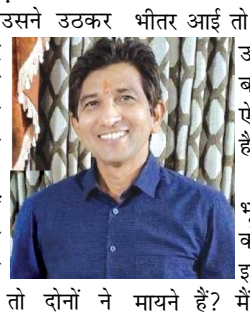

बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि बाबा की इच्छा उस दिन सबसे पहले खिचड़ी खाने की ही थी। जब वह थाली लेकर भीतर आई तो बाबा को बहुत खुशी हुई। वे उसी में से खिचड़ी का ग्रास बनाकर खाने लगे। बाबा की ऐसी उत्सुकता देख हर कोई हैरत से भर गया।

क्या बाबा खिचड़ी के भूखे थे? क्या उन्हें अमरूद के स्वाद का चस्का था? फिर इस महिला की भेंट से क्या मायने हैं? मैं समझता हूं कि यह बाबा को अपने भक्तों के प्रति अगाध प्रेम का ही उदाहरण है। जो लोग दूर-दूर से उनके प्रेम और भक्ति के प्रभाव में शिरडी चले आते थे, उनके प्रति बाबा का असीम प्रेम। भेंट स्वीकार करना अलग बात है। भक्त तो इसी में प्रसन्न हो जाते कि उनकी भेंट बाबा ने स्वीकार कर ली, लेकिन इस तरह व्यग्र होकर सामने आ जाना कि उन्हें आज खिचड़ी ही चाहिए थी, और वह आप ले आए हैं। इस अंदाज़ में भेंट स्वीकार करना! यह कमाल है। एक भक्त ही समझ सकता है कि बाबा के माध्यम से एक मामूली भक्त के जीवन का इससे बड़ा सम्मान और गरिमा क्या हो सकती थी?

-डॉ. राजेश पी. माहेश्वरी

आभार: शिरडी के साई सबके पैगंबर

सुमित पोंदा भाई जी द्वारा शिरडी में साई अमृतकथा

शिरडी: दिनांक 16, 17 व 18 जून 2024 को सुप्रसिद्ध कथाकार श्री सुमित पोंदा भाई जी द्वारा शिरडी के समाधि शताब्दी मंडप पर तीन दिवसीय कथा का आयोजन किया गया। भाई जी ने अपने चिरपरिचित अंदाज़ में बाबा की अनेक लीलाओं का वर्णन अपने मुखारबिंद से किया। विभिन्न शहरों से शिरडी में आए भक्तों ने उनकी कथा का आनन्द लिया। सुमित पोंदा जी ने बाबा की लीलाओं के साथ-साथ अनेक ज्ञानवर्धक किस्से भी सुनाए और कथा के दौरान भजनों का गुणगान भी किया जिसका सभी भक्तों ने भरपूर आनन्द लिया।

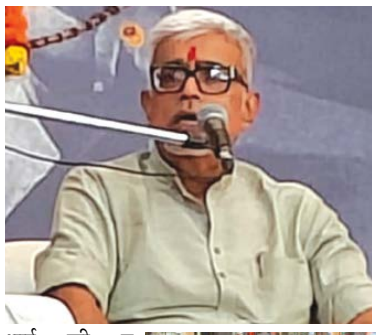

सुमित पोंदा जी हर वर्ष अपने जन्मदिन पर शिरडी में साई कथा की सेवा प्रदान करते हैं। श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से उन्हें शुभकामनाऐं देते हुए हम बाबा से दुआ करते है कि बाबा उन्हें लम्बी उम्र, अच्छी सेहत व खुशहाल जीवन प्रदान करें।

साई मंदिर सरोजनी नगर में स्थापना दिवस पर भजन कीर्तन

दिल्ली: दिनांक 30 जून 2024 को श्री साईनाथ मंदिर, बाबू मार्किट के नज़दीक, एच ब्लॉक, सरोजनी नगर में मंदिर का स्थापना दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। पूरे मंदिर को गुब्बारों और फूलों से सजाया गया। इस अवसर

आनंद लिया। कई भक्तों ने मंदिर में आकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया।

-राजेन्द्र सचदेवा

पर मंदिर की संस्थापक एवं बाबा की परम भक्त श्रीमती प्रीति भाटिया जी ने दोपहर की आरती के बाद भजन कीर्तन का आयोजन किया। आरती के बाद भक्तों को स्वादिष्ट भण्डारा प्रसाद वितरित किया गया। उसके बाद 2 बजे से सायं 5 बजे तक भजनों का गुणगान चलता रहा। सबने मधुर भजनों का

साई द्वारकामाई धाम ललतों कलां लुधियाना

लुधियाना: साई द्वारकामाई धाम, पक्खोवाल रोड, ललतों कलां, लुधियाना में धार्मिक

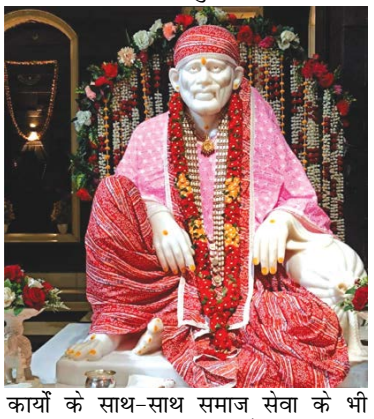

कार्यों के साथ-साथ समाज सेवा के भी अनेक कार्य किए जाते हैं। द्वारकामाई धाम मंदिर की सीमिति द्वारा गुरूपूर्णिमा पर 21 जुलाई 2024 से नि:शुल्क होम्योपैथिक डिस्पैंसरी का शुभारंभ किया जायेगा। भक्तगण होम्योपैथिक डिस्पैंसरी की सदस्यता के लिए फोन-9463796027, 9876630942 अथवा 7837801000 पर सम्पर्क कर सकते हैं। इसके अतिक्ति मंदिर द्वारा 11 गरीब परिवारों को राशन वितरण किया जाएगा एवं स्कूल के बच्चों को स्टेशनरी वितरित की जाएगी। गरीब बच्चों को कम्पयूटर की शिक्षा दी जाएगी व नि:शुल्क सिलाई केन्द्र में गरीब लोगों को सिलाई सिखाई जाएगी ताकि वे लोग अपना भविष्य संवार सकें। मंदिर समिति द्वारा गरीब लड़कियों की शादी में भी मदद की जाएगी। मंदिर समिति द्वारा उठाया यह कदम अत्यन्त सराहनीय है। सभी भक्तगण अपनी इच्छा अनुसार इस कार्य में अपना सहयोग देकर पुण्य के सहभागी बन सकते हैं।

दिनांक 21 जुलाई 2024 को गुरूपूर्णिमा के शुभावसर पर मंदिर में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। प्रात: 10:30 बजे हवन होगा, दोपहर 12 बजे होम्योपैथिक डिस्पैंसरी का शुभारंभ होगा। दोपहर 1 बजे से भजन कीर्तन का कार्यक्रम होगा जिसमें भजन गायक अमित कुमार एंड पार्टी बाबा की लीलाओं का गुणगान करेंगे। सभी भक्तों से अनुरोध है कि इन सभी कार्यक्रमों में शामिल होकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करें। **-राजेन्द्र गोयल**

गया छोड़ इस देह को किन्तु दौड़ा आऊँगा निजभक्त के हेतु

भावानुवाद श्री साई सच्चरित्र, लेखक-पवार काका

तीसरा वचन: पहले के दो वचनों से हमें बाबा के सगुण साकार स्वरूप की भक्ति प्राप्त हुई। अब हमें इस वचन से भक्ति की अगली पायदान निर्गुण, निराकार की भक्ति की ओर अग्रसर होने का संकेत मिलता है।

यह वचन बाबा के विश्वव्यापक स्वरूप का सूचक है। इन वचनों के मुलार्थ को समझकर हम बाबा के सगुण स्वरूप की भक्ति करते हुए, उनके निर्गुण निराकार रूप की अनुभूति करने लगते है। इस वचन द्वारा 'ईश से ही भरा यह सफल दृश्यजात' की अनुभूति प्राप्त करने का संकेत मिलता है।

इस वचन में बाबा 'यद्यपि यह शरीर गया मैं तज कर'। इस वाक्य का प्रयोग कर रहे हैं, किंतु यह शब्द रचना साधी-सरल नहीं हैं, यह तो बाबा की 'गूढ़ भाषा का ही एक भाग है। यद्यपि यह शरीर गया मैं तज कर, अर्थात् मैंने अपनी इच्छा से इस शरीर का त्याग किया है और आवश्यकता पड़ने पर मैं जब चाहूं तब फिर से कभी भी इसे धारण कर सकता हूं। वास्तव में मैं सदेह अथवा विदेही हुआ तो क्या फर्क पड़ता है, मैं भक्तों की करूण पारमार्थिक पुकार पर उनके कल्याण हेतु प्रकट हो जाऊँगा। भक्तों की दृढ़ भक्ति के सामने मेरी देह की मर्यादा कदापि बाधा नहीं बनेगी। बाबा के साढ़े तीन हाथ लम्बे सदेह सगुण रूप से परे जाकर, बाबा के परब्रह्म परमेश्वर स्वरूप को जान लेने का अवसर अर्थात् यह वचन है।

बाबा के देहधारी रहते उनके सगुण साकार रूप (Physical existence) को प्रत्येक भक्त खुली आंखों से देख पाता था। अब वे दिन नहीं रहे, इसलिए बाबा भी नहीं रहे, ऐसा अर्थ हो सकता है क्या? कभी नहीं! बाबा कल भी थे, आज भी हैं और कल भी रहेंगे। साई भगवान का यह अनादि अनंत स्वरूप समझ लेने का आरंभ यहां से होता है। यह दीर्घ प्रक्रिया है। कठिन भी बहुत है, परंतु अपरिहार्य है। सारा जीवन केवल पत्थरों की, प्रतिमाओं की पूजा करने में व्यर्थ ही समय न गंवाते हुए मेरे वास्तविक शाश्वत स्वरूप को समझ लो, यही उपदेश बाबा इस वचन के माध्यम से हमें दे रहें हैं।

सम्पूर्ण विश्व की चेतना शक्ति हैं बाबा।

उस शक्ति का नाम साई।
उन बिन रीता न स्थान कोई।
उन बिन दसों दिशाएं सूनी।
चराचर में व्याप्त देखो।

बाबा देह की मर्यादा में आ ही नहीं सकते।

साढ़े तीन हाथ का लंबा होता।
देहेन्द्रियों का जो ढांचा बड़ा रहता।
क्या वही साई अपना।
त्याग देवें समूल यह भ्रम।

भक्ति मार्ग का यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। जिस प्रकार एच.एस.सी. का वर्ष है, कड़ी परीक्षा है, पर बारहवीं कक्षा पास होना महत्वपूर्ण है। उसी प्रकार भक्ति मार्ग में पारमार्थिक प्रगति की पदवी पाकर, आत्मा को उन्नत अवस्था प्राप्त होगी। कर्मकाण्ड से तथा पूजा से बाहर निकलने की प्रक्रिया का आरंभ यहीं से होता है।

'मंदिर में, हृदय में केवल वही रम रहा है' यह समझ लेने का आरंभ अर्थात् बाबा का यह तीसरा वचन। यह अभ्यास कठिन तथा अनुभुति दुष्कर अवश्य है, किन्तु असंभव नहीं है। साईचरित्र की अगली कुछ ओवियों द्वारा बाबा अपना यही मनोगत व्यक्त कर रहे हैं।

वर्षानुवर्ष यह अभ्यास।
होते बढ़ेगा निर्गुण ध्यास।
आसनीं शयनीं भोजनीं अनायास।
जुड़ेगा मन संग बाबा के।
देह तो यह नाशवान
कभी तो होगा ही पतन।
अतः भक्ति में न करे खंत।
अनाद्यअनंत का ध्यान करें।
यह बहु विध दृश्य पसारा।
सकल अव्यक्त का सारा।
अव्यक्त से ही साकार रूप धारा।
लौट जायेगा अव्यक्त में ही।

बाबा देहधारी रहते हुए भी देह के बंधन में अथवा मर्यादा में कभी नहीं रहे। एक ही समय पर अनेक स्थानों में प्रकट होने के अनेक उदाहरण मिल जाऐंगे। निम्नोक्त लीला इसी का द्योतक है।

1. श्री बालकराम मानकर को मच्छेन्द्र गढ़ भेजा और एक दिन बाबा वहां सदेह प्रकट हुए। बाबा ने बालकराम की पूछ-परख की। तब इच्छित प्राप्ति का आनंद व्यक्त कर, मानकर ने बाबा से पूछा कि 'बाबा, यह परमसुख का खज़ाना आप मुझे शिरडी में रहते समय भी दे सकते थे, इसके लिए मुझे यहां भेजने की आवश्यकता क्यों प्रतीत हुई?' तब बाबा ने मानकर से कहा, 'तेरी भक्ति की मर्यादा का विस्तार करने हेतु तुझे यहां भेजा है। शिरडी में रहते हुए तू मेरे इस साढ़े तीन हाथ के देह को ही साई बाबा मान रहा था। मुझे मेरे विश्वात्मक स्वरूप की पहचान कराने हेतु ही इस मार्ग पर अग्रसर किया गया था।'

श्री साई चरित्र की एक सुंदर ओवी में बाबा यही बोध प्रदान कर रहे हैं।

अब जो यहां हूं वही वहां।
देख ले स्वस्थ चित्त से तू ज़रा।
वहां से मैंने जो भेजा तुझे यहां।
वह इसी निमित्त से तू जान।

इन्हीं भक्तश्रेष्ठ बाला मानकर को पुणे स्टेशन पर 'कालीकमली वाला' बन कर बाबा ने मुंबई की टिकट उपलब्ध करवाई थी। 2. सौ. चन्द्राताई बोरकर को कुर्डूवाडी स्टेशन पर जाकर बाबा ने दौंड़ तक की तीन रेलवे टिकट दी थी और बताया कि उसके पति दौड़ रेलवे स्टेशन के प्रतिक्षा कक्ष में हैं। तात्पर्य यह है कि देह तो बाबा के हाथ का खिलौना मात्र है। देह विद्यमान हो अथवा न हो, बाबा सगुण साकर हों अथवा निर्गुण निराकार हों, बाबा के मूल स्वरूप की पहचान आवश्यक है। अनेकों साईभक्त कहते हैं कि हम गत चालीस वर्षों से बाबा की मूर्ति की नित्य-नियम से पूजा-आराधना कर रहे हैं। प्रश्न यह उठता है कि मात्र प्रतिमा पूजन तथा अनुष्ठानों द्वारा ईश-प्राप्ति संभव है? नहीं। जब तक हम बाबा के सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, निरंकार, परब्रह्म स्वरूप की अनुभूति प्राप्त कर, सर्वभूतों में उनकी उपस्थिति को अनुभव नहीं कर लेते, तब तक सभी प्रक्रियाएं व साधनाएं असंपूर्ण हैं। हमें भक्ति के साथ ज्ञान का भी मिश्रण करना चाहिए तथा इस दिशा में निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। बाबा से सदैव उनके वास्तविक स्वरूप के ज्ञान के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

यह ब्रह्म सहित सृष्टि।
जैसी व्यष्टि वैसी समष्टि।
जिस अव्यक्तोदर से प्रकट होती।
समरसती वही अंत में।

यही है सृष्टि की रचना का मर्म जानकर, मायारूपी भ्रम का कद्दू फूटने का समय।

अतः किसी को नहीं मरण।
फिर यह बाबा को किस कारण।
नित्य शुद्ध-बुद्ध निरंजन। निर्मरण श्री साई।

जय साईराम। क्रमशः

ऐशबाग लखनऊ में श्री साई बाबा का 13 स्थापना दिवस

लखनऊ: दिनांक 3 जून 2024 को कैवेल्य तेजो निधि बाबा श्री शिरडी साईनाथ की असीम अनुकम्पा से तिलक नगर निवासी निगम परिवार एवं समस्त भक्तगणों द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री साई बाबा का तेरहवां स्थापना दिवस पूर्ण हर्षोल्लास से मनाया गया। प्रात: बाबा का मंगलस्नान, आरती व पूजा अर्चना का आयोजन किया गया। सांय 6 बजे ढोल नगाड़े के साथ कॉलोनी के भक्तगणों के सहयोग से बाबा की पालकी श्री राधा कृष्ण मन्दिर, ऐश बाग, लखनऊ प्रांगण से निकाली गई। जगह- जगह पर साई भक्तों ने बाबा की

पालकी की आरती उतारी तथा जलपान की व्यवस्था भी की। तदोपरान्त पालकी मंदिर प्रांगण में लाई गई। उसके बाद मंदिर में भजन कीर्तन का आयोजन किया गया। भजन सुनकर श्रोतागण भाव- विभोर हो उठे। भजन कीर्तन के बाद आरती की गई। उसके बाद सबने बाबा का भण्डारा ग्रहण किया जो देर रात तक चलता रहा। बाबा जी की मूर्ति व मन्दिर फूलों एवं लाइटों से बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया गया।

श्री साई बाबा का कीर्तन राधा कृष्ण मंदिर में प्रत्येक बृहस्पतिवार को सांय 6 बजे किया जाता है। हम लोगों के सहयोग व कालोनी की महिलाओं श्रीमती रूपम, कविता, अनीता, शालू, अन्नू, सोनिया, पूनम, नीरू अमिता जो मुख्य हैं, के द्वारा भजनों का गुणगान किया जाता है।

बाबा की कृपा सभी भक्तों पर बनी रहे, यही प्रार्थना है। **-अरूण निगम**

डी.एम. मुलके

सन् 1915 में, हमारे परिवार में एक दु:खद घटना घटी। मेरे बड़े भाई का 18 वर्ष का पुत्र, जो प्रथम श्रेणी में बी.ए. पास था, जिसका भविष्य बहुत उज्जवल था, उसने अचानक ईसाई धर्म को अपना लिया। उसके पिता, जो पुत्र को बहुत स्नेह करते थे, इस घटना से झल्ला गए। वे अशान्त हो गए। उन्हें किसी से भी बात करके शान्ति नहीं मिलती थी। तब श्री हरि सीता राम दीक्षित (जो बाबा के विशेष कृपा पात्र थे) मेरे भाई और पूरे परिवार को शिरडी ले गए। उनकी कृपा से माता-पिता दोनों ने एक बार जीवन में फिर से शान्ति प्राप्त की। उनका दूसरा पुत्र, जो बी.ए. पास है और आज जी.आई.पी. रेलवे में कार्यरत है, हड्डियों की सूजन के रोग से पीड़ित था। उसका इलाज मुंबई के प्रसिद्ध डॉक्टरों ने किया था लेकिन उसे कोई लाभ नहीं हुआ था। इस लड़के की हड्डी में एक घाव था जिसे श्री साई महाराज की विभूति और उनकी दया दृष्टि ने ठीक कर दिया था। किसी प्रकार इन्होंने बाबा का भजन कीर्तन और समय-समय पर शिरडी जाना आरम्भ कर दिया। मुझे इस विषय में कोई जानकारी नहीं थी। सन् 1916 में मेरा तबादला मुंबई हो गया। मैं सरकारी कर्मचारी था और मुझे पार्ले कार्यशाला के संपर्क में रहकर काम करना था। वहां रहने पर मैंने देखा कि मेरे भाई के घर गुप्त रूप से भजन कीर्तन किया जाता था। अब तक मैंने तो श्री साई बाबा के चित्र के दर्शन तक भी नहीं किए थे। लेकिन जिस घटना का वर्णन अब मैं करूंगा, उसके घटने के बाद ही मैंने बाबा के चित्र के दर्शन किए।

सन् 1916, अक्टूबर माह की बात है, मैं बहुत बीमार हो गया। मेरा बुखार बिना रूके 105-106 डिग्री तक पहुंच जाता था। स्थानीय डॉक्टर हर संभव प्रयास कर रहे थे। दुर्भाग्यवश कोई सुधार नहीं हो रहा था। एक सप्ताह के बाद, एक गुरूवार शाम को मैंने अपने भाई के घर साई बाबा का पूजन होते देखा व भजन सुने। यह सब मुझे बहुत अजीब लगा, क्योंकि मैंने वहां यह सब पहले कभी होते नहीं देखा था। मैं मानता हूं कि मुझमें अधिक श्रद्धा भाव नहीं था। मुझे लगता है कि श्री साई महाराज, जो गुरूनाथ के अवतार हैं, मेरी नास्तिक वृत्ति के अभाग्य से रक्षा करना चाहते थे। मेरा बुखार 104, 106 डिग्री था और उस रात मैंने स्वप्न में देखा कि एक बूढ़ा व्यक्ति सफेद कफनी पहने हुए था, और उसने अपने सिर पर एक सफेद कपड़ा बांधा हुआ था, (जिस प्रकार दक्षिण भारत में स्त्री-पुरूष सिर धोने के बाद सिर पर कपड़ा बांधते हैं) प्रकट हुआ और बोला, 'तुम्हें चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है। तुम तुरंत मेरे दर्शन के लिए आओ। अगर तुम ऐसा करने का प्रण करोगे तो तुम्हारा बुखार तुरंत ही ठीक हो जाएगा।' यह देखकर मैं डर गया और ज़ोर से चीख पड़ा। मैं अपने चीखने की आवाज़ सुनकर जाग गया। मेरी भौजाई, जो मुझे मां के समान स्नेह करती हैं, भागकर मेरे सिरहाने आ गई और मुझे भयभीत हालत में देखा। मेरा शरीर पसीने से भीगा हुआ था और आंखों से आंसू बह रहे थे। मैंने उन्हें अपना स्वप्न सुनाया। वे भाग कर गई और श्री साई महाराज का एक चित्र लाकर मुझे दिखाकर पूछा, 'क्या वे यही थे?' स्वप्न में दिखाई दिए बूढ़े व्यक्ति को मैं तुरंत पहचान गया। हमने जल्द से जल्द उनके दर्शन के लिए जाने का निर्णय कर लिया। मेरा बुखार ठीक हो गया और फिर दोबारा नहीं हुआ। मैं पूर्णत: स्वस्थ हो गया और अपने सभी कार्य भली-भांति करने लगा। जवान होने के कारण मैं शहरी जीवन की चमक-दमक में खो गया और शिरडी जाने के अपने प्रण को बिल्कुल भूल गया।

उस दौरान मैं मुंबई से निकल कर मोफस्सिल विभाग में कार्यरत होने के प्रयास कर रहा था लेकिन सफलता नहीं मिल रही थी। इस कारण मैं मुंबई में ही रह रहा था।

सन् 1917 फरवरी माह में, बाबा ने मुझ पर दया करते हुए मुझे उस स्वप्न व अपने भूले हुए प्रण की याद दिलवाई। ऐसा उन्होंने इस प्रकार किया। मुंबई से मेरा तबादला नासिक ज़िला के तालुका मालेगांव में हो गया। वहां पहुंचने का मार्ग केवल मनमाड से है और स्टेशन के लिए कोपरगांव पर उतरना पड़ता है, जहां से एक मार्ग शिरडी भी जाता है। मैं मालेगांव पहुंच गया और वहां अपने काम में व्यस्त होकर, असली काम (शिरडी जाना) को भूल गया। मुझे फिर से बाबा ने संकेत दिया। मैं चिमटे द्वारा किसी महिला का ऑपरेशन (गर्भावस्था व जनने से संबंधित) कर रहा था। अचानक महिला के शरीर में से शल्य चिकित्सा करते हुए कुछ तरल पदार्थ मेरी बाईं आंख में गिर पड़ा। उस समय मुझे इसका आभास नहीं हुआ। मेरी आंख सूज गई और मुझे बहुत तकलीफ होने लगी। उस समय मैं वहां पर अकेला था। मैंने उनसे (बाबा से) सच्चे दिल से प्रार्थना की। (इससे पहले शायद मैंने कभी उन्हें ऐसे शुद्ध भाव से प्रार्थना नहीं की थी) उन्होंने बिना मुझे झिड़के, मेरी प्रार्थना सुन ली। तब से मुझे दृढ़ विश्वास हो गया है कि श्री गुरू अपने भक्तों को दु:खी होते कभी नहीं देख सकते चाहे भक्त कितना भी चंडाल क्यों न हो। वे तो केवल अहंकार रहित शुद्ध भक्ति ही चाहते हैं। नासिक के सिविल सर्जन के अनुसार मेरे आंख की रोशनी चले जाने के पक्के आसार थे लेकिन साई बाबा का धन्यवाद, मेरी आंख एक सप्ताह में बिल्कुल ठीक हो गई। मेरी पत्नी भी वहां आ गई, तब हम दोनों ने प्रण किया कि हम साई बाबा के दर्शन किए बिना मुंबई वापिस नहीं जाऐंगे, क्योंकि वापिस जाते समय हमें कोई परेशानी नहीं होगी। महीने के अंत में, मुझे वापिस मुंबई जाने के लिए कहा गया और अपना प्रण पूरा करने के लिए हम मनमाड से ढांढ जाने के लिए रेलगाड़ी पकड़ने के लिए प्रात:काल मनमाड पहुंच गए। प्लेटफार्म पर घूमने हुए मेरी मुलाकात देशास्थ बुकिंग क्लर्क से हो गई और हम वार्तालाप करने लगे। मैंने उसे मनमाड आने का अपना उद्देश्य बताया। उसने बाबा के रहन-सहन, व्यवहार व चरित्र के विषय में निन्दापूर्ण वाक्य कहे। हमने शिरडी जाने का विचार त्याग दिया और मुंबई को जाने वाली अगली गाड़ी पकड़कर वहां से ऐसे भागे जैसे कोई सांप को देखकर भागता है। इस घटना को याद करके आज भी मैं पश्चाताप करता हूं। एक माह मुंबई ठहरने के बाद मेरी (भाभी) भौजाई ने हमें शिरडी जाने के लिए राज़ी कर ही लिया हालांकि इस बीच कुछ रूकावटें मार्ग में आई। इस बार हमने रूकावटों की परवाह नहीं की। मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूं कि हमारा इरादा दृढ़ रहा और हमने दर्शन किए। एक माह पूर्व रेलवे प्लेटफार्म पर हुई घटना का विवरण साई महाराज ने दिया और मैं आपको क्या बताऊँ, उसे सुनकर हमें अपने पर शर्म महसूस हुई। उस धोखेबाज़ से हमने बात ही क्यों की, यह सोचकर हमारी आंखों से आंसू बहने लगे।

मैं चार दिन शिरडी रूका। जिस दिन मैं वापिस जाने के लिए आज्ञा मांगने गया तब बाबा ने आश्वासन देते हुए कहा कि मुझे ज्ञानेश्वरी का पाठ करना चाहिए और मेरी मेज़ पर मुझे 'बीजापुर के तबादले और तरक्की के' आर्डर पड़े हुए मिलेंगे। मैंने बाबा को प्रणाम किया और वापिस आकर देखा तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। वही आर्डर मुझे मेरे मेज़ पर पड़े हुए मिले। बाबा की कृपा से मैं पूरी लगन व निष्ठा से प्रति वर्ष ज्ञानेश्वरी का सप्ताह संपूर्ण कर रहा हूं। मुझे मराठी भाषा का ज्ञान नहीं है। मैं मद्रास प्रेसिंडेन्सी (सूबा के दक्षिण) कन्नड़ ज़िले का रहने वाला हूं। मैट्रिक (दसवीं कक्षा) में मैंने कन्नड़ व फ्रेन्च भाषा का अध्ययन किया था। अब भी जब मैं गीता का पाठ करता हूं, तो यह उन्हीं की कृपा से संभव हो पाता है। बीजापुर से मैं रणभूमि (युद्धक्षेत्र) में चला गया। युद्ध समाप्त होने पर मैं गडग आ गया।

ऊपर बयान की गई घटना से मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि श्री गुरू जी सदैव हमारा ध्यान रखते हैं, लेकिन हम अज्ञानी उन्हें पहचान नहीं पाते। कई मुश्किलें आई, आती हैं और आती रहेंगी, लेकिन मैं जानता हूं और मुझे पूर्ण विश्वास है कि बाबा सदा मेरी रक्षा करेंगे।

-डॉ. रबिन्द्र नाथ ककरिया

आभार: साई भक्तानुभव,

श्री साई समर्पण सेवा समिति सोनीपत द्वारा शिरडी यात्रा

शिरडी: दिनांक 16 जून से 22 जून 2024 तक श्री साई समर्पण सेवा समिति सोनीपत द्वारा वार्षिक शिरडी यात्रा का आयोजन किया गया। दिनांक 16 जून को पंजाब, हरियाणा और दिल्ली के साई भक्तों ने सचखंड एक्सप्रेस से शिरडी के लिए प्रस्थान किया। जिसमें परवीन मलिक जी शिल्पी मदान जी कुलदीप जी एवं बहुत से भक्त 17 जून को शिरडी पहुंचे। 18 जून को सभी भक्तों ने भाई जी सुमित पौंदा की साई अमृत कथा का श्रवण साई शताब्दी पंडाल में किया और रात को शिल्पी मदान जी प्रवीन मलिक जी ने द्वारकामाई के बाहर भजनों की हाज़री लगाई जिसे शिरडी लाइव चैनल पर दिखाया गया। 19 जून को सुबह कृष्ण जी द्वारा श्री साई सच्चरित्र पर आधारित साई कथा का आयोजन किया गया जिसका भक्तों ने आनंद लिया। शाम को 5 बजे से 7 बजे तक काशी अन्नपूर्ण सतरम शिरडी में विश्वविख्यात भजन गायक प्रवीन मलिक जी व शिल्पी मदान जी ने भजनों का गुणगान किया और भक्तों की अनेकों फरमाईशें पूरी करते हुए सबको साई रंग में रंग दिया। कथावाचक कृष्णा जी ने भी प्रवीन मलिक और शिल्पी मदान को आशीर्वाद दिया। सुप्रसिद्ध गायक प्रवीन महामुनि जी ने भी एक हाज़री बाबा के चरणों में लगाई। उसके बाद कृष्णा जी ने साई के 11 वचनों को कथा के माध्यम से भक्तों को समझाया और ये कथा का क्रम 20 और 21 जून को भी जारी रहा। 22 जून को शिरडी के साइली सागर जी ने भक्तों को बहुत ही सुंदर-सुंदर भजन सुनाकर मंत्रमुग्ध कर दिया। 23 तारीख को ट्रेन में प्रवीन मलिक जी और अनेकों भक्तों ने भजन गाकर भक्तों को झूमने पर मजबूर कर दिया। साई समर्पण समिति के राहुल ग्रोवर जी और उनकी टीम ने इस यात्रा को सफल बनाने में दिन रात की मेहनत की और भोजन रूपी प्रसाद और साथ गए भक्तजनों की सेवा में दिन रात लगे रहे। सभी भक्तों ने राहुल ग्रोवर जी का इस आनंदमयी यात्रा के लिए आभार प्रकट किया।

-जी. आर. नंदा

शिरडी में पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण

शिरडी: दिनांक 05 जून 2024 को प्रात: 10 बजे पर्यावरण दिवस के अवसर पर शिरडी साई बाबा संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिलकर जी ने साईनगर-शिरडी क्षेत्र में श्री साईबाबा संस्थान के स्वामित्व वाले समूह नं. 125/6, 125/7 एवं 125/8 में अपने हाथों से वृक्षारोपण किया। सर्वप्रथम पूजा अर्चना की गई। तत्पश्चात् तरह-तरह के फूलों के, गुलमोहर, नीलमोहर, पेल्टो फार्म, कंचन, बहुआ, बकुल और निंब के पौधे लगाए गए। इस अवसर पर उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी तुकाराम हुलवले, प्रशासनिक अधिकारी श्रीमती प्रज्ञा महाडुले, विश्वनाथ बजाज, कृषि अधिकारी अनिल भणगे व विभागप्रमुख व कर्मचारी उपस्थित थे।

कोलकात्ता में एक शाम साई के नाम

कोलकात्ता: दिनांक 2 जून 2024 को बाबा के परम भक्त श्री जग्गी दरयानी, श्रीमती शीला दरयानी, अनीष दरयानी व सागर दरयानी द्वारा अरबन क्लब, बैंक्वट हॉल, आनन्दपुर, कोलकात्ता में 'एक शाम साई के नाम' कार्यक्रम में भजन संध्या का आयोजन किया गया। पूजा अर्चना के बाद सांय 5 बजे भजनों का गुणगान आरंभ हुआ। गायक राजेश पांडे ने अपनी मधुर आवाज़ में साई महिमा के अनेक भजन सुनाकर पूरे माहौल को भक्तिमय बना दिया। श्री जग्गी दरयानी जी ने बताया कि साई मंदिर आनन्दपुर ट्रस्ट के सदस्य अरबन कॉम्पलैक्स, कोलकत्ता में जल्द ही बाबा के मंदिर का निर्माण करवाने जा रहे हैं। इसी उपलक्ष्य में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बहुत से भक्तों ने इस कार्यक्रम में शामिल होकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। अंत में आरती की गई और सभी भक्तों ने भण्डारा प्रसाद ग्रहण कर अपने-अपने घरों को प्रस्थान किया।

कर्मों का फल तो भोगना ही पड़ता है

कभी किसी को ऐसा कुछ नहीं मिलता जो उसने कर्मों के विधान के अर्न्तगत कमाया न हो। अगर किसी कर्म का कारण बना है तो उसका फल भी मिलेगा ही। इसमें कोई संदेह नहीं। कारण और परिणाम तो एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, एक के बिना दूसरा पाया नहीं जा सकता। जो कुछ हमें मिलता है- सुख अथवा दु:ख, वह हमारी कमाई है। इसीलिए कर्मों का भुगतान यह जानते हुए धैर्य, संयम और साहस से करना चाहिए। चाहे वे कितने ही दु:खदायी क्यों न हों। अगर किसी को कार्मिक पीड़ा या कष्ट मिलता है तो वह किसी देवी-देवता के द्वारा अभिशाप या कोप नहीं बल्कि उसके अपने ही कर्मों का प्रभाव होता है। यह एक सर्वजागतिक नियम है और कभी भी चुकता नहीं। राजा दशरथ के हाथों श्रवण कुमार का प्राणांत हो गया और उसके माता-पिता ने पुत्र-वियोग में प्राण त्याग दिए, फिर वही पुत्र-वियोग राजा दशरथ का काल बनकर आया। राजा दशरथ की मृत्यु श्रवण के माता-पिता के शाप से नहीं, कर्म के विधान के अन्तर्गत हुई। हर किसी के साथ पूरा न्याय होता है, यही विधान है। जिसने हत्या की है उसकी किसी जन्म में हत्या होगी, लेकिन ऐसे कार्मिक फल से वह बच सकता है अगर अगले जन्म में वह किसी की प्राणरक्षा करते हुए मर जाए। गंभीर बातों का गंभीर परिणाम होता है और सामान्य रूप से घटने वाले छोटे-छोटे कारणों से दिन-प्रतिदिन में होने वाली सामान्य उलझनों और परेशानियों का भोग बनता है। अगर कोई किसी के साथ भला या बुरा कर्म का स्थायी प्रभाव छोड़े तो निश्चित ही है कि उस भले या बुरे कर्मों के अनुबंध के अन्तर्गत वे फिर से मिलेंगे और उस ऋण को पूरा करेंगे। आत्माओं के इस परस्पर अनुबंध में एक नियम कार्य करता है, घृणा-घृणा को लेकर आता है और प्रेम-प्रेम को। कभी कोई किसी से पहली बार मिलते ही द्वेष भावना का अनुभव करता है और इसी प्रकार कभी किसी से पहली बार मिलते ही प्रेमभाव उमड़ता है। हो सकता है कि इस प्रकार के व्यवहार का कोई वर्तमान कारण न हो। ये अनुबंध तब तक चलते हैं जब तक इन्हें पूरा करके इनसे मुक्त न हो जाऐं।

इन सबसे अलग कुछ ऐसे भी कर्म होते हैं जिन्हें व्यक्तिगत रूप से चुकाया भी नहीं जा सकता। जैसे कि किसी सद्गुरू की अहेतुक कृपा, जिसके बदले उन्हें कुछ भी नहीं चुकाया जा सकता।

कर्मों का हिसाब चुकाना निराला है। ये समझना बहुत कठिन है कि किस बुरे कर्म का परिणाम किस रूप में भुगतना होगा। जिस तरह एक हज़ार रूपयों का ऋण हज़ार के एक नोट, या पांच सौ के दो नोटों या सौ के दस नोटों से भी किया जा सकता है। उसी तरह किसी कुकर्म का परिणाम किसी गंभीर दुर्घटना, संकट या दु:ख के रूप में एक साथ या कई भागों में भी मिल सकता है।

लेकिन मानव के लिए शायद सबसे दुखदाई और गंभीर परिणाम तब है, यदि उसके आत्मिक विकास के अवसर से उसे बेदखल कर दिया जाए और शायद सबसे बड़ा इनाम यह है कि उसे आत्मिक विकास का कोई अनोखा अवसर मिल जाए। कर्मों की गति की कितनी ही संभावनाऐं हैं, जिन्हें समझ पाना दुष्कर है।

जन्म-जन्मांतर तक चलने वाली यह कर्मों की गति है। इसमें न जाने कितने ही अनुबंध बनते हैं, कितने ही लोगों से संपर्क होता है, कितनी ही तरह से लेना-देना होता है। इसी लेन-देन के लिए जीव बार-बार इस संसार में जन्म लेता है। हालांकि इस तरह वह अपने पूर्वजन्मों के अनुबंधों को पूरा करता है लेकिन साथ ही साथ इस जीवन में नए कर्म और संस्कार भी पैदा करता है। परिणामस्वरूप, कर्मों के इस जाल में वह फंस कर रह जाता है।

लेन-देन के ताने-बाने से बने इस जंजाल से निकलना असंभव है, अगर किसी सद्गुरू की कृपा से उसमें से निकलने का कोई रास्ता न मिले। जिसे इस जाल में फंसने की छटपटाहट है वही मुक्ति के लिए तड़पता है, वही मुमुक्षु है। मुमुक्षु की पुकार को सद्गुरू तुरंत सुनते हैं और अपनी ओर खींच कर लाते हैं। सद्गुरू न केवल उसे निस्वार्थ कर्म की ओर अग्रसर करते हैं बल्कि उसे कार्मिक बंधनों से छुड़ाने के लिए प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं।

-ए.के. गौतम

साई के चरण कमलों में - डा. मोतीलाल गुप्ता की जीवनी

-*नीति शेखर*

प्राणी भिन्न प्रकार के हो सकते हैं, कुछ बोल पाते हैं, कुछ मूक होते हैं, परन्तु सभी की भूख एक जैसी होती है। इस बात को जानिये कि जो भूखों को भोजन कराता है वो असल में मेरी सेवा करता है, वह भोजन मुझे प्राप्त होता है। इसे सत्य समझें।

-साई बाबा

'प्रत्येक मानव अपने सामर्थ्य के अनुसार सेवा करता है', गुरूजी ने कहा। जिसके पास कोई साधन नहीं है, वह एक गड्डा खोद कर, उसमें एक टूटे मटके में पक्षियों के पीने के लिये पानी रख सकता है। यह भी एक प्रकार की सेवा है। अपने हृदय में सेवा को धारण करो, भगवान साई तुम्हारी सेवा पारितोषिक करेंगे।

हम डॉ. मोतीलाल गुप्ता के निवास, ग्रेटर कैलाश-2 से साई धाम, फरीदाबाद के लिये निकल पड़े। महरौली-बदरपुर पथ के मोड़ से कुछ फरलांग की दूरी पर गाय तथा बंदर सड़क के पास हमेशा दिख जाते हैं। ड्राइवर ने गाड़ी को किनारे खड़ा किया। गाड़ी में साई सच्चरित्र की सी.डी. बज रही थी। हमें उत्सुकता हुई कि गाड़ी क्यों रोक दी गयी है। ऐसा लग रहा था कि यह नित्य का कार्यक्रम है। भोला भैया ने गाड़ी के पीछे से एक डोलची निकाली, जो भीगे हुए चने से भरी हुई थी और चनों को ज़मीन पर बिखेर दिया। गाड़ी देखते ही सारे पशु-पक्षी वहां इकठ्ठा होने लगे। ऐसा लगा जैसे उन्हें ज्ञात था कि यह उनके लिये प्रोटीन-युक्त भोजन के सेवन का समय है।

डॉ. मोतीलाल गुप्ता का अभिप्राय यह है कि कोई भी पशु, पक्षी या मानव भूखा न रहे तथा उनकी भूख मिटाने का सदा प्रयास किया जाए साई के चरण कमलों में पैसे या वस्तुओं का दान जाँच-परख कर करना चाहिए परन्तु अन्नदान बिना भेदभाव के करना उचित है। प्रकृति की प्रेम की परिभाषा माता तथा उसके संतान के समतुल्य है। माता को उसके शिशु से उसका पालन-पोषण करने की दक्षता ही जोड़े रखती है। एक माता अपने शिशु को स्तनपान कराती है, एक शेरनी अपने बच्चे के लिये शिकार करती है, एक माता पक्षी अपने चूज़ों के लिये दूर-दूर से दाना इकट्ठा करके घोंसले में ले जाती है, इन सभी माताओं का उद्देश्य अपने बच्चों की भूख मिटाना है जिससे उन्हें पोषण मिलता है, जीवन-शक्ति मिलती है और वे सुरक्षित महसूस करते हैं। यह उपक्रम माता और उसके बच्चे के बीच एक मज़बूत कड़ी का आधार बनता है। अपितु एक परोपकारी व्यक्ति का प्रेम माता के प्रेम से भी अधिक विशाल है। एक माता का प्रेम तो उसकी अपनी संतान तक सीमित है, परन्तु डॉ. गुप्ता जी का प्रेम और लगन सबके लिये समान रूप से है।

साई बाबा की शिक्षा को चरितार्थ करते हुए, साई धाम प्रतिदिन कुष्ठ रोगियों को चावल-दाल का भोजन कराता है। शिरडी साई बाबा स्कूल के करीब 2000 बच्चों को, जो गरीब परिवार से हैं, उन्हें भी स्वास्थ्यवर्धक भोजन कराया जाता है। शिरडी साई बाबा टैम्पल सोसायाटी के सभी कर्मचारियों का भोजन नि:शुल्क है। कोई भी आगंतुक साई धाम से दोपहर की खिचड़ी का भोग या खीर खाए बगैर नहीं जाता। गुरू जी के जितने अतिथि आते हैं, उन्हें उनके साथ भोजन करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। गुरू जी सभी अतिथियों का विशेष ध्यान रखते हैं। छोटी बातों का ध्यान जैसे अतिथि ने खीर खाई या नहीं, चपाती में घी लगा है या नहीं, इन सब बातों का ध्यान गुरू जी रखते हैं और अतिथि भी संतुष्ट होकर भोजन (प्रसाद) ग्रहण करते हैं। गुरू जी के सानिध्य में किया हुआ भोजन सबको अपार आनंद देता है।

डॉ. मोतीलाल गुप्ता का जीवन हम सबको प्रेरणा देता है। वह किसी भी तरह का प्रवचन या नैतिक शिक्षा नहीं देते हैं, अपितु अपने सत्कर्म से प्रेरणा देते हैं। मेरे विचार से डॉ. मोतीलाल गु.प्ता का जीवन परिचय पढ़ने से हमें ऐसी प्रेरणा मिलेगी जो हमारे जीवन के लिये बहुमूल्य और आनंददायक होगी। इसलिये मैंने निश्चय किया कि मुझे गुरु जी की जीवन गाथा लिपिबद्ध करना है ताकि वह जन-मानस के लिए एक आदर्श बन सकें। मुझे आशा है कि साई धाम में गुरू जी के सानिध्य का जो आनंद मुझे प्राप्त हुआ वह मेरे पाठक भी अनुभव कर सकेंगे। मैं पाठकगण से उन परिस्थितियों का भी उल्लेख करना चाहूँगी जिसके कारण मुझे इस महान परोपकारी व्यक्तित्व के दिव्य जीवन के बारे में लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

साई धाम का प्रथम दौरा मैंने सन् 2011 में किया। गुरू जी ने हमारे परिवार के सभी सदस्यों को साई सच्चरित्र की प्रतियाँ भेंट कीं। साई सच्चरित्र में साई बाबा की जीवन-लीला है, जिसे श्री गोविंद रघुनाथ दाभोलकर, जो हेमाडपंत के नाम से भी जाने जाते हैं, ने लिखा है। मैं इस पुस्तक का नित्य ही पठन करती रही हूँ। बाबा के उपदेश और जीवन दर्शन को आदर्श मानकर गुरू जी अपना कर्त्तव्य निर्वहन करते हैं। साई सच्चरित्र के पठन व परायण से सर्वोच्च ज्ञान की प्राप्ति सरलता से हो जाती है। सच्चरित्र भेंट कर गुरू जी ने मेरे जीवन को एक नई दिशा दे दी।

अगले वर्ष 2012 में मुझे कैट की परीक्षा, जिसके द्वारा प्रबंधन संस्थानों में दाखिला मिलता है, में उपस्थित होना था। 'साई बाबा ने तुम्हें आई.आई.एम. में दाखिले का आशीर्वाद दिया है', गुरू जी ने यह निर्णय मेरे फार्म भरने से पहले ही दे दिया था। बाबा की दया से कैट परीक्षा में मैंने 99.28 अंक हासिल किये। मौखिक परीक्षा के परिणाम अप्रैल-मई 2013 में घोषित हुए परन्तु किसी भी आई.आई.एम. की सूची में मेरा नाम नहीं था। आई.आई.एम. कलकत्ता की मौखिक परीक्षा में मुझसे 'ऑपरेशन रिसर्च' के विषय में पूछा गया। बिट्स (BITS) पिलानी में स्नातक का एक विषय 'आपरेशन रिसर्च' भी था जिसमें मुझे 'डी' ग्रेड मिला था। इसलिये मैंने अनुमान लगा लिया था कि मौखिक परीक्षा का परिणाम क्या होगा। आई.आई.एम. लखनऊ की मौखिक परीक्षा में मुझसे एन.जी.ओ. के बारे में पूछा गया जिसमें मेरी रूचि का मैंने उल्लेख किया था। कुछ प्रबुद्ध लोगों ने मुझे समझाया कि एन.जी.ओ. की जगह मुझे 'सोशल इन्टरप्राईज़' का सम्बोधन देना था। मैं 'एन.जी.ओ.' शब्द के प्रति दुराग्रह का कारण नहीं समझ पाई क्योंकि मेरे गुरु जी, मेरे आदर्श, एक 'एन.जी.ओ.' के ही तो संस्थापक हैं। अब आई.आई.एम. कोज़िकोड की बारी थी। संयोग से मैं मौखिक परीक्षा में बैठने वाली सबसे अंतिम परीक्षार्थी थी क्योंकि इसके बाद भोजन का अंतराल था। मेरी बारी आने तक प्रोफेसर करीब दसों परीक्षार्थियों से व्यवसाय तथा 'करंट एफेयर' के बारे में पूछ चुके थे। इसलिये अब वे कुछ अन्य विषय पर चर्चा करने का विचार कर रहे थे। उन्होंने मेरे ग्रेजुएशन की विषय सूची को देख कर कहा, भगवत् गीता तुम्हारा इलेक्टीव विषय रहा है, हमें उसके बारे में बताओ कि तुमने क्या सीखा? मैंने उत्तर दे दिया। आगे मैंने आई.आई.एम. कलकत्ता या आई.आई.एम. कोज़िकोड के परीक्षा फल की जानकरी नहीं ली। मेरे माता-पिता ने चौथे लिस्ट तक मेरे नाम को ढूंढा पर निराशा ही हाथ लगी। आई.आई.एम. लखनऊ ने तो पहले ही एन.जी.ओ. की मेरी राय को नकार दिया था।

मैंने एक द्वितीय श्रेणी के प्रबंधन संस्थान में दाखिला लेने का निश्चय किया और गुरू जी से आशीर्वाद लेने पहुँची। 'नहीं-नहीं तुम्हें दाखिला मिल जायेगा। तुम्हारी सच्ची मेहनत का फल अवश्य मिलेगा।' गुरू जी ने दृढ़ता से कहा। मैंने उनके कथन पर विश्वास तो किया परन्तु साथ में यह भी लगा कि कोई चमत्कार ही मुझे आई.आई.एम. में दाखिला दिला सकता है। अन्तत: वह चमत्कार हुआ।

एक सप्ताह बाद मेरे पिता जी को एक फोन आया कि मेरा चयन आई.आई.एम. कोज़ीकोड की अंतिम सूची में हो गया है। छात्रों को फोन से इसलिये सूचित किया जा रहा था क्योंकि वे जुलाई तक परीक्षा फल देखना छोड़ देते हैं तथा अन्य किसी संस्थान में दाखिला ले लेते हैं?

मैंने अपना सामान बाँधा और कोज़िकोड पहुँच गयी। उस रात मैंने एक स्वप्न देखा कि साई बाबा मेरे सामने खड़े हैं और आशीर्वाद दे रहे हैं। तुम्हारी मेहनत का फल तुम्हें मिला है। बाबा अपने सफेद कफनी में नंगे पाँव खड़े थे। मैंने बाबा के चरणों में दंडवत किया परन्तु मुझे अनुभव हुआ कि ये चरण तो गुरू जी के हैं, बाबा के नहीं। गुरू जी के पैरों में उनके काले रंग के जूते थे तथा उन्होंने अपना सफारी सूट पहन रखा था। वे मुझे देख कर मुस्कुरा रहे थे। मैं नींद से जग गई। सुबह के छह बज रहे थे। स्वप्न इतना यथार्थ था कि विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मैंने स्वप्न देखा है। मैंने शीघ्र ही गुरू जी से फोन पर संपर्क किया। गुरूजी ने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ हूँ? मैंने गुरूजी को अश्रुपूरित नेत्रों से प्रार्थना अर्पित की।

इस घटना के पश्चात् मुझे दृढ़ विश्वास हो गया कि साई बाबा और गुरू जी में एक तारतम्यता है। बाबा अपने प्रिय शिष्य को बहुत प्रेम करते हैं क्योंकि वे मानवता की सेवा बिना किसी भेद-भाव के करते हैं। वे धर्म, जाति या लिंग में भेदभाव नहीं करते हैं। यह अलौकिक संबंध हमारी समझ से परे है क्योंकि हम किसी भी घटना को तर्क के दायरे से समझना चाहते हैं। परन्तु यह सत्य है कि जहाँ विज्ञान की सीमा का अंत होता है, वहीं से अध्यात्म प्रारम्भ होता है। मैंने अपना अहंकार साई चरणों में समर्पित कर दिया और उनसे निवेदन किया कि मेरे शरीर, मन तथा आत्मा को मार्गदर्शन देने की कृपा करें। साई सच्चरित्र पढ़ने से मेरे कमज़ोर मन को बल मिलता है। मुझे ज्ञान की प्राप्ति होती है जिससे मैं अपने कर्मों का निर्वहन कर पाती हूँ। स्वयं साई बाबा ने अपने प्रिय शिष्य और मेरे गुरू डॉ. मोतीलाल गुप्ता का जीवन परिचय लिखने का यह पुनीत कार्य मुझे सौंपा है।

इस जीवन परिचय के प्रारंम्भ होने के नौ महीने पहले मैंने 'ज्ञानेश्वरी' का पठन किया था। इस पुस्तक का उल्लेख साई सच्चरित्र में किया गया है। 12वीं शताब्दी के महाराष्ट्र के महान संत ज्ञानेश्वर द्वारा भगवत् गीता का टीका सहित अनुवाद किया गया था। मैंने इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद मंगवाया परन्तु यह पुस्तक छह महीने तक मेरे दराज़ में पड़ी रही। कुछ ऐसा संयोग बना कि चाह कर भी मैं इस पुस्तक को नहीं पढ़ सकी। मेरे साथ कुछ शारीरिक दुर्घटना घटी तथा मेरे पेशेवर जीवन से जुड़ी कुछ विपरीत परिस्थितियों ने मुझे अवसाद-ग्रस्त कर दिया। साई बाबा के प्रति मेरी प्रार्थना रंग लायी और मैंने ज्ञानेश्वरी का पठन शुरू कर दिया। जब से मैंने ज्ञानेश्वरी का प्रथम पाठ पढ़ा, तब से मेरे मन को असीम शांति मिली और यह शांति स्थाई हो गई। मेरी समस्याएँ धीरे-धीरे जाती रहीं।

जब मेरे पाठ की प्रथम आवृत्ति पूरी हुई तो मुझे लगा कि मेरे विचार में कुछ विशेष परिवर्तन हो रहा है। ज्ञानेश्वरी का पठन समाप्त होने के दूसरे ही दिन मुझे गुरू जी से मुलाकात करने जाना था। साई धाम जाने के कुछ दिनों पूर्व से मुझे मसूड़ों के सूजन की वजह से दर्द का आभास हो रहा था। मुझे और मेरे पति को अगले दिन आई.आई.टी. कानपुर लौट जाना था। जब मैं गुरू जी के समक्ष उपस्थित हुई तो उन्होंने ढांढस बंधाया, 'चिन्ता क्यों करती हो, यह दवा मैंने दाँत-दर्द के लिये जामुन के पत्तों से बनाई है, इसे लगाओ और स्वस्थ हो जाओ।' इस दवा से मुझे बहुत आराम पहुँचा परन्तु सूजन की वजह से कुछ संक्रमण हो गया था इसलिये मुझे दंत-चिकित्सक को दिखलाना अनिवार्य हो गया। गुरू जी मुझे दंत-चिकित्सक दम्पति, डॉ. अश्वनि प्रुथी एवं डॉ. सुजाता चड्ढा प्रुथी के पास ले गए। ये चिकित्सक दंपति साई धाम को नि:शुल्क सेवा प्रदान करते हैं। क्लीनिक जाते समय गुरू जी ने सुझाव दिया कि अगर दांत को उखड़वाना पड़े तो उसे निकलवा लेना चाहिए। मैंने सोचा कि अगर मसूड़ों में सूजन है तो दाँत को निकलवाने की क्या ज़रुरत? अन्तत: डॉ. प्रुथी ने बतलाया कि अकलदाँत के टेढ़े-मेढ़े होने की वजह से संक्रमण हो रहा है इसलिये दाँत निकलवाना ही उचित है। दाँत का उखड़वाना तथा उसका प्राथमिक उपचार अनिवार्य हो गया। डॉक्टर ने मुझ से पूछा- तुम्हारा क्या प्रोग्राम है? तुम कब तक यहाँ हो? गुरू जी ने मेरी तरफ से जवाब दिया, ये मेरे पास रह रही है, जब तक ये बिल्कुल स्वस्थ नहीं हो जाती, कृपया इसका उपचार करें।

इसके बाद के पाँच दिन बिल्कुल चमत्कारी थे जिसे हम जीवन-पर्यन्त याद रखेंगे। वो हमारे लिये बहुत बहुमूल्य दिन थे। हमें अनुमान नहीं था कि हम गुरू जी के यहाँ अतिथि बन कर रहेंगे। उनका अतिथि-सत्कार हमारी सोच से परे था। उनके जैसा महान व्यक्ति, जो लाखों लोगों की देख-भाल करता है, उन्होंने मेरी उसी तरह परवाह की जिस तरह एक चिड़िया अपने चूज़ों की कुशलता की परवाह करती है। आने वाले दिनों में गुरू जी मुझे स्वयं क्लिनिक ले कर जाते तथा ले आते और हमें स्वादिष्ट भोजन कराते। उनका प्रेम विशुद्ध तथा नि:स्वार्थ है।

दूसरे दिन जब मैं बाबा के दर्शन करने लोधी रोड स्थित साई मन्दिर जा रही थी तो मेरे मन में एक विचार आया कि मैं अपने आराध्य, डॉ. मोतीलाल गुप्ता जी का जीवन-परिचय लिखूँ। इस जगत को भी जानकारी होनी चाहिए कि यह महामानव कैसे मानवता की सेवा, बिना किसी फल की आकांक्षा के करते आ रहे हैं। इनकी जीवनी लोक-समाज के लिये प्रेरणा का स्रोत हो सकती है। यह महान संत जो साई बाबा से एकाकार है, उनके लिये एक सम्मान सूचक अभिव्यक्ति होगी। यह मेरा सौभाग्य है कि विधाता ने मुझे इस आध्यात्मिक प्रयोजन के लिये चुना है। ये जीवनी उन सभी लोगों के लिये है जो सच्चे पथ पर चलकर मानवता की सेवा में ही खुशी ढूँढ़ते हैं। वर्तमान समय की व्यस्त दिनचर्या में ऐसा आदर्श जीवन दुर्लभ है। मैंने विनम्रता से गुरू जी से उनके जीवन परिचय लिखने की सहमति मांगी। उन्होंने मुस्कुरा कर सहमति आशीर्वाद सहित दे दी। मेरी सेवा स्वीकार हुई। बाबा तुम्हारी मदद करेंगे- उन्होंने इस कथन से मेरी सेवा को पवित्र बना दिया। गुरू जी परोपकारी कार्यों में इस तरह मग्न हैं जैसे संत ज्ञानेश्वर भगवत् गीता के विवेचन में लीन थे। गुरू जी अपने श्रेष्ठ कर्म का तनिक भी मान नहीं देते, वैसे ही जैसे एक नवजात शिशु को उसके हाथ-पैर चलाने का अहसास नहीं होता। गुरू जी का तो यह सहज सरल स्वभाव है कि वे ज़रूरतमंदों की सदा सहायता करते हैं। उन्हें अपने मान-सम्मान अथवा अपनी आलोचना से कोई फर्क नहीं पड़ता है। साई धाम की समस्त गतिविधियों को वे बहुत धैर्य से निभाते हैं। यह सब करते हुए उनमें सदा निष्काम भाव परिलक्षित होता है। गुरू जी का व्यवहार एक आम आदमी सा प्रतीत होता है। एक ओर वे 100 किलो तरबूजों का मोल-भाव करते हैं तो दूसरे ही क्षण वे तीन अनाथ बच्चों के संरक्षक बन जाते हैं और उन्हें एक शिक्षक की देखभाल में सौंप देते हैं।

आम आदमी कोई भी परोपकार अपनी संतुष्टि के लिये करता है। 150 किलो की गाय को हम एक छोटा रोटी का टुकड़ा खिला देते हैं, किसी भिक्षुक को एक रुपया दे देते हैं, दान में हम फटे-पुराने कपड़े देते हैं, बासी या जो खाने लायक पदार्थ नहीं है उसे हम अपने कामगारों को देकर हम गर्व महसूस करते हैं। हमें लगता है कि हमने कितना बड़ा परोपकार किया है। इस तरह का दान देने वाले को संतुष्टि दे सकता है परन्तु लेने वाले की दशा हम समझने की कोशिश नहीं करते। किंचित एक गाय को मात्र 40 कैलोरी की एक रोटी देकर हम उस बड़े पशु को उपयुक्त पोषण नहीं दे पाते हैं। उस गाय को एक रोटी खिला कर उसकी भूख हम और अधिक जगा देते हैं। जो एक रुपया हमने भिक्षुक को दिया, उससे वह गुटका के सिवा कुछ नहीं खरीद पाता है। अगर कपड़े हमारे लिये कटे-पुराने हैं तो लेने वाले के लिये भी किसी काम के नहीं हैं। अगर हमने अपने कामगारों को बासी भोजन बाँटा तो हमने उन्हें और अधिक मुसीबत में डाल दिया। अगर उस भोजन को खाने से उसका पेट खराब हुआ तो उसका दवा का अतिरिक्त खर्च ही बढ़ेगा।

दूसरी तरफ, डॉ. मोतीलाल गुप्ता का परोपकारी कार्य देने और लेने वाले, दोनों को संतोष प्रदान करता है। गुरू जी बड़ी दृढ़ता से शिरडी साई बाबा स्कूल के छात्रों को आवश्यक सुविधाएँ मुहैया कराते हैं ताकि वे सभी सफल पेशेवर बन पाएं। इस प्रकार हम एक-एक करके गरीब परिवारों को निर्धनता से मुक्ति दिला सकेंगे, ये गुरू जी का कथन है। यहाँ का समग्र वैज्ञानिक शिक्षा तंत्र जिसमें नैतिक शिक्षा भी निहित है, इन गरीब बच्चों को प्रोत्साहन देता है। ये बच्चे, जो गरीब-वंचित वर्ग से आते हैं, यहाँ आकर बहुत तन्मयता से पढ़ाई करते हैं तथा परोपकार भी करना सीखते हैं। यह सत्य है कि हमें परोपकार की शिक्षा सर्वप्रथम अपने घर से मिलती है। गुरु जी कहते हैं- मैं चाहता हूँ कि कोई छात्र आई.ए.एस. अफसर बने, कोई इंजीनियर तो कोई डॉक्टर बने। यह हमारे समाज के विकास के लिये एक महत्त्वपूर्ण कदम होगा। इन्शा-अल्लाह ऐसा अवश्य होगा।

-क्रमश:

-साई की चरण धूलि,
गुरू जी की सेवा में, ***नीति शेखर***

शेष अगले अंक में

शिरडी डायरी

श्रीगणेश श्रीकृष्ण खापर्डे ने शिरडी में अपनी दिनचर्या डायरी में लिखी। प्रस्तुत हैं उसी डायरी से कुछ अंश:

13 जनवरी, 1912: मैं सुबह जल्दी उठ गया और काकड़ आरती में सम्मिलित हुआ। आज साई महाराज एक शब्द भी नहीं बोले और न ही वैसे नज़रें डालीं जैसे वे और दिनों करते हैं। खंडवा के तहसीलदार यहां आये हैं हमने उन्हें देखा जब हम रंगनाथ की योग वशिष्ठ पढ़ रहे थे। हमने साई महाराज के बाहर जाते हुए और फिर से उनके लौटने के बाद दर्शन किए। कल की गाने वाली औरतें वहां थीं। उन्होंने थोड़ा गाया, इनाम में मिठाई पाई और चली गई। दोपहर की आरती बहुत आनंद से हुई। मेघा अभी भी ठीक नहीं हैं। बापाजी, माधवराव देशपांडे के भाई अपनी पत्नी सहित नाश्ते पर निमंत्रित थे। खंडवा के तहसीलदार सुसंस्कृत जान पड़ते हैं, उन्होंने योग वशिष्ठ पढ़ी हुई है। वे कहते हैं कि उनकी धार्मिक प्रवृत्तियों के कारण प्रपंची लोगों ने उन्हें बहुत दुख पहुंचाया है। दोपहर को थोड़े से आराम के बाद दीक्षित ने भावार्थ रामायण का पाठ किया। अध्याय (ग्यारहवां, बालखंड) योग वशिष्ठ का ही सार है और बहुत रोचक है। हमने साई महाराज के फिर से दर्शन किए जब वे सैर पर निकले। उनका भाव बदला हुआ था और अगर कोई ऐसा सोचे कि वे क्रोधित थे, दरअसल वे नहीं थे। रात को रोज़ की ही तरह भजन और रामायण हुए।

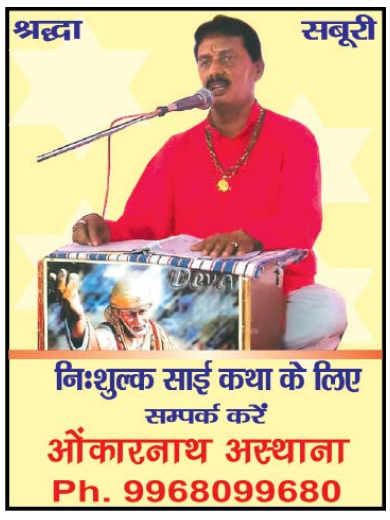

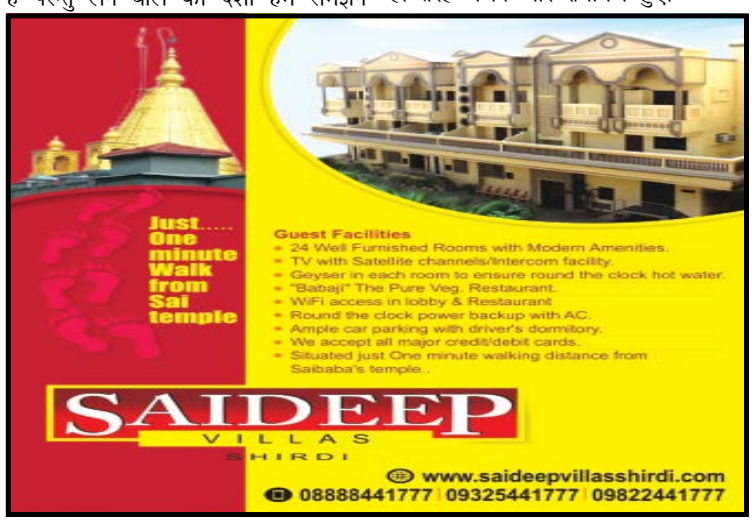

History of Shirdi Sai Sansthan Melbourne

The "initiation" of the temple vision goes back to the year 2004 – Date being 31st December 2004. It was while bowing at Baba's feet in front of the form of Sainath, (His statue and His samadhi) in Shirdi – that the first vision appeared before my eyes – "It were as if a voice started whispering in my ears" – A voice that told me to go back to Delhi and have a "Bhajan" for Sai. I looked up at the statue and nodded my head, very spontaneously, not quite sure of what had occurred! With "mixed feelings and thoughts", I left for Delhi thinking that this was just my imagination. I quite forgot my promise to Baba "of having a Bhajan!" As I began my daily routine of going to the Lodhi Road Temple in Delhi, once again, the same voice whispered in my ears, "You have forgotten your promise!" I, immediately raised my head from Baba's padukas and looked up at Baba! With these instructions, I returned home, very determined to have the pooja and bhajan for Baba. A very melodious devotional bhajan was organised, followed by a "langar" for a sizeable number of devotees, who had come for Baba's blessings. Next day once again when I went to the temple for my routine pooja, I was pleasantly surprised to hear the "same voice" whispering in my ears to "go find a statue and get it blessed in Shirdi." Now this left me a bit perplexed. I wasn't sure if my mind was playing games with me or whether this was a "reality". "I decided to approach a very ardent devotee of Baba, Shri Chandra Bhanu Satpathy ji, who had the "gift" of connecting with Baba and getting instructions from Him.

A meeting with Satpathy ji convinced me that the instructions that I was getting were indeed coming from Baba himself and that I would be guided by Baba in "founding" a "Sai Temple" in Melbourne, Australia, where I had my son studying. A city I visited often, but could not find a "Sai Temple" in the main city. I would make frequent trips to Sydney to meet Baba in the temple, housed in a church there, and managed by Mr. Jaikishen Tolani. Having been convinced by Satpathy ji, I decided to find a statue to send to Shirdi with my elder son Gaurav and his wife Pooja, who, at that time were going to Shirdi for Sai's blessings. By this time, I had decided to follow all the instructions that were being given by the "voice." A call from the Lodhi Road temple to have a "look" at some statues that had arrived from Jaipur, led me on to the dealer of the statues. I was shown three statues, one of which was "full of expression", telling me "lets go". I immediately bought that statue and left for my house, to hand over the statue to my son, to take to Shirdi, for the blessing and initiation pooja. Gaurav my son, asked the priest in the Shirdi temple to "apply Chandan" on Baba's forehead and all the limbs of the statue (in order to initiate "pran" life into Baba's form). Having had the pooja done, he then returned to Delhi and handed over the 'murti' back to me. I was to leave for Melbourne, soon after. The Lodhi Road Temple Committee asked me to keep the statue of Baba on the temple altar, beside the big statue of "Sai". This happened on a Thursday. Aarti was performed and soon enough, Baba's statue was covered with flowers, as hundreds of devotees came forward to touch his feet. The official of the temple, gave me a picture of Dwarkamai and with Baba in my lap and the photo in one arm, I left in the plane for Melbourne. Once in Melbourne (to be with my son Dhruv who was pursuing his Masters Degree there) my urge to find an appropriate place (sthan) for Baba, made me contact my own friends from college days. Arun Chauhan a good friend, came forward to help me. He offered his own house temple, for me to conduct poojas and rituals for Baba, the first "abhishek" and pooja of the small murti was held in Arun Chauhan's house. Mr. Tolani (from the Sydney Sai Temple) was also very forthcoming and helpful in providing me with a list of twelve families (along with their contact numbers) all devotees of Sai in Melbourne. I contacted these families to inform them of Baba's arrival in Melbourne and to come to take his blessings. Slowly the word spread, every Sunday we would preform Baba's abhishek and aarti in different devotees' homes. In the meanwhile, along with

a few devotees, my search for a space to install the statue began. I first visited an Indian Temple in a suburb known as "Carrums Downs" to see if I could conduct the sthapna of the statue in that temple. However, my mind wasn't convinced to do so as the temple seemed a bit far for devotees to visit everyday. Mr. Rakesh Auplish (a devotee helping me) showed me a few other distantly located temples, but no, my search did not end there.!!

One day, while crossing the heart of the city Rakesh ji decided to stop his car outside unknown premises. I stood at the entry side gate of a garden, looking inside, all of a sudden I saw "Baba's vision" in his full form standing under a tree (in the garden) that resembled the Neem tree, the Gurusthan of Shirdi. This vision made me stop in my tracks! Not knowing what the property was or whom it belonged to. I very convincingly told Mr. Rakesh Auplish that this was going to be the site where Baba's temple would come up! Address being 32 Halley Avenue, Camberwell Vic. 3124. On doing a bit of spade work, and talking to people, Arun Chauhan and I came to learn that the place belonged to a Sindhi gentleman, Mr. Hiro Pamamull, a jeweller by profession, residing in Melbourne. A call to Mr. Pamamull fixed up my meeting with him at a hotel in Saint Kilda, where he had his office and showroom of precious stones. I placed some Shirdi prasad on the table, behind which sat Hiroji. My first question to him was, "whether he knew who Shirdi Sai Baba was?" He asked me to give details of Baba and also inquired about my intentions of meeting him. I explained about the statue of Baba and the Dwarkamai photo that I had got from India and also that Baba had chosen to reside in his premises, his future home! Being a businessman he quietly heard what I was trying to explain to him (very hesitantly had a bit of the Shirdi prasad) without a change in his facial expression. After two hours of non-stop explanation, I decided to take my leave and left the decision of using his premises for keeping Baba's murti pending with him. After this meeting with Mr. Hiro Pamamull, I left for Tasmania along with my son Dhruv, leaving the decision to Baba. A week later, on my return to Melbourne, I received a call from Hiro ji, very early in the morning, asking me to meet him at the site of Baba's vision to see the premises from within. Being dependent on my son for commuting I declined the offer. Another call, late at night, made me plan a trip to the site along with my son Dhruv. On entering the premises, I was pleasantly surprised to see that the property was indeed a beautiful vacant church with lots of natural light flowing inside it. Hiro ji was the owner of this beautiful church. He smilingly, agreed to keep the small statue of Baba in the hall. I was filled with a lot of joy and enthusiasm at being given the permission to initiate a Sai temple. With the help of other devotees, we invited Dr. Martand Joshi from the Indian High Commission to do the Sthapna Havan Pooja on 21st April 2005. A beautiful Havan and pooja were performed along with about twenty five people in attendance. Baba's statue was kept on a table. After the first pooja I asked my son to do pooja for Baba everyday, (after his classes in his University got over) by lighting an incense stick and offering some flowers to Baba. I left for Delhi soon after. Once back in Delhi (in the month of May) I started getting visions of Baba, asking me to do the sthapna of his Padukas to be kept in front of Baba's small murti. I then told my son Dhruv (who had come on a vacation to Delhi in the month of June) to take the Padukas to the temple in Melbourne. To recite the Ashtottar Namavali (from a book that I gave him) before doing the Aarti pooja and placing the Padukas in front of Baba's idol.

It was a Sunday, when, Dhruv decided to do the sthapna of the Padukas. He sat down in front of Baba, contemplating what to do a surprise awaited him! He was shocked to see Baba in a white poshak walk into the hall!! He sat down with him and he Himself did the sthapna pooja of the Padukas! What an indeed blessed moment it was to have Baba himself walk into the temple premises, to shower his blessings on the property that was going to house the future Sai Temple! On being told about Baba's appearance, I prostrated in front of Him and thanked him for supporting me in my endeavour. And thus in this way, the first Jagrit murti (statue) and padukas were placed in the new home of Baba in Melbourne. This was just the beginning – A handful of dedicated devotees of Baba including Rakesh Auplish, Arun Chauhan, Dhruv, Neela and Ganesh Bartula, Sudipta Sarkar started coming to the temple to perform poojas. A friend of Hiro Pamamull Ji, Mr. Moti Visa, who was at that time a publisher of an Indian magazine called "Beyond India" decided to write about Sai's advent into Melbourne. A small advertisement in the magazine introduced the temple to the residents and the Indian community in Melbourne. It was then, that a lot of Indian devotees started coming to the temple to serve Baba. In July 2005, once again I started getting visions of Baba wanting me to bring Him in his full form to Melbourne, in order to establish a full fledged Sai Temple at 32 Halley Avenue, Victoria - 3124.

-Neelu Jaggi

to be contd....

Shradha Saburi
Hotel
Sai Nityanand
One Minute Walking Distance from Dwarkamai
For Room Booking Contact:
Monu Agrawal
Ph: 8171521277, 9373447866
web: www.feelsure.in
Near Dwarkamai Temple,
Back Side of Khule Natyagruh,
Shirdi

Hotel J.K. Palace
Nagar-Manmad Highway,
Near Bhakta Niwas, Shirdi
Ph.(02423) 255155
7218181876, 9511111009
Visit us: www.hoteljkpalace.com
Email: jkpalaceshirdi@yahoo.com

साई आशीर्वाद ग्रुप
साई भजन संध्या, माता की चौकी व सुन्दरकाण्ड पाठ के लिए सम्पर्क करें
साई की मीरा मीनू सचदेवा
Ph. 9335087459, 8887847946

श्रद्धा सबूरी
साई की रसोई
शिरडी से जाने वाले भक्तों के लिए घर का बना शुद्ध व स्वादिष्ट भोजन पैक कराने के लिए सम्पर्क करें
रश्मि वाही
Ph 8587058762

BUNTY
Furniture & Interior
Deals in : All Kinds of Wooden Furniture
Bunty Ahuja
Shop No. A-8, W.H.S. Timber Market
Kirti Nagar, New Delhi-110015
Ph. 8650398971

My Experience With Shri Sai Sumiran Times

I am a passionate reader of Shri Sai Sumiran Times since last two years. Every 2nd week of month, I visit Sai Dham Temple, Sohna Road, Uppal Southend, Sector - 49, Gurgaon and collect a copy of Shri Sai Sumiran Times from Head priest Acharya Shri Vinay Ji, after offering prayer to Shri Sai Baba. Shri Sai Sumiran Times is indeed an epic for me. It is not only limited to a monthly magazine, but it's a kind of Sadgrantha also. I pay my sincere thanks to Ardent Sai Sevika Anju Tandon ji and her team for the hard work who publish this miraculous magazine every month. In this magazine, the editorials by Anju Tandon ji, poems, articles on Baba's miracles, Articles on Spirituality, birthday/ anniversary wishes and greetings are praiseworthy and amazing. By reading this spiritual magazine one can enhance his/her skills knowledge in the field of spirituality. If you read this magazine line by line daily then your inner strength will be strengthened. Reading of Shri Sai Sumiran Times gives me a lots of positive thoughts and strength. It prompts me to fight with evils and sadness. Through a wide range of articles from Sai devotees around the world, they all come together at one platform by expressing their views. I must praise to Editor Anju Tandon ji and her all experienced team member who are putting their continuous efforts to publish this magazine every month. I must mention my special thanks to Acharya Shri Vinay ji Maharaj. Head Priest of Sai Dham Temple, who gifted me a copy of Shri Sai Sumiran Times around two years back. Before that I was not aware about this Newspaper. Acharya Vinay ji is very humble, kind and calm person. I request him to bless me and my family for all type of future success. Om Sai ram.

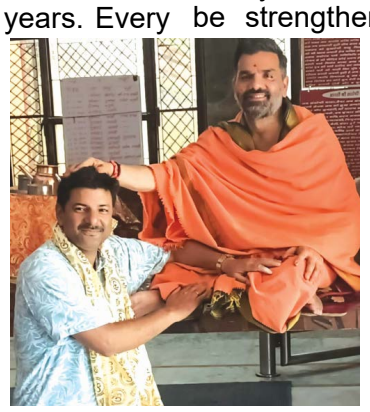

-Balram Gupta, Buxar, Bihar

Sai Saved My Vision

I am Baba's devotee and I have full faith in Saibaba. I feel Baba's blessings all the time. I want to tell you my recent experience of Sai blessings.

Day before yesterday, while washing my face accidentally my finger got pierced in my left eye. There was severe conjunctival bleeding accumulated in my left eye. We were out of station and doctor was not available at that time. My wife said that my Saibaba is Super Ophthalmologist, he has also come with us, you pray to Saibaba to help you. I prayed sincerely and talked to Baba from inner of my heart to help me in this odd situation. My wife Bhartiben immediately applied udi on my eye and with the blessings of Saibaba, my eye started getting better. I could feel Saibaba's hand on my head. Within I could hear Saibaba saying, don't worry I am with you in this critical situation. Baba saved my vision completely. Thank you so much Saibaba. Om Sai Ram.

-Dr Anilbhai Raval, Unjha, Gujarat

Devotion and Sadguru

Shri Krishna talks to Arjun about devotion, in Chapter 18, Verse 55 of the Shrimad Bhagavad Gita. Only by loving devotion to Me does one come to know who I am in Truth. Then, having come to know Me, My devotee enters into full consciousness of Me.

Perhaps, He wants we revisit the word "devotion" as well as "Sadguru", making Shri Rao Bahadur Hari Vinayak Sathe, His medium this morning. Here is what Sathe says to his newly appointed cook, Megha: "Besides, seeing your whole-hearted devotion, I feel that you should be associated with Sadguru and develop a devotion at his feet."

Megha was devoted to Shankar or Lord Shiva and rendered excellent service to his preferred God. Who noticed this dedication? His employer Shri Sathe who was himself an ardent Sai Baba devotee. Thinking that Megha's bhakti could receive a direction and stabilise further, Sathe considered introducing him to Sadguru, Shirdi Sai Baba. Moreover, Sathe had greatly benefitted from Baba's Sewa and thus wanted the same for Megha, a simple, single-minded man.

Now, we might think Sathe was acting independently and it was his idea to send Megha to Baba's feet, but we might be a little off-track. Why so? 'Coz, this noble thought must have been introduced by Baba Sai in his devotee, Sathe's, mind, so that the first step is taken towards starting a meaningful journey of a man, who was to go on to give one of the best instances of dedicated bhakti. Done with determination and faith with little care to personal comforts and physical state, Megha is an outstanding example focussed devotion. The outcome of such worship bore fruit and was witnessed by Shirdi residents in the later years.

Sai Baba plans! His plans are spectacular and purposeful and we have zero clue about what is going to happen and where, at a particular hour. To pull Megha to Shirdi, He played this sport of first bringing him to Sathe and then sowing the seed of sending Megha to Shirdi in Sathe's mind. We have read about Megha's dedicated worship and the lengths he would go to in order to express his love for Sai, right after he began to consider Shankar and Sai as one. This earnest Sewa continued till Megha passed away at a very young age, in Baba's Shirdi. And what a blessing it was that Baba Sai personally attended the funeral procession. Wouldn't a loving Sadguru reciprocate love and focussed worship? Would Sai not give a lesson promptly and instantly so that other devotees learn and adopt similar means.

In the Bhagavad Gita too, the same steadfastness is emphasised when Shri Krishna guides his companion, Arjun. It is only with unidirectional, resolute worship can one comprehend the ways of Shri Krishna and then establish a direct connection with Him. Such a firmness doesn't come easy to humans who are largely fickle-minded and restless. But if the grace of a Guru is bestowed then dramatic changes happen. Hence, aware of the importance of a Sadguru in one's spiritual progress, Shri Sathe suggested taking Megha to Sai Baba.

-Bindu Midha, Ahmedabad
Author, Blogger

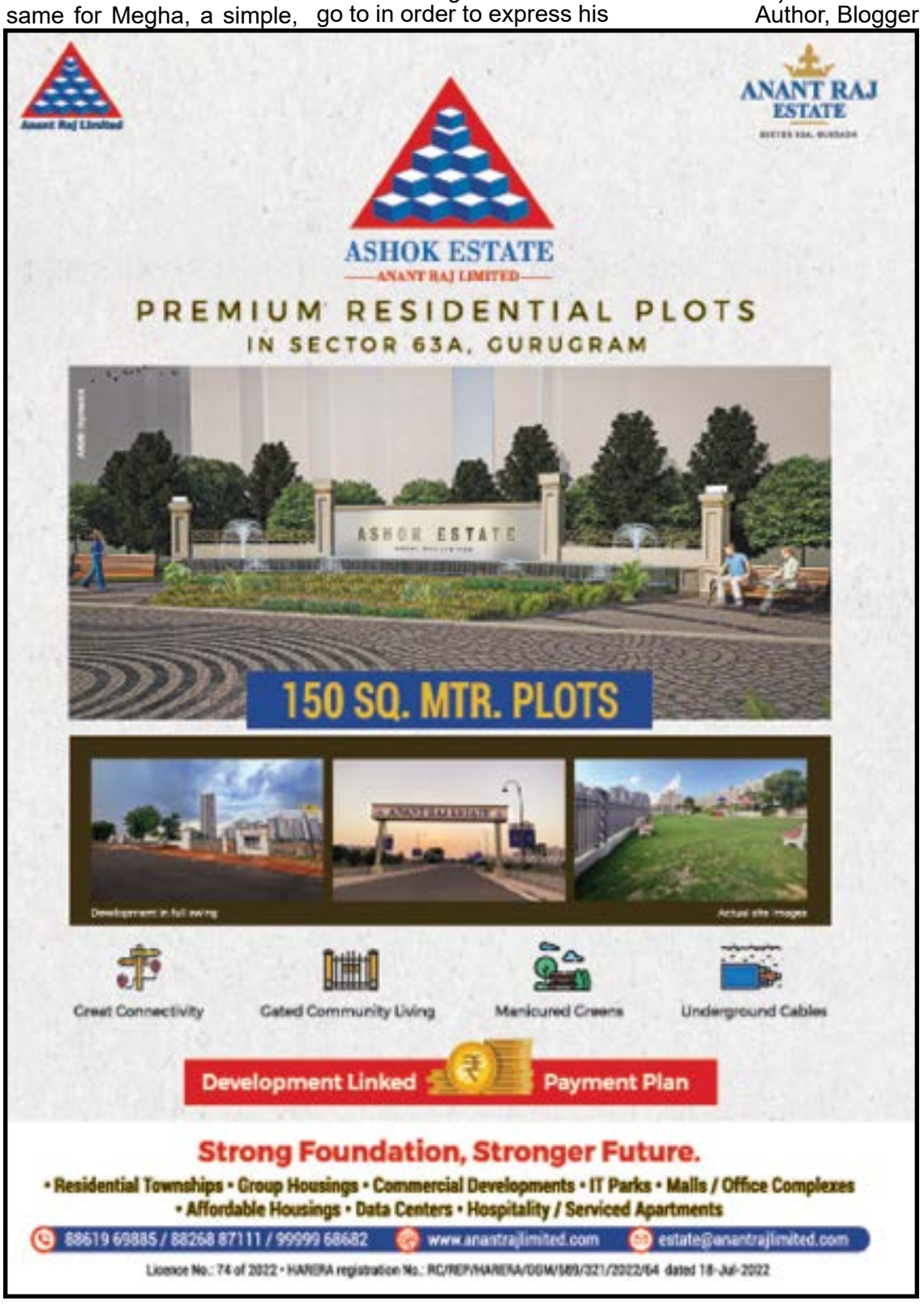

My Visit to Sai Temple in Sydney

Sydney/Australia: While in Melbourne, I got talking to Mr. Jaikishen Tolani ji (Founder of Regent Park Sai Temple in Sydney), an ardent devotee of Shirdi Sai Baba. He very courteously asked me to visit the new Sai Temple, Sydney, saying "How can you return to Delhi without meeting Baba in Sydney?" Now that was enough to beckon me to my Guru's home in Sydney.

I immediately booked my flight ticket to Sydney and set off to pay my obeisance to Baba there.

A visit to the temple on a Thursday evening revealed what a beautiful Sai temple had been set up in Regents Park. All done with the dedication of Tolani ji, who has helped in the setting up of many Sai Temples in Australia (including the Melbourne temple that was initiated by me). The Samadhi mandir statue was so much like the Shirdi temple statue. While the dhoop arti was being conducted by Pandit ji, the whole hall vibrated with Baba's blessings upon the devotees who had gathered there. I was honored by the temple by being given a silk shawl and prasad by both Tolani ji and the priest. I attended the arti and did the ritual of waving the 'chanvar' for Baba. I was taken to the Dwarkamai section of the temple and asked to add the havan wood into the pious fire. A small hanging bed for Baba, and a palki were part of the Dwarkamai temple.

On being taken for a round of the temple by Tolani ji, I was shown the other deities residing there, including Lord Shiva, Lord Ganesha and Maa Durga.

Langar Prasad in the basement included South Indian Dosas and Upma, cooked fresh on the premises.

The environment of the temple was devotional. Throughout my visit to the temple, I was accompanied by a dear Australian friend (more like a family member to me) Graeme Russel, who took care of me at every step.

I was indeed blessed to have been summoned by Baba to Sydney. It was a very energizing and fulfilling visit. Om Sai Ram.

-Neelu Jaggi

Power of Maha Mantra

We visited Shirdi in the year 1987 on Mahashivratri eve and met Shivneshan Swami ji who guided us and showed us the right path to reach our Lord Shri Sainath Maharaj. He also told us to conduct 'Naam Smaran 'Om Sai Sri Sai Jai Jai Sai' in Delhi. We ensured him for the same and planned to have it soon. With Baba's blessing, we conducted 'Naam Smaran' on 31st July 1987 for 24 hours for the first time in Delhi. It went very well and we realized the solace and significance of it as this mantra haunted us day and night afterwards. While having Naam Smaran I got a vision that Baba has come to bless us in saffron dress. This vision with Baba's grace came true when Baba himself came in person in saffron dress to bless us on 12th September 1987, when we had organised a program in one of the devotees house. We commenced our puja at around 10.30 p.m. as people could wind up 'Sri Sai Sat Charitra' paath at 10.00 p.m. The Puja was going on and it was around 10:35 p.m., we found, to our utter surprise, one Sadhu entering the puja room. The Sadhu touched one devotee's feet (an ardent devotee of Baba Vikas Mehta) who was performing puja. He bowed down in front of Baba's statue and immediately went out. This all happened just within one minute and before people could understand anything, he left. Vikas Mehta and myself immediately rushed out and Vikas asked him 'who are you'. He replied 'Ask him to whom you all are praying that who I am. The moment I rushed out I thought I will touch his feet but I just forgot everything and stood stunned. After this we came back with a great feeling of joy flowing throughout our body and resumed the puja. I realized the tremendous power of 'Maha Mantra' which compelled Lord Sai to manifest himself to his devotees.

We felt the bliss of getting Baba's darshan, who came to bless us, re-assured us and encouraged us to continue his Naam Smaran with more fervor and faith. We chanted his name with great enthusiasm and we were really glorified with his blessings. We will never forget the pull of his divine power which will always remind us 'you look to me and I will look to you, wherever you go and whatever you do.'

-Alka Choudhary/Wadhwa

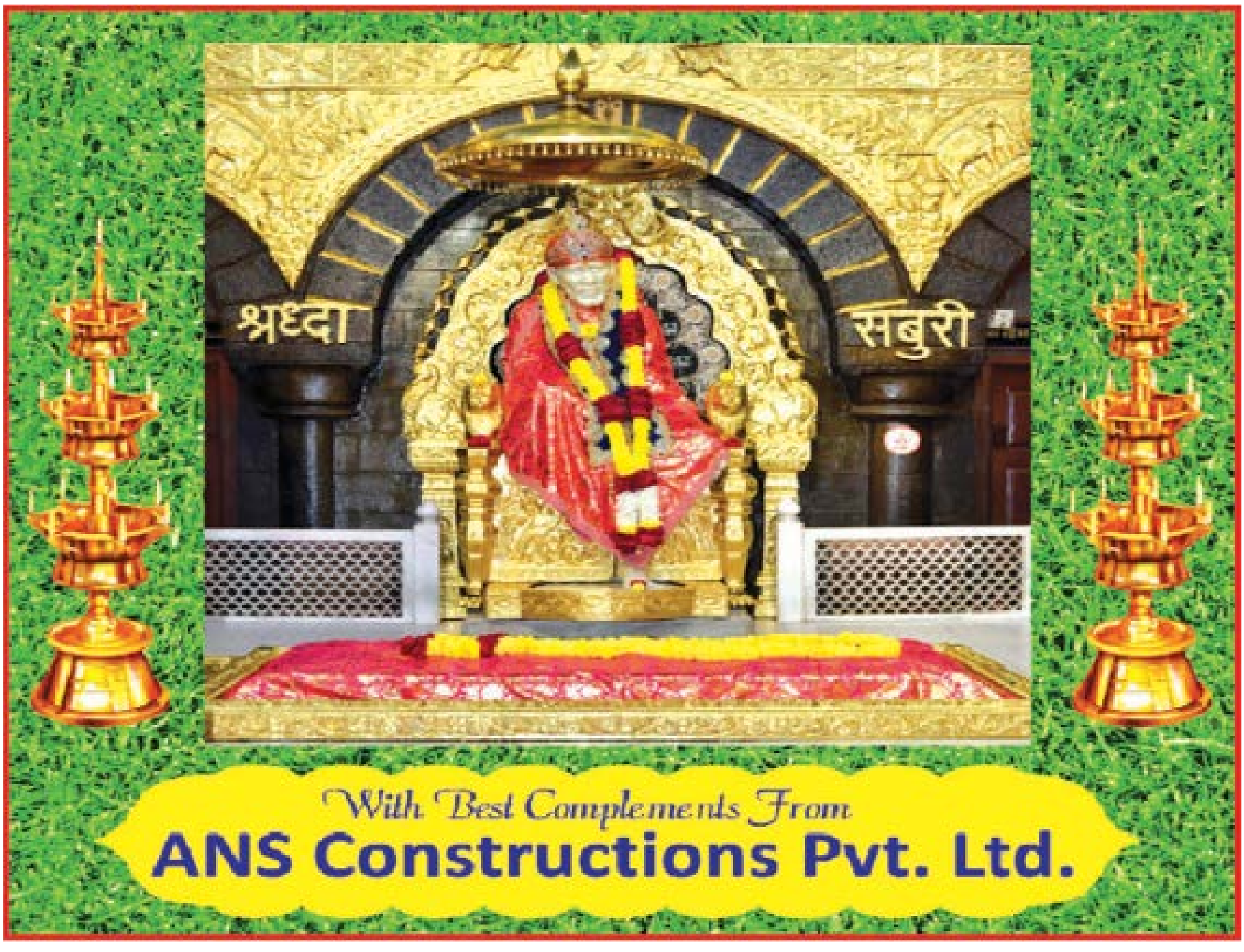

Sahasranama for a Balanced State of Mind

Do not keep at a distance from me. There is no difference between you and me. Whoever regards me in this way, he is indeed fortunate. –Shri Sai Satcharita (Chapter 15)

What kind of lifestyle facilitates achieving liberation? Should we progressively withdraw from the external world and its inconsequential activities and live in isolation? Or contemplate the Divine while being engaged in worldly affairs? Some sages advocate a path of rigorous ascetism, while others believe that we can gain enlightenment even as a householder. Which of the two is a better option? *In The Life of Sai Baba,* Shri Narasimha Swamiji relates an anecdote from Mahabharata. A sage named Jajali stood motionless for many months while practising extreme ascetism. Some birds built their nest and laid eggs in his hair. Overcome by the thought that if he moved, the birds might suffer and die, Jajali remained in that position without food and water till the time the baby birds grew up and flew away. Jajali rejoiced that by doing so he had reached the pinnacle of ascetism, compassion and spiritual growth. Just then a heavenly voice told him that a merchant named Tuladhara was more advanced in spirituality than him and he must visit Tuladhara. When Jajali met Tuladhara he observed that as Tuladhara went about his business of selling goods, different kinds of people came to the shop. Some customers were good, others were bad; some expressed gratitude while others ridiculed the merchant. But Tuladhara remained in perpetual equanimity – he neither exulted over praise nor distressed by the complaints and went about doing his work honestly. While balancing the scales in his business, Tuladhara had achieved an inner balance that transcended duality.

Shri Narasimha Swami ji concludes that enlightenment is a transcendent state where a person realises that the Self is different from the body, mind and its sensory objects. Also, pairs of opposites such as pain and pleasure, love and hate, birth and death, attachment and detachment, loss and gain, activity and passivity, are nothing but a playful manifestation of consciousness.

The 7th shloka of Vishnu Sahasranama proposes a balanced state of mind in the devotee:

Agrahya Shashwatah Krishno Lohitakshah Pratardanah Prabhutah Strikakubdhama Pavitram Mangalam Param

Lord Vishnu is Agrahya, he cannot be grasped. He is Shashwatah, ever existing. He is Krishna, the dark-complexioned and bestower of Satchidananda, the balanced state of mind. He is the red-eyed Lohitakshah as in fish incarnation and is Pratardana of all our agonies. He is Prabhutah, the biggest and existing in three regions as trikakubdhama in the lower, middle and upper regions. He is Pavitram, the pure and Mangalam Param, the beneficent and best.

Having experienced the vision of absolute consciousness in Sai Baba, the person who remains in a balanced state at all times and under all circumstances, is full of bliss. And all the emotional, physical and psychological problems that troubled him dissolve completely.

Shri Narasimha Swamiji got Sai-Sakshtkar on 29 August 1936 as he stood in front of Sai Baba's samadhi at Shirdi after a rigorous itinerant life of 11 years to know the truth. What is important is that the individual should contemplate absolute consciousness constantly and uproots whatever creates false illusion in the mind and drives him or her away from the truth. Meditating in a remote cave or envisioning the Divine while doing the daily chores in a city, is just an ancillary issue.

One powerful yogic technique that can help a person achieve this difficult task is Pratyahara, elaborated in Shandilya Upanishad. Pratyahara is the withdrawal of the senses from their objects. I have experienced this practically in my conversations with Shri Radhakrishna Swamiji at Bengaluru. Whenever someone started discussing politics, Swamiji started reciting Vishnu Sahasranama. Here he demonstrated that Pratyahara is the withdrawal of the senses and not the external objects. Therefore we can withdraw our attachment and attention to external objects anywhere, whether it is a secluded forest or a busy shopping mall. This is accomplished when we repeatedly try to see the one absolute consciousness – Sai Baba – in all forms and aspects of creation. With repeated practice, awareness increases that all the senses and their numerous objects, as well as mind and body are a manifestation of absolute consciousness. The mind then gives up craving; it reflects on this one consciousness and stays in perfect balance.

Sai Baba says 'I see myself everywhere. There is no place without me. I fill all space in all the directions. There is nothing else but me' (Shri Sai Satcharita, Chapter 14, Ovi 48)

-Dr. Vijayakumar

Courtesy: An Insight into Vishnu Sahasranama through Sai Baba

Published by: Sterling Publishers Pvt. Ltd.

to be contd...

Our Associates

Singapore
Pt. Shreedhar
U.S.A.
Anil Chadha
Dr. Rangarao Sunkara
Ohio
Varaha
Florida
Kamal Mahajan
Brampton
Devendra Malhotra
Australia
Anibha Singh
New Zealand
Anjum Talwar
Japan - Kaco Aiuchi
Bahrain
T.P. Sreedharan
Canada
Ruby Kaur, Smita Sohi
Germany
Sugandha Kohli
Dubai
Ajay Sharma
Sri Lanka
S.N. Udhayanayahan
Nepal
Vishnu Pokhrel, Madhu

Sai's Miracle

This is personal experience. I had to take up sales job very early in life to support my family. Due to constant travelling my health suffered a lot. I had severe burning sensation in my stomach whenever I ate anything. Eating food was an ordeal for me. I used to wonder what sin I committed to deserve this pain. In a day I had to take around 20 tablets. I tried many things but could not get any relief. I suffered like this for 5 years.

On the Holi eve 1998, I went to Shirdi. After morning darshan, I went to Dwarakamai. There was a huge Baba's photo with beautiful Rose garland around it. In those days, you were allowed to touch the photo and sit there also. There were few ladies before me in the line. Each one of them plucked a rose petal from the garland and ate it. I was watching them and I also copied their act and did the same. I plucked one rose petal and treated it as prasad from Baba and ate it. Miracle of Miracles, since that moment I do not have any problem with acidity. I always think of that incident whenever I eat anything which I like and enjoy. I am so grateful to my beloved Baba for the grace He showered on me. Om Sairam. **-Shravan Kumar**

Hyderabad

108 Names of Shri Saibaba

by Satya Shri Sant Vivek Ji

It is my staunch belief that reading or listening of Sai Sanjeevni (108 names of Sai Baba) will dispel all doubts of devotees & remove miseries and sorrows from their lives. They will definitely realise the Self and be One with Shri Sai.

Om Shri Sai Yogeshwaraaya Namah

Sai, Lord of all Yogas. The learned call adroitness in an act as Yoga. Some others say union between soul and the Supreme is Yoga. Patanjali Rishi says inhibition of desires of mind is Yoga. Knowledge, ignorance, bondage, liberation, happiness, sorrow, all is in the mind. When mind remain in control of sense organs it is restless. Detachment to these sense organs is the first step of Yoga. A man should do all work while residing in the state of Yoga. Steady control of senses, along with cessation of mental activity leads to supreme state. One who has completely detached himself from worldly matters and does selfless deeds is considered to be 'Yogarudh'. Baba never thought about himself and did selfless service to the mankind. He sacrificed his whole life to remove others distress and fill their hears with the light of knowledge.

My humble salutation to Shri SAI the Lord of Yogas.

Baba Saved My Pet

My three year old pet dog Max (Golden Retriever) is part of my family and like a child to me. We love him more than our own child. He is lovely, active, playful, innocent and loves us unconditionally.

Max is healthy and playful all the time. Recently we found a lump on Max's right leg and we took him to Vet. Initial lump test showed there are some unusual cells in the sample and Vet suspected malignancy. We were scared to death on listening to this. Vet advised that lump should be removed surgically and sent to lab for pathology and diagnosis. We agreed to this considering that Max is young and it is better to get it diagnosed.

Vet performed the surgery and sent the lump to labs. Myself and my wife prayed to Baba all the time and I started reading Shri Sai Satcharitra and completed parayana in a week. Next day the Vet rang and told there is nothing to worry and Max's lump is benign and not cancerous. We were overjoyed and experienced our thrill of life and thanked Baba for His mercy and compassion.

Baba loves all creatures and He is the inner ruler of all. He is capable of changing one's Karma and ends the suffering and He can even avert the death. Hold on to Baba with steady devotion and faith and He takes the burden onto Himself and saves us from all calamities. Om Sai Ram.

-Ravi Rajasekharuni

Our Associates

Agra - Sandhya Gupta
Aligarh- Seema Gupta
Ashok Saxena, D.P. Agarwal
Ambala - Ashok Puri
Amritsar- Amandeep
Ahmedabad - Arjun Vaghela
Aurangabad-Ashok Bhanwar Patil
Assam - Bidyut Sarma
Badayun - Varinder Adhlakha
Bhilwada - Kailash Rawat
Banas - P.K.Paliwal
Bareilly - Kaushik Tandon
Sapna Santoria, Prathmesh Gupta
Bhopal
Ramesh Bagre, Surendra Patel
Bangalore-Chandrakant Jadhav
Bathinda-Govind Maheshwari
Bikaner- Deepak Sukhija
Surender Yadav, Pt. Sadhu Ji
Purnima Tankha,
Bihar- Balram Gupta
Bokaro - Hari Prakash
Bhagalpur - Anuj Singh
Bhuvneshwar (Odisha)
Pabitra Mohan Samal
Chandigarh - Puneet Verma
Chennai - M. Ganeson
Chattisgarh- Nikhil Shivhare
Dehradun - H.K. Petwal,
Akshat Nanglia, Mala Rao
Dhanaula - Pradeep Mittal
Faridabad - Nisha Chopra
Ashok Subromanium,
Firozpur - P.C. Jain
Goa - Raju
Gurgaon - Bhim Anand,
Alok Pandey, Shyam Grover
Ghaziabad - Bhavna Acharya
Usha Kohli, Dinesh Mathur
Gujarat - Paresh Patel
Gwalior - Usha Arora
Haridwar - Harish Santwani
Hissar - Yogesh Sharma
Hyderabad - Saurabh Soni,
T.R. Madhwan
Indore- Dr. R. Maheshwari
Jalandhar - Baba Lal Sai
Jabalpur - Suman Soni
Chandra Shekhar Dave
Jagraon - Naveen Khanna
Jaipur - Puneet Bhatnagar
Kolkata - Sushila Agarwal,
D. Goswami
Kapurthala - Vinay Ghai
Korba - T.P. Srivastava
Kurukshetra - Yash Arora
Pradeep Kr. Goyal
Kaithal - Naveen Malhotra
Lucknow - Gayatri Jaiswal,
Sanjay Mishra, Rajiv Mohan
Ludhiana - Umesh Bagga,
Rajender Goyal, Avinash Bhandari
Mandi Govind Garh
Shunti Bhaji, Rajiv Kapoor
Mawana - Yogesh Sehgal
Meethapur - Shrigopal Verma
Meerut - Kamla Verma
Mumbai-Anupama Deshpandey
Kirti Anurag, Sunil Thakur
Moradabad - Ashok Kapur
Mussoorie- R.S. Murthy,
Surinder Singhal
Nagpur - Pankaj Mahajan,
Srinivasan, Narendra Nashirkar
Noida - Amit Manchanda
K.M. Mathur, Kanchan Mehra,
Panipat- Raj Kumar Dabar,
Sanjay Rajpal
Patiala - P.D.Gupta,
Dr. Harinder Koushal
Panchkula - Anil Thaper
Palam Pur - Jeewan Sandel
Parwanoo - Satish Berry,
Chand Kamal Sharma
Pune - Bablu Duggal
Sapna Lalchandani
Port Blair
J.Venkataramana, Ghanshyam
Pundri - Bunty Grover
Patna - Anil Kumar Gautam
Ranchi - Deepak Kumar Soni
Rewari- Rohit Batra
Rishikesh- S.P. Agarwal,
Ashok Thapa
Raigarh - Narinder Juneja
Roorkee - Ram Arya
Rudrapur-Naresh Upadhyaye
Shirdi - Sandeep Sonawane
Nilesh Sanklecha, H.P. Sharma
Sonepat- Rahul Grover
Sangrur - Dharminder Bama,
Sirsa-Komal Bahiya, Bunty Madan
Surat - Sonu Chopra
Sirhind - Satpal ji
Udaipur - Dilip Vyas
Ujjain - Ashok Acharya
Vidisha - Sunil Khatri
Zeera - Saranjeet Kaur

साई का प्यार

देखा जब रिश्तों
नातों को
दिल रोया मेरा
बार-बार
जब से देखा
साई तुमको
जीवन में आई
नई बहार
तू बिन बोले
सब जाने है
हर दिल का दर्द पहचाने है
तेरे ध्यान से ही दिल को मिले सुकून
साई सब पर प्यार लुटाए है
बैठ कर सिंहासन पर मेरा साई
देखो तो पल-पल मुस्कुराता है
श्रद्धा सबूरी ही बस चाहे
भक्तों की झोलियां खुशियों से भर जाता है
पतझड़ में फूल खिल जाते हैं
जब साई मेरे मंद मंद मुस्कुराते हैं
नवजीवन का सृजन होता है
जब साई इशारों से हर बात समझाते हैं।

-संगीता ग्रोवर
कवियत्री, लेखिका, गायिका

मैं न गिरा

न मैं गिरा,
और न मेरी उम्मीदों के मीनार गिरे,
पर लोग मुझे गिराने में कई बार गिरे,
सवाल ज़हर का नहीं था,
वो तो मैं पी गया,
तकलीफ लोगों को तब हुई,
जब मैं ज़हर पी के भी जी गया,
मुस्कुराना सीखना पड़ता है,
रोना तो पैदा होते ही आ जाता है।
ओम साई राम।

-संदीप सोनवणे

श्रद्धा और सबुरी के गुरूमंत्र

कोहू भी कारण हो
कैसी भी बात हो
गुस्सा मत करो, चिड़ो मत
जोर से मत बोलो
मन शांत रखो, विचार करो
फिर निर्णय लो
आवाज़ से आवाज़ नहीं मिटती
बल्कि चुप्पी से मिटती है
तकलीफ सिर्फ आपको होगी
दु:ख भी आपको होगा
मन शांत रखोगे तो
सुख भी आपको ही मिलेगा।

-साई सेवक बलराम गुप्ता

बिन चप्पू की नाव

माया से कर किनारा,
मैं था निकला ढूंढने ठंडी छांव
दर बदर मैं भटका आखिर,

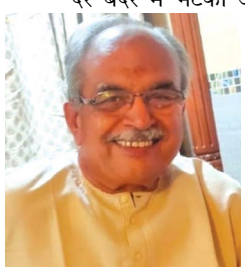

चल पड़े
शिरडी
मेरे पांव,
मैं था
थका हारा,
मन हुआ
प्रसन्न
देखकर
नज़ारा
लोग डूबे थे भक्ति में,
हर एक ढूंढ रहा था सहारा,
होड़ लगी थी भक्तों में,
साई को अपने में बसाने की,
हाथ जोड़ कर रहे विनती,
साई को साथ ले जाने की,
एक भक्त था सयाना,
बोला कोई चिंता ना कर,
साई हमेशा साथ हैं,
कहीं और नहीं तेरा विश्वास है,
उसका जीवन बिन चप्पू
की नाव नहीं रहेगा,
जिसके अंदर मानवता है,
उसके भीतर साई बसेगा।

-विनोद भाटिया साई सेवक

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी व सम्पादक अंजु टंडन ने रेव स्कैन्स प्रा.लि., ए-27, नारायणा इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली से छपवा कर एफ-44-डी, एम. आई.जी. फ्लैटस, जी-8 एरिया, हरि नगर, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित किया। RNI No. DELBIL/2005/16236

गुरू की महिमा

हिन्दू पंचांग के अनुसार आषाढ़ के पूर्णमासी के दिन को 'व्यास गुरू पूर्णिमा' कहा जाता है और उस दिन अपने गुरू की पूजा करने का महत्व होता है। पुराणों में भी इस बात का प्रमाण है। यह प्रथा व्यासजी के समय से प्रचलित है। यह दिन वेद-व्यास का जन्मदिन है। वेदव्यास एक महान संत थे जिन्होंने वेदों का वर्गीकरण कर मानव को आध्यात्मिक ज्ञान का अमूल्य खज़ाना दिया। इस दिन गुरू की पूजा-आरती करने के पश्चात् उन्हें शुद्ध भाव से वस्त्र, दक्षिणा आदि भेंट में दिये जाते हैं।

समुंद्र में अनेक स्थानों पर ज्योतिस्तम्भ इसलिये बनाये जाते हैं जिससे नाविक चट्टानों और दुर्घटनाओं से बच जाये और जहाज़ को कोई हानि न पहुंचे। इस कलयुग के भवसागर में श्री साई बाबा का चरित्र ठीक उपयुक्त भांति ही उपयोगी है। जब वह कानों के द्वारा हृदय में प्रवेश करता है तब दैहिक बुद्धि नष्ट हो जाती है और हृदय में एकत्रित करने से समस्त कुशंकाऐं लोप हो जाती हैं। अहंकार का विनाश हो जाता है तथा बौद्धिक आचरण लुप्त होकर ज्ञान प्रगट हो जाता है। उदाहरणार्थ श्री साई सत्चरित्र के लेखक श्री हेमाडपंत लिखते हैं- गत जन्मों के शुभ संस्कारों के परिणाम स्वरूप मुझे उनके श्री चरणों के समीप बैठने और उनका सत्संग-लाभ उठाने

पृष्ठ 1 का शेष.....

का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यथार्थ में बाबा अखण्ड सच्चिदानंद थे। उनकी महानता और कृपा-दृष्टि का बयान कौन कर सकता है? जिसने उनके श्रीचरणों की शरण ली, उसे साक्षात्कार की प्राप्ति हुई। स्मरण रहे- 'जो लाभ धार्मिक व्याख्यानों के श्रवण करने और धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन करने से प्राप्त नहीं हो सकता, वह इन उच्च आत्मज्ञानियों की संगति से सहज ही प्राप्त हो जाता है। जो प्रकाश हमें सूर्य से प्राप्त होता है, वैसा विश्व के समस्त तारे भी मिल जाऐं तो भी नहीं दे सकते हैं। इसी प्रकार जिस आध्यात्मिक ज्ञान की उपलब्धि जो सद्गुरू की कृपा से हो सकती है, वह ग्रन्थों और उपदेशों से किसी प्रकार संभव नहीं है। श्री साई बाबा इसी प्रकार के एक सद्गुरू थे।

गुरू की महिमा क्या है और क्यों है? भक्तों को गुरू पूर्णिमा के दिन पूजा करने को बाबा ने एक अद्भुत लीला रची। सन् 1908 में एक दिन शामा से कहा- 'उस बुढ्ढे आदमी (नूलकरजी) से कहो, मस्जिद में धूनी के सामने जो खंभा है उसकी पूजा करो। उस समय मस्जिद में बाबा श्री की पूजा इत्यादि नहीं होती थी। बाबा ने पुन: शामा से कहा, वो अकेला पूजा क्यों करे, तुम भी साथ करो। नूलकर व शामा यह आज्ञा सुनकर हैरान हुए। नूलकर ने पांचांग निकालकर उस दिन की विशेषता जाननी चाही। दोनों की खुशी का ठिकाना न रहा, पांचाग के अनुसार वह दिन व्यास गुरू पूर्णिमा का दिन था। तब शामा ने कहा, मैं खंभे की पूजा नहीं करूंगा, हां आप कहे तो मैं आपकी पूजा करने को तैयार हूं। अन्य उपस्थित भक्तों ने भी समर्थन किया। पहले तो बाबा माने नहीं, परन्तु बहुत ज़ोर देने पर बाबा मान गए। दादा केलकर बहुत कर्मकाण्डी थे। उन्होंने यथाविधि बाबा की गुरू के रूप में पूजा की। इस तरह शिरडी में पहली 'गुरू-पूर्णिमा' सम्पन्न हुई। उस दिन के बाद भक्तजन हर वर्ष बड़े उत्साह, प्रेम व भक्ति से गुरू-पूर्णिमा उत्सव 'गुरू' के रूप में बाबा की पूजा करने लगे और यह उत्सव आज तक, आज भी पूर्ण उत्साह से मनाया जा रहा है। श्री साई बाबा के ज्ञान की प्रमुख विशेषता यह है कि वे एक शुद्ध अनमोल रत्न हैं और अन्य गुरूओं की भांति गोपनीय न होकर खुली किताब हैं। कोई भी व्यक्ति अपने घर में बैठकर उनकी पूजा-अर्चना, नाम-स्मरण एवं कथाओं-उपदेशों का श्रद्धा-सबूरी के साथ मनन करके ग्रहण कर सकता है। इसको प्राप्त करने के लिये न तो धन व्यय करने और न ही किसी विशेष पूजा की आवश्यकता है। मात्र साई-साई ही उच्चारण करने से मोक्ष प्राप्त हो जायेगा।

-योगराज मनचंदा
साभार: साई लीला

कोपरगांव में भव्य वार्षिक .....

दिल्ली के मशहूर भजन गायक गुरू जी श्री बृजमोहन नागर, परवीन मुदगल जी व भुवनेश नाथानी जी ने भजनों की भक्तिमय प्रस्तुति दी। भक्तों ने उनके भजनों का भरपूर आनंद लिया और भावविभोर हो नृत्य भी किया। सांयकाल 6:30 बजे धूपआरती की गई। रात 9:30 बजे शेज आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। दिन भर यहां भक्तों का मेला लगा रहा। परम पूज्य श्री चव्हाण बाबा के सुपुत्र श्रद्धेय श्री सुरेश बाबा जी ने भक्तों को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर मुम्बई, पूणे, नासिक, मेरठ, देहरादून, दिल्ली व अन्य दूर-दूर के शहरों से भक्तों ने इस कार्यक्रम में आकर बाबा का व श्रद्धेय श्री सुरेश बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम का आयोजन श्रद्धेय श्री सुरेश बाबा के मार्ग दर्शन में श्री साई धाम ट्रस्ट के सभी सदस्यों द्वारा बखूबी किया गया।

-महेश चव्हान, कोपरगांव

साई कृपा

साई भक्तों की भक्ति करो प्रवाण तुम,
अमर कर दो जिस पर हो जाओ मेहरबान तुम
साई महाकाल बन काल के

पंजे से बचाना
तुम आन कर,
नरसिंह बन गोदी
में प्रहलाद की
तरह बिठाना
तुम आन कर,
साई चेतना जगा
कर चिंता से दूर
तुम करते रहो,
नारायण बन खज़ाने मेरे तुम भरते रहो,
वैष्णों मां बन विषय विकारों से
लेना तुम बचा
ज्वाला जलाना ईर्षावश मिटाना कर कृपा,
देवा किरण पे दया दृष्टि करो,
साई सुख संपत्ति से भंडारे हमारे भरो।

-किरण अरोड़ा

पुरानी चोट अथवा दर्द के इलाज हेतु तेल तथा लेप श्री साई मंदिर, एच ब्लॉक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है। सम्पर्क करें- प्रीति भाटिया फोन: 9899038181

श्री राम मंदिर हरि नगर में भजन

दिल्ली: दिनांक 30 जून को श्री राम मंदिर, हरि नगर में मासिक साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। सांय 6:30 बजे से रात 9:00 बजे तक भजनों का गुणगान किया गया। सभी गायकों ने बहुत मधुर भजन गाए और ढोलक पर मास्टर नरेश जी ने उनका साथ दिया। सभी भक्तों ने उनके भजनों का बहुत आनंद लिया। अंत में मंदिर के पंडित जी द्वारा बाबा की आरती की गई और सभी भक्तों को प्रसाद बांटा गया। कार्यक्रम का आयोजन राजेन्द्र सचदेवा जी द्वारा किया गया।

-राजेन्द्र सचदेवा

साई नारायण सेवा धाम देहरादून में इलैक्ट्रोहोम्योपैथी चिकित्सा शिविर

देहरादून: दिनांक 30 जून 2024 रविवार को साई नारायण सेवा धाम देहरादून में बाबा के परम भक्त श्री एच.के. पेटवाल जी के मार्गदर्शन में प्रात: 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक नि:शुल्क इलैक्ट्रोहोम्योपैथी चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

किसी भी विज्ञापन पर अमल करने से पहले उसकी सत्यता की जांच स्वयं कर लें। प्रकाशक व सम्पादक इसकी प्रमाणिकता के लिए किसी तरह से ज़िम्मेदार नहीं होंगे। विज्ञापन एवं लेखकों की राय से सम्पादकीय का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

इस शिविर में खून की जांच पर 50 प्रतिशत की छूट दी गई और शुगर की जांच मात्र 10 रूपयें में की गई। यह शिविर मेडिकल प्रेक्टीशनर वैलफेयरऐसोसियेशन ऑफ इलैक्ट्रोहोम्योपैथी/इलैक्ट्रोपैथी देहरादून उत्तराखण्ड के सहयोग से लगाया गया। बहुत से लोगों ने इस शिविर का लाभ उठाया और श्री एच.के. पेटवाल जी का आभार व्यक्त किया।

-गायत्री सिंह

साई मन में विराजे हैं

अंदर बहुत अंधकार हो, तो मिले कहां भगवान।
साई तो कण-कण में व्याप्त हैं, देखो अपना मन।।

ईश्वर ने कभी अपने भक्तों को ऊँच-नीच, छोटे-बड़े के भेद में नहीं रखा। ईश्वर तो मित्रवत बर्ताव करते हैं। वे एक सच्चे दोस्त की तरह हमें अच्छी संगत देते हैं, सही मार्ग प्रशस्त करते हैं। साई बाबा के सान्निध्य में जितने भी महानुभाव रहे, बाबा उनसे हमेशा मित्रवत व्यवहार करते थे।

जब मैं तुम हूं,
तुम मेरे अंश हो,
फिर काहे का भेद,
न मैं ऊंचा न तुम नीचे, तो
फिर व्यर्थ हैं सारे खेद।

ईश्वर और उसके भक्त के बीच कभी भेद हो नहीं सकता क्योंकि मनुष्य ईश्वर का ही तो अंश है, यानी जब ईश्वर कण-कण में विराजे हैं, तो मनुष्य भी ईश्वरतुल्य है। बस आवश्यकता कर्म-दुष्कर्म के बीच का बारीक अंतर समझने की है। ईश्वर ने जात-पात, धर्म-कर्म के आधार पर कभी भी अपने भक्तों के बीच भेद नहीं किया। जैसे भगवान राम ने शबरी के जूठे बेर खाकर यह संदेश दिया कि जात-पात, धर्म-कर्म से किसी इन्सान को ऊंच-नीच में नहीं बांटा जा सकता है। ठीक वैसे ही साई बाबा भी सभी धर्म और सम्प्रदाय के लोगों को बराबर का सम्मान देते रहे, प्यार करते रहे।

जस्टिस खापर्डे को बाबा ने अलग-अलग समय में अपने पास प्रवास करने का मौका दिया था। इसमें एक अल्पकालीन था और एक करीब 11 महीने का। जस्टिस खापर्डे शिरडी में बाबा के सान्निध्य में रहे। बाबा जब शिरडी में लेंडी बाग की तरफ आते-जाते थे, तो जस्टिस खापर्डे से कहते थे- क्यों मालिक! कैसे हो? साई की करूणा देखिए, अपनेपन का भाव देखिए। स्वयं जगत के मालिक होते हुए भी दूसरों से पूछते हैं- क्यों मालिक! कैसे हो? हमारे भीतर यह गुण मालूम नहीं कब आएंगे। लेकिन जिस दिन भी आ गए, मानकर चलिए हम बाबा के सच्चे भक्तों-अनुयायियों की अगली पंक्ति में सम्मिलित होंगे। उनके चहेतों में शामिल हो जाएंगे। एक नेकदिल इन्सान कहे जाने लगेंगे। ज़िंदगी में इससे बड़ा और कोई सुख नहीं, जब दूसरे हमारा आदर करें, प्यार से बोले। सवाल यह है कि जब ईश्वर मनुष्यों के बीच कोई भेद-भाव नहीं करता तो फिर हम किस अहंकार में जी रहे हैं?

खाली हाथ सब आए जग में, क्या लेकर के जाएंगे,
तुम अमीर हो या गरीब, सब माटी में मिल जाएंगे।

अगर हमें कुछ मिल जाता है, तो फूल कर कुप्पा हो जाते हैं। दासगणु महाराज से एक बार बाबा ने कहा था- दासानुदास, मैं तुम्हारा ऋणी हूं। वो खुद को दासानुदास का भी ऋणी मानते थे। वे कहते थे, 'मैं अल्लाह का ऋणी हूं, मैं दास हूं। तुम मेरे गुण गाते हो, इसलिए दासगणु दासानुदास, मैं तुम्हारा ऋणी हूं। प्रकृति की देन और ईश्वर यानी बाबा की भक्ति के अलावा सारी भौतिक सुख-सुविधाएं नश्वर हैं। बाबा जब हमें नश्वरता का अहसास करा देते हैं तो हमें उनसे अनुराग हो जाता है। हम उनके भक्त बन जाते हैं। उनसे प्रीति करने लगते हैं। हमारे भीतर से कुछ खोने का डर निकल जाता है। भगवान में प्रीति यानी भक्ति। अपने ईष्ट से जब आप प्रेम करते हैं, तो आप धीरे-धीरे उससे एकाकार हो जाते हैं। तब आप साई बन जाते हैं। बाबा आपको आपसे हर लेते हैं। 'मैं' का भाव खत्म कर देते हैं और 'हम' का भाव जगा देते हैं। साई हो जाने का आशय यही है कि मैं यानी अहम का नाश और हम यानी एकजुटता, अपनत्व का उदय। मन में साई को समाईये और उन्हें जगाइए।

बाबा की तलाश में लोग वर्षों गुज़ार देते हैं। धन-दौलत और समय लुटा देते हैं, लेकिन फिर भी जब उन्हें बाबा के दर्शन नहीं होते, तो वे निराश हो जाते हैं। सच क्या है, यह जान लीजिए। जैसे मृग अपनी नाभि में ही कस्तूरी होने के बावजूद खुशबू के चलते उसे यहां-वहां ढूंढते हुए भटकता है, ठीक वैसी ही मनोस्थिति हमारी भी है। साई हमारे दिल में बैठे हैं, लेकिन हम उन्हें यहां-वहां तलाशते फिरते हैं। दरअसल, हमने कभी उन्हें जगाने की कोशिश ही नहीं की। वे सुप्त अवस्था में हमारे ही अंदर विराजे हैं। हम जब उन्हें जागृत करेंगे, तब ही तो उनकी आहट होगी। उनकी हलचल हमें नये मार्ग पर ले जाएगी। भ्रम से निकालेगी। उन्हें ताल्या की तरह झिंझोड़ कर उठाने की कोशिश तो करो। दरअसल, हम बाबा को ढूंढने के बहुत जतन करते हैं, लेकिन कभी अपने अंदर झांक कर नहीं देखते। वे तो हमारे दिल में विराजे हैं। लेकिन हम उन्हें सोता हुआ रखते हैं। जगाने की कोशिश नहीं करते। जिस दिन हमारे अंदर विराजे साई जाग उठेंगे, देखना हमारे मन से असुरक्षा, डर, वैमनस्य, मेरा और तुम्हारा का भाव सब कुछ निकल जाएगा। हम बाबा के रंग में रंग जाऐंगे। एक ऐसा रंग, जिसमें कोई भेदभाव नहीं होता। जैसे पानी। उसमें जो भी रंग मिलाओ, वो उसके जैसा हो जाता है। जब हमारे अंदर के साई जाग उठेंगे, तो हम भी सबको बाबा की तरह एक नज़र से देखने लगेंगे।

ढूंढा सकल जहां में, तेरा पता नहीं,
और जो पता मिला है तेरा, तो मेरा पता नहीं।

तब की बात...

बाबा हमेशा भिक्षा पर जीवन यापन करते रहे। वे भिक्षुक के रूप में किसी के भी दरवाज़े पर खड़े होकर पुकारते थे, ओ माई, एक रोटी का टुकड़ा दे दे। उन्हें सूखी-रूखी रोटी, जो भी मिल जाती, वे थोड़ा खुद खाते और बाकी का बचा हुआ मस्जिद में एक कुंडी में डाल देते, ताकि वहां के कुत्ते, बिल्लियां, कौवे आदि का पेट भर सके। एक स्त्री मस्जिद में झाड़ू लगाती थी, वो भी कुछ टुकड़े उठाकर अपने साथ ले जाती थी।

साई से सीधी सीख...

जब कोई व्यक्ति ऐसा करते दिखेगा तो दुनिया वाले उसे पागल ही समझेंगे। क्योंकि हमारी आंखों पर अपने-पराये, ऊंच-नीच, जात-पात का पर्दा जो पड़ा है। जीव-जन्तु हमारे समान कैसे हो सकते हैं? हम उनके साथ भोजन कैसे कर सकते हैं? अहंकार हमारे अंदर इतना प्रबल है कि हम किसी के आगे हाथ क्यों फैलाएं? और हर किसी के घर का खाना कैसे खा सकते हैं क्योंकि हम तो महान जाति के हैं? लेकिन ईश्वर कभी इस भ्रम में नहीं पड़ता। यह मनुष्य की नियति है, आदत है कि जब तक पत्थर को मंदिर में न रखा जाए, वो उसे नहीं पूजता। एक कहावत है, अकल पर पत्थर पड़े रहना। इसका आशय होता है कि मस्तिष्क में सोचने-समझने की क्षमता न होना। लेकिन जब यह पत्थर मंदिर में विराजमान होता है तो हम उसके आगे सिर झुकाते हैं, छूते हैं। तब यह कहावत बदल जाती है क्योंकि तब वो पत्थर भगवान बन चुका होता है और हम उससे अपना सिर और मस्तिष्क इसलिए स्पर्श कराते हैं ताकि उसके घर्षण से हमारी बुद्धि की मशीन चल पड़े। बाबा को लोग शुरूआत में पागल समझने लगे लेकिन जब उन्हें बाबा की लीला समझ आई, तो वे नतमस्तक हो गए। बाबा ने सबके हाथ से खाना खाया, क्योंकि वे संदेश देना चाहते थे कि हाथ बदलने से आटा-रोटी का स्वरूप नहीं बदल जाता। उसका गुण तो एक-सा रहता है। हां, अगर रोटी बनाने वाला निपुण हो, निष्पाप होकर, अच्छे मन से आटा गूंथे, तो स्वाद बेहतर हो जाता है। ठीक वैसे ही जैसे एक भक्ति में निपुण मनुष्य सबकी भालाई सोचता है।

साई तेरे रंग में हम ऐसे रंगे हैं हमें लगता है कि रहें हम संग सदा तेरे।
बाबा भली कर रहे।

-सुमीत पौंदा

बाबा दक्षिणा क्यों मांगते थे?

सन् 1908 में येवला, महाराष्ट्र में श्री गोविन्द वासुदेव कनितकेर जज के पद पर कार्यरत थे। सरकारी दौरे के लिए अक्सर उन्हें कोपरगांव जाना पड़ता था, जहां उनके सहकर्मी बाबा की दिव्यता, दयालुता और अलौकिक लीलाओं का गुणगान करते थे। साई बाबा के सौम्य व्यक्तित्व का श्रवण करने से वासुदेव के हृदय में दिव्य संस्कार उत्पन्न हुए और उन्होंने सपरिवार शिरडी जाने का निश्चय किया। अगले ही दिन उन्होंने गोदावरी पार कर शिरडी के लिए प्रस्थान किया।

काशीबाई कनितकेर ने सुना था कि बाबा भक्तों से दक्षिणा लेते थे और उससे धूनी के लिए लकड़ी खरीदते थे। इसलिए उन्होंने बाबा को दक्षिणा देने के लिए पहले ही हर बच्चे को एक-एक सिक्का थमा दिया था। पूरे परिवार में कनितकेर, उनकी पत्नी काशीबाई, उनकी बहन और 6 बच्चे थे। सभी ने द्वारकामाई जाकर बाबा के श्री चरणों में प्रणाम किया और दक्षिणा भेंट की।

इस यात्रा के दौरान वे चार दिन शिरडी रूके। उनके रहने की व्यवस्था पुरानी मराठी शाला में थी, जो द्वारकामाई से दूर थी। एक रात्रि जब बाबा की चावड़ी में शयन करने की बारी थी, तब वे म्हालसापति के साथ वार्तालाप कर रहे थे। बाबा की चिलम पीने की इच्छा हुई। तब म्हालसापति ने चिलम में तम्बाकू भर बाबा को दी। वे दोनों आपस में बांटकर चिलम पीने लगे। कुछ समय पश्चात् चिलम को पुनः तम्बाकू से भरा जाना था लेकिन चिलम के मुंह पर लगाए जाने वाला पत्थर कहीं खो गया। बाबा को क्रोध आ गया और उनके मुख से गालियों की बौछार निकल पड़ी। गोविन्द, जो बाबा के समीप ही बैठे थे, घबरा गए और उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों को वापस शाला जाने के लिए कहा। कुछ देर पश्चात् गोविन्द भी शयन के लिए चले गए।

कनितकेर परिवार को अगले दिन शिरडी से प्रस्थान करना था। उसी रात कुछ अन्य भक्तों से बातचीत करते हुए गोविन्द बोले- 'साई बाबा महान साधु होंगे। लेकिन उन्हें लोगों से धन मांगने की क्या ज़रूरत है? मुझे यह बहुत अजीब लगता है। यदाकदा बाबा, आसपास कौन बैठा है, इसकी परवाह किए बिना अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं। महिलाओं के समक्ष बाबा द्वारा ऐसी भ्रष्ट, अभद्र और कलुषित भाषा का प्रयोग करना मुझे कदापि मंजूर नहीं है।' उनके पास बैठे सहकर्मियों ने कहा- 'बाबा जैसे आत्मज्ञानी तत्त्ववेत्ता सद्गुरू तो समद्रष्टा होते हैं। उनके लिए कोई भला या बुरा नहीं होता। वे सब पर समान कृपा बरसाते हैं। वे विरक्त भाव और स्थिर चित्तवृत्ति वाले होते हैं। चाहे आप उनकी स्तुति करें या उन्हें अपशब्द कहें। वे सदा साम्य-अवस्था (संतुलन) में रहते हैं।' लेकिन गोविन्द अपने दृष्टिकोण पर अड़ा रहा। वह बोला- 'मैं आपकी बात से सहमत नहीं हूं। हां, अगर वे हमसे ली दक्षिणा की पूरी रकम लौटा दें, तो मुझे उनकी दिव्यता पर विश्वास हो जाएगा।'

कनितकेर अक्सर साधु-संतों के पास जाकर आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा किया करते थे। उन्होंने तत्त्वज्ञान व अध्यात्म से संबंधित अनेक ग्रन्थों का अध्ययन किया था और उनके अनुसार जीवन जीने का प्रयास भी करते थे। वास्तव में उन्होंनें बाबा का दर्शन करते ही मानसिक शांति का अनुभव किया था। लेकिन बाबा मौन रहे, उन्होंनें किसी विषय के संबंध में कोई बात नहीं की, न ही कोई आध्यात्मिक सूत्र सुझाया। बाबा के इस आचरण से कनितकेर और अधिक व्याकुल हो गए। इस भ्रम एवं संशय की स्थिति में, बाबा द्वारा भक्तों से दक्षिणा लेने का जटिल प्रश्न, उनके श्रद्धा और विश्वास का गला घोंटने लगा। इस संत को धन की क्या आवश्यकता है? अगले दिन कनितकेर परिवार को शिरडी से प्रस्थान करना था, इसलिए वे बाबा से आज्ञा लेने द्वारकामाई गए। तब बाबा ने एक दिन पूर्व ली दक्षिणा की पूरी रकम परिवार के सदस्यों को लौटा दी। दक्षिणा लौटाते समय, एक रात पूर्व कनितकेर द्वारा बोले वाक्य बाबा ने हू-ब-हू दोहरा दिए। गोविन्द की पत्नी काशीबाई इससे अत्यन्त दुःखी हुई और वे बोली- 'आप दक्षिणा क्यों लौटा रहे हैं? यह राशि तो धूनी माई के लिए, लकड़ी खरीदने के लिए थी।'

बाबा बोले- 'अगर वह एक साधु है तो फिर वह धन क्यों मांगता है?' कनितकेर इस घटना-क्रम से भावाकुल हो उठा। उसका अंतःकरण पश्चात्ताप कर क्षमा की भीख मांगने लगा। लेकिन अब वह क्या कर सकता था। दक्षिणा के सिक्के उठाकर वे वापस घर लौट आए। काशीबाई ने सभी सिक्कों को बाबा द्वारा दिया प्रसाद समझकर उन्हें घर के मंदिर में रखा और नित्य उनका पूजन करने लगी।

काशीबाई कनितकेर पहली बार शिरडी में बाबा के दर्शन करके उनकी भक्त बन गई और जीवन-पर्यन्त उनका पूजन करती रही। एक बार उनका छोटा पुत्र बीमार हो गया। उसकी स्थिति बहुत नाजुक थी। काशीबाई ने बाबा से उसके प्राणों की रक्षा करने की प्रार्थना की और बाबा से प्राप्त उदि बालक के मस्तक पर लगाई। जल्दी ही बालक की स्थिति में सुधार होने लगा।

एक बार काशीबाई की छोटी पुत्री अनुबाई घर की बालकोनी में बैठकर, ड्यूटी पर तैनात गार्ड को देख रही थी। तभी एक फकीर भिक्षा मांगने आया। फकीर लंबा था और उसने दायें कंधे पर एक हरा रूमाल रखा था। उसने अपने सिर पर सफेद पटका बांधा था। फकीर ने गार्ड से कुछ भिक्षा मांगी। गार्ड ने बताया कि बाजरी समाप्त हो गई है और डिब्बे को पुनः भरा जाना है। गार्ड ने नम्रतापूर्वक उन्हें कुछ देर बाद आने को कहा। फकीर मुस्कुरा कर चला गया। वह बीस मिनट पश्चात् पुनः लौटा और भिक्षा की मांग करने लगा। गार्ड ने दोबारा बताया कि डिब्बा अभी खाली है। तब फकीर बोला 'डिब्बे में बाजरी के चार पांच दाने अवश्य होंगे, उन्हें भिक्षा में दे दो।'

गार्ड के पास दूसरा कोई रास्ता नहीं था। उसने डिब्बे को फकीर के हरे रूमाल में पलट दिया। फकीर ने बाजरी के थोड़े से दानों को देखकर कहा- 'यह पर्याप्त हैं।' ऐसा कहते हुए उसने रूमाल को दोनों हाथों द्वारा लपेट लिया। कुछ ही क्षण बाद उसने रूमाल को खोला और वह बाजरी से भरा हुआ था। फकीर हंसा, मुड़ा और कुछ कदम चलकर अदृश्य हो गया।

अनुबाई दौड़ती हुई नीचे आई और सभी को विस्मय से उस चमत्कार के विषय में बताया। काशीबाई ने गार्ड को उस फकीर को ढूंढ कर लाने के लिए भेजा क्योंकि उन्हें पूर्ण विश्वास था कि वह फकीर कोई अन्य नहीं, बाबा ही थे। लेकिन बाबा फकीर वहां दोबारा दिखाई नहीं दिये। एक वर्ष पश्चात् जब काशीबाई शिरडी गई तब बाबा ने उन्हें बताया कि वे उसके घर गए थे।

मौका मिलने पर काशीबाई और उनका परिवार शिरडी जाते थे। पति के सेवानिवृत्त होने के पश्चात् वे सन् 1909 में पूना आ गए, इस कारण वे शिरडी नहीं जा पाए। लेकिन बाबा के आशीर्वाद और उनसे प्राप्त उदि की दिव्य शक्ति ने उन्हें जीवन के उतार-चढ़ाव व ऊबड़-खाबड़ रास्तों से गुज़रने में अतुलनीय उत्साह, सकारात्मक विचार, नवीन ऊर्जा और सृजनात्मक सोच प्रदान की।

इस लीला द्वारा बाबा हमें समझाना चाहते हैं कि-

1. सद्गुरू की कार्यप्रणाली (लीलाओं) का परीक्षण कर उनमें गुण-दोष मत खोजो।
2. सद्गुरू/साई बाबा हमसे किसी प्रकार की इच्छा नहीं रखते, क्योंकि सब जड़-चेतन उन्हीं की रचना है।
3. अगर हम गुरू को धन या कोई अन्य वस्तु अर्पित करते हैं तो वह हम उन्हीं के खज़ाने में से लेकर उन्हीं को सौंप देते हैं। इसलिए 'मैं' या अहंकार का तो प्रश्न ही नहीं होना चाहिए। भक्त के 'इदन्न मम- मैं कुछ नहीं, सब तू है, सब तेरा है, तेरे लिए है' ऐसा भाव रखकर निष्काम भाव से कर्मरत रहना चाहिए।
4. अगर बाबा हमें सद्बुद्धि और शुभ संस्कार प्रदान कर, चाहे थोड़े अन्न के दाने ही देने की प्रेरणा देते हैं, तो वही कई गुना अधिक मात्रा में हमें वापस प्राप्त होते हैं।
5. दक्षिणा मांगकर बाबा हमारे अहंकार को मिटाना चाहते हैं।

-डॉ. रबिन्द्र नाथ ककरिया
-आभार: करूणासागर साई,

प्रतियोगिता नम्बर 224

नीचे लिखी पंक्तियां श्री साई सच्चरित्र से ली गई हैं, आपको बताना है कि ये कौन से अध्याय से हैं। सही जवाब भेजने वाले को मिलेगा इनाम। अपने जवाब हमें 9818023070 पर whatsapp करें या saisumirantimes@gmail.com पर ई-मेल करें। अपना पता व फोन नंबर भी अवश्य लिखें। इनाम केवल श्री साई सुमिरन टाइम्स के Subscribers को ही दिये जायेंगे।

1. भूखे पेट ईश्वर की खोज नहीं करनी चाहिए।
2. यदि प्राप्ति की आशा रखते हो तो अभी दान करो। दक्षिणा देने से वैराग्य की वृद्धि होती है, और वैराग्य प्राप्ति से भक्ति और ज्ञान बढ़ जाते हैं। एक दो और दस गुणा लो।

पुरस्कार- कंचन सी.एम. मेहरा के सौजन्य से शिरडी आने जाने की स्लीपर क्लास की दो टिकटें। शिरडी टिकट तीन महीने तक ही मान्य है। साई माऊली ट्रस्ट राजपार्क के सौजन्य से बाबा के वस्त्र।

पिछले माह की प्रतियोगिता के सही उत्तर: 1. अध्याय 41 2. अध्याय 46
सही जवाब भेज कर शिरडी यात्रा की 2 टिकटों (स्लीपर क्लास) का इनाम जीता है महरौली, दिल्ली से राजेन्द्र कुमार ने और अन्य ईनाम जीता है तिलक नगर, दिल्ली से मधु सेठी ने। आपको जल्द ही ईनाम भेजे जायेंगे।

साई धाम मंदिर
उप्पल साउथएण्ड कालोनी सैक्टर-49, गुरूग्राम में शुभ कार्यों के लिए 2 हाल एवं 5 कमरे उपलब्ध हैं।
सम्पर्क करें:
श्री अरूण मिश्रा
फोन: 9350858495, 0124-2230021

सम्पादन मण्डल

मुख्य संरक्षक -सी.एल. टिक्कू, स्वामी बलदेव भारती, राकेश जुनेजा, मोती लाल गुप्ता, सुमित पोंदा, सर्वेन्टस ऑफ शिरडी साई,
मुख्य सलाहकार -स्वामी सत्यानंद महाराज, संदीप सोनवणे, सुरेन्द्र सक्सेना, भरत मेहता, अशोक सक्सैना, सुनील नागपाल, नीरज कुमार, जी.आर. नंदा, अशोक खन्ना, एस.के. सुखीजा, मुकुल नाग, अशोक सोही, मंजु बवेजा
सलाहकार -महेन्द्र दादू, भीम आनंद, मीता साई, के.बी. शर्मा, के.सी. गुप्ता, नरेश मदान, अमित माथुर, सचिन जैन, सुरेन्द्र सेठी, संदीप अरोड़ा
विशेष सहयोग -अमित सरीन, महेन्द्र शर्मा
सम्पादक -अंजु टंडन
सह सम्पादक -शिवम चोपड़ा
उप सम्पादक -पूनम धवन,
डिज़ाइनर -गायत्री सिंह
कानूनी सलाहकार -प्रेमेन्द्र ओझा
सहयोगी -राजेन्द्र सचदेवा, कृष्णा पुरी, पूनम धवन, ज्योति राजन, मीरा, कंचन मेहरा, मीनू सिंगला, साईना पुरी, दिनेश चन्द माथुर, मंजीत, अंजली, सुनीता सग्गी, ओंकारनाथ अस्थाना, विवेक चोपड़ा, आंचल मारवा, संजय उप्पल, विशाल भाटिया, सुषमा ग्रोवर, उषा अरोड़ा, योगेश शर्मा, किरण, शैली सिंह, उषा कोहली, रूपलाल अहूजा, राजीव भाटिया, प्रेम गुलाटी, योगेश बहल, सीमा मेहता, वर्षा शर्मा, नीलम खेमका।

-प्रशासनिक कार्यालय-
F-44-D, MIG Flats, G-8 Area, Hari Nagar,
New Delhi -110064, Ph- 9818023070, 9212395615
(सभी पद अवैतनिक हैं)

Publication date- 5th July 2024, Posting date- 9th/10th July 2024, Place of posting- Naraina

India's First International University offering Liberal Education in Arts, Sciences, Technology and Law

www.saiuniversity.edu.in

Sai University (SaiU) Chennai, a state private university in Tamil Nadu, offers a variety of multidisciplinary higher education programs in arts and sciences, technology, and law. The university is led by Mr. K.V. Ramani (Founder and Chancellor) and Prof. Jamshed Bharucha (Vice Chancellor), aiming to set international standards in Indian higher education.

SaiU Undergraduate and Postgraduate Programs (Dayscholar and Residential options available.)

ARTS AND SCIENCES

B.A. (Hons.)

- Economics
- Literature
- Politics, Philosophy, Economics (PPE)
- Psychology, Philosophy (PP)
- Literature, Communication, Creative Expression, Cultural Studies (LCCC)
- Economics and International Relations (EIR)

B.Sc. (Hons.)

- Physics
- Cognitive Neuroscience
- Biological Sciences
- Psychology
- Computer Science
- Mathematics

COMPUTING AND DATA SCIENCE

B.Tech. (4 Years)

- Computer Science
- Data Science
- Computing and Data Science

LAW

B.A. LL.B. (Hons.) (5 Years)

LL.M. in Regulation and Governance (1 Year)

PG Diploma in Technology, Law and Policy (Daksha Fellowship) (1 Year)

M.A. in Public Policy (2 Year)

- Curriculum with Liberal Education
- Interdisciplinary and Multidisciplinary Studies
- Stellar Governing Board
- Partnerships with International Universities
- Distinguished Global and Indian Faculty
- Student Engagement with Worldwide Academics
- Strong Industry Connections
- Internships and Placements Opportunities

Stellar Board Members

Sai University is governed by a board of members from diverse backgrounds, including Padma awardees such as Mr. N. R. Narayana Murthy (Infosys), Justice M.N. Venkatachaliah (Former Chief Justice of India), Dr. Anil Kakodkar (Atomic Energy Commission of India), Advocate Sriram Panchu (Madras High Court), and other esteemed leaders.

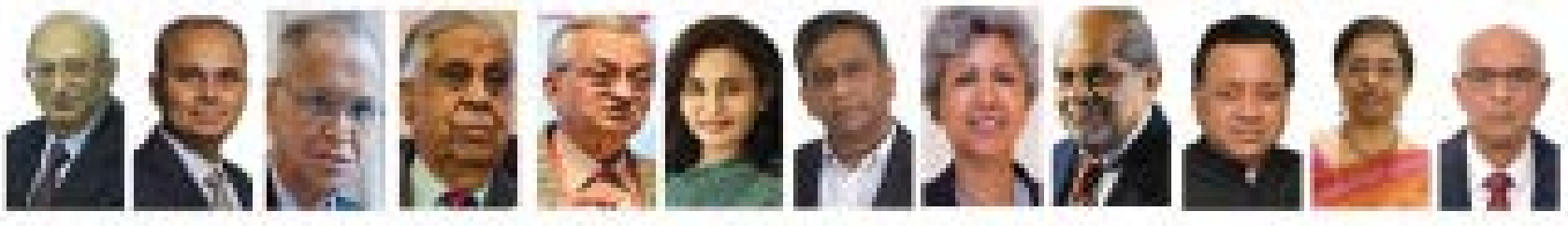

Eminent Faculty

The faculty team at Sai University is headed by Prof. Jamshed Bharucha. The team is guided by the renowned Stellar International Advisory Board, which includes esteemed academics from Tufts University, Warwick University, Stanford University, Georgia State University, and other prestigious institutions.

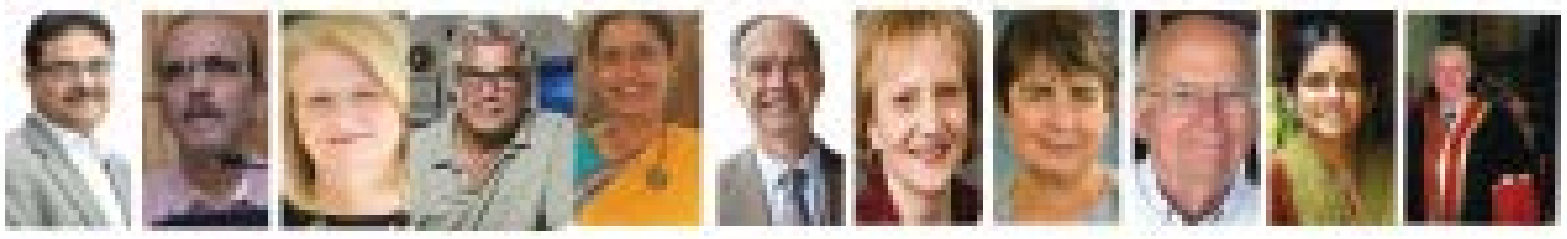

+91 91500 75661, 62, 63

apply.saiuniversity.edu.in

admissions@saiuniversity.edu.in

|| Om Sai Ram ||

Shree Sai Nirman Realty

"Your Rightful Home In Shirdi At The Feet Of Shri Sai Baba!"

Shree Sai Nirman

DREAM CITY

406 Flats And 29 Commercial Shops
Compus Inculding Aminities

FLATS PLAN

Possession In December 2024

1 BHK Flat Varients

421 Sq Ft ..... Rs.11.50 Lakh

552 Sq Ft ..... Rs.21 Lakh

684 Sq Ft ..... Rs.24.00 Lakh

Note : Prices Icluding all Taxes And Stamp Duty.

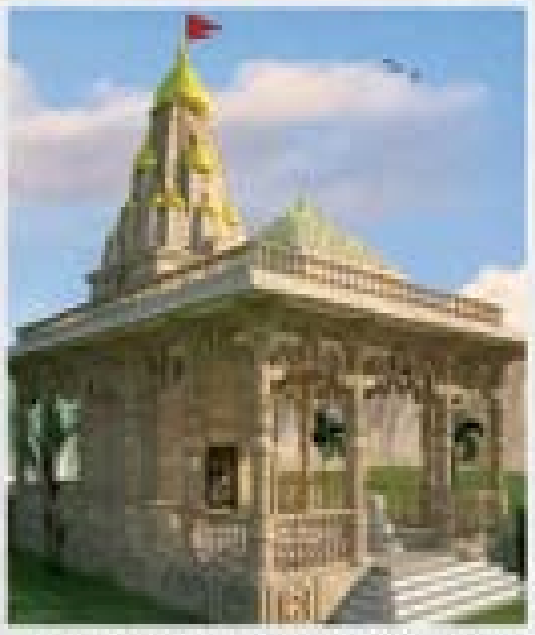

Location

15 Minutes walking distance from Sai Baba Mandir

AMENITIES: Sai Ganesh Temple, Lift Facility(with Power Backup), Club House, Childrens Play Area, Landscape Garden & party Lawn, Green GYM, Covered Car Parking (under CCTV), Security.

Contact Mob: 9623239191, 9971719696